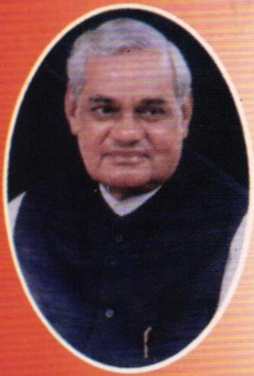

विचार दृष्टि

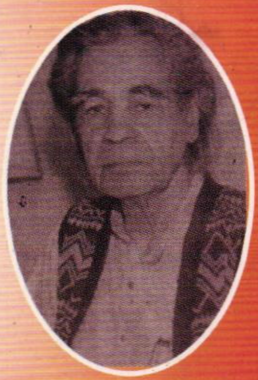

वर्ष : 2 अंक : 6 जनवरी–मार्च : 2001 रूपये : 15

- सपना तीसरे मोर्चे का
- मध्यावधि चुनाव के लिए तैयार रहें
- बिहार की समकालीन कविताधारा
- मैने भी बाल रंगवाया (व्यंग)
- स्थानान्तरण (कहानी)
- समस्या, समाधान और सहजयोग

New Millennium

With

an excellent technical training

at

KUMARTEC COMPUTERS

Assembled PC at very reasonable price of Rs. 14,400

in the field of

Free Interent Browsing for all Advance Courses

Software Training - Dos, Unix, Windows'95, '98, '2000. Accounting Packages - Tally, Easty Languages - C, C++, Orcle, Java etc.

Hardware Training - Card Level Assembling, Fault Finding, Installation, Networking in pear to pear and Client Server Based (NT, Novell)

Cyber cafe, Colour Printing, Designing, E-mail, DTP, Book Publishing, Screen Printing, Data Punching

Contact : U-208, SHAKARPUR, BEHIND BANK OF BARODA, VIKAS MARG, DELHI-92 ☎ : 2230652

E-mail : ranjansudhir@hotmaillcom

विचार दृष्टि

राष्ट्रीय भावनाओं पर आधारित त्रैमासिकी)
वर्ष-3 जनवरी-मार्च, 2001 अंक-6

-----पत्रिका परिवार -----

प्रधान सम्पादक व प्रकाशक:
सिद्धेश्वर
परामर्शी सम्पादक : गिरीशचन्द श्रीवास्तव
कार्यकारी सम्पादक : डॉ. शिवनारायण
सह सम्पादक : कामेश्वर मानव
सहा.सम्पादक: मनोज कुमार
सम्पादन सहायक : अंजलि
विधि सलाहकार: मान.न्यायमूर्ति श्री बी.एल.यादव
शब्द संयोजक : शशि भूषण
साज-सज्जा : शशि रंजन व सत्य प्रकाश
मुख्य प्रकाशकीय कार्यालय : दिल्ली
ई.-50, एफ.एफ.सी., झंडेवालान
रानी झाँसी रोड, नई दिल्ली-110055
अन्य कार्यालय : विज्ञापन व प्रसार
दिल्ली : सुधीर रंजन, प्रबंध सम्पादक
कुमारटेक कम्प्यूटर्स, यू.-208, शकरपुर,
दिल्ली-92, दूरभाष: 2230652
चेन्नई : डॉ. मधु धवन, ब्यूरो प्रमुख
के.-3, अन्नानगर(ईस्ट),
चेन्नई
कलकता : जितेन्द्रधीर, ब्यूरो प्रमुख
मुम्बई : बालकवि 'प्यासा', ब्यूरो प्रमुख
सी-337, सी.जी.एस. कॉलोनी,
भाण्डूप(पूर्व), मुम्बई-42

प्रशासकीय कार्यालय :
'दृष्टि' 6, विचार विहार, यू - 207, शकरपुर
विकास मार्ग, दिल्ली -110092
फोन -011-2230652, फैक्स -011-2225118

संपादकीय व पत्राचार कार्यालय :
'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-1 दूरभाष : 0612-228519
E-mail-ranjansudhir@hotmail.com

मुद्रक: प्रोलिफिक इनकारपोरेटेड
एक्स-47, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया,फेज-2, नई दिल्ली-20
मुख्य वितरक : अग्रवाल मैग्जीन डिस्ट्रीब्यूटर्स
डी सेन्टर, सी. 37/222, डी आई जेड एरिया, सेक्टर-4,
राजा बाजार, नई दिल्ली-1, दूरभाष: 3367085
मूल्य : एक प्रति 15 रुपये
आजीवन सदस्य : 1000 रुपये

सृजन और सृजनहार

	पृष्ठ
पाठकीय पन्ना :	2
संपादकीय :	5
विचार-प्रवाह :	
संघर्ष -डॉ. श्याम सुन्दर सिंह	7
न्याय-जगत :	
मानवाधिकार का हनन - ज्ञानेन्द्र नारायण	10
राजनीतिक - नजरिया :	
सपना तीसरे मोर्चे का	12
मध्यावधि चुनाव के लिए तैयार रहें	13
शख्सियत :	
कवि अटल विहारी वाजपेयी: कृतित्व एवं व्यक्तित्व - डॉ. वैधनाथ शर्मा	14
अली सरदार जाफरी - डॉ. शहीद जमील	17
डॉ. बालशौरि रेड्डी - डॉ. महेन्द्र कार्तिकेय	19
युवा-पीढ़ी :	
पारम्परिक मूल्यों के प्रति युवा-पीढ़ी का दृष्टिकोण - अमरनाथ अमर	21
व्यंग्य :	
मैंने भी बाल रंगवाया - राम भगवान सिंह	24
साहित्य :	
बिहार की समकालीन कविताधारा - वंशीधर सिंह	26
नाट्य मंचन का विकास और नाटक लमगोड़ा - बाबुराम वर्मा	28
गतिविधियां :	31
साहित्य-समाचार :	34

	पृष्ठ
साहित्य :	
रीति कविता और अहम-कविता का रचना विधान - डॉ. रेखा मिश्र	35
सेहत-सलाह :	
समस्या, समाधान और सहजयोग - डॉ. यजुनन्दन प्रसाद	38
कहानी :	
स्थानान्तरण - डॉ. राजनारायण राय	40
चित्रपट :	44
कला-संस्कृति :	
चुम्बन : प्रेम अभिव्यक्ति या रोग संवाहक - गुलाबचन्द कोटड़िया	45
श्रद्धांजलि :	47
देश-विदेश :	
व्हाइट हाउस में जुनियर बुश के नये कदम	51
प्रियंका चोपड़ा ने पहना 'मिस वर्ल्ड' का ताज - सत्य प्रकाश	52
हिन्दीत्तर भाषा सीखें :	54
काव्य-कुंज :	55
समीक्षा :	
कैक्टस कहानी संग्रह : एक समीक्षा	57
फिल्मावलोकन :	
अंडरवर्ल्ड के पैसों ने मचाया कोहराम - शशि भूषण	59
खेल-जगत् :	
आनन्द बने शतरंज के सिरमौर - दिलीप कु० सिन्हा	63

पत्रिका-परामर्शी

1. पद्मश्री डॉ. श्यामसिंह 'शशि', दिल्ली
2. प्रो. रामबुझावन सिंह, पटना
3. श्री जियालाल आर्य, पटना
4. बनवारी लाल यादव, दिल्ली
5. डॉ बाल शौरि रेड्डी, चेन्नई
6. श्री जे.एन.पी.सिन्हा, दिल्ली
7. कविवर गोपी वल्लभ सहाय, पटना
8. श्री बांकेनन्दन प्रसाद सिन्हा, पटना

रचनाकार के विचारों से पत्रिका-परिवार का सहमत होना आवश्यक नहीं।

साहित्य पन्नों की भरमार

मैं आपकी पत्रिका का नियमित पाठक हूं, पत्रिका की युवा-पीढ़ी एवं राजनीतिक विश्लेषण का लेख मुझे बेहद अच्छा लगता है। परन्तु आपकी पत्रिका में साहित्य पन्नों की भरमार होती है तथा राजनीतिक विश्लेषण एवं राजनीति से सम्बन्धित लेखों का अभाव दिखता है। युवा-पीढ़ी का लेख भी कभी होता है कभी नहीं, इस कारण रूचि घटती जा रही है। अत: इस ओर आप अवश्य ध्यान दें एवं नियमित रूप से राजनीति विश्लेषण सम्बन्धी लेख तथा युवा पीढ़ी को प्रेरित करता लेख अवश्य दें।

धर्मपाल कुमार, साकची थाना, जमशेदपुर

सम्पूर्ण भारत में बिखरे पाठक

हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन जोखिम भरा कार्य है। हिन्दी की अच्छी पत्रिकाएं धीरे-धीरे बन्द होती जा रहीं हैं। परन्तु विचार दृष्टि पत्रिका उत्तरोत्तर अच्छे कलेवर में छप रही है। इसके अन्दर सत्यता को प्रतिबिम्बित करती राजनीतिक, सामाजिक एवं ज्ञानवर्द्धक लेख होंती है। इसमें दक्षिण भारत में हिन्दी के प्रति जागरूकता की कार्यक्रमों का साहित्य समाचार एवं राष्ट्रीय विचार मंच की शाखा द्वारा की गई गतिविधियों के माध्यम से दिया जाता है, जो राष्ट्रीय एकता एवं सद्भावना को बढ़ाने में महती योगदान प्रदान करता है। इस पत्रिका में युवा-पीढ़ी के लिए प्रतियोगिता सम्बन्धी सामग्री समाहित करें एवं मासिक पत्रिका के रूप में प्रकाशित करें तो सोने में सुहागा का कार्य हो। क्योंकि इसके पाठक सम्पूर्ण भारत में बिखरे हुए हैं।

जयप्रकाश सिंह, 17/12, सेक्टर-1, पुष्प विहार, नई दिल्ली

पत्रिका मासिक हो

अत्यन्त रोचक कहानी, साहित्य की गहराईयों में समाती जाती पत्रिका का मैं नियमित पाठक हूं, इसके राजनीतिक विश्लेषण सम्बन्धी लेख मुझे काफी पसन्द हैं। युवाओं को प्रतियोगिता की दौड़ में आगे बढ़ाने के लिए आप नियमित रूप से युवा-पीढ़ी में विभिन्न कोर्सों की तैयारी के लिए योजनापूर्ण तरीकों से सम्बन्धित लेख अवश्य प्रकाशित करें। इस पत्रिका के लेख तो स्नातक व स्नातकोत्तर की शिक्षा प्राप्त कर रहे छात्रों के लिए काफी उपयोगी व सन्ग्रहणीय होती है। परन्तु आपकी पत्रिका नियमित रूप से नहीं मिल पाती है। अत: पत्रिका को नियमित करें एवं इसको आगे बढ़ाने के लिए इसमें अधिक से अधिक विज्ञापन देने का उपाय करें।

अजीत, आई.एम.टी., Distance Education Department, Ghaziabad.

रचनाकारों से

√ रचना भेजने के लिए कोई शर्त नहीं है, सभी रचनाकारों का हम हार्दिक स्वागत करते हैं। उदीयमान रचनाकारों को विशेष रूप से प्रोत्साहित किए जाने का प्रयास रहेगा।

√ रचना एक तरफ टंकित या स्पष्ट लिखी होनी चाहिए। रचना के अन्त में उनके मौलिक, अप्रकाशित तथा अप्रसारित होने के प्रमाण पत्र के साथ अपना पुरा नाम व पता अवश्य लिखें।

√ रचना के साथ पासपोर्ट/स्टाम्प आकार की स्वेत एवं श्याम तस्वीर की दो प्रतियाँ अवश्य संलग्न करें।

√ यदि आप अस्वीकृत रचना वापस चाहते हैं तो कृपया अपना पता लिखा, डाक टिकट लगा लिफाफा लगाना न भूलें।

√ रचना भेजते वक्त यह अवश्य देख लें कि लिफाफा पर आवश्यक डाक टिकट लगें हैं या नहीं।

सम्पादक : विचार दृष्टि

'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-1(बिहार) / यू०-207, शक्करपुर, दिल्ली-92

हिन्दी की यश फैलाती पत्रिका

मैनें पढ़ी 'विचार दृष्टि', अक्टूबर अंक दिसम्बर
जहां पटेल और गाँधी का यश छूता है अम्बर
जय प्रकाश का सेखोदेवरा पढ़कर हुई उदासी
इस बिहार को किया विखडित नेता पद अभिलाषी
अवसर पंथ माफिया अब साहित्य जगत में छाया
डॉ॰ 'शशि' जी का यह चिंतन मुझे बहुत ही भाया
सिद्धेश्वर को सिद्धि गई मिल सचमुच सम्पादन में
कसर नहीं मैं रखता उनके स्वागत अभिवादन में
देख **'विचार दृष्टि'** लगता हिन्दी में ली अंगड़ाई
सम्पादन का सौष्ठव लख कर देता विपुल बधाई।

डॉ॰ योगेश्वर प्र॰ सिंह 'योगेश'
नीरपुर पो॰-अथमलगोला, पटना

नव वर्ष की शुभ मंगलकामनाओं के साथ

पटना मेडिकल रिहैवलिटेशन क्लिनिक

मखनियाँ कुआँ रोड, पटना-4
मोबाइल-9835095988

सिन्हा फिजियोथेरापी क्लिनिक

लक्ष्मी नर्सिग होम कम्प्लेक्स
पश्चिमी बोरिंग केनाल रोड
राजापुर के निकट
डॉ॰ परमानन्द प्र॰ सिंह
BBC. DDT (PAT) , SG R. P. (Cal)

जरा इनकी भी सुनें

मुझे अब दिल्ली पहले से अधिक सुहानी लगती है। यहां का नीला साफ आकाश और चारों तरफ फैली हरियाली बहुत लुभाने लगी है। रहने के लिए यह एक बेहतर शहर है।

- प्रियंका चोपड़ा

मैने यह कभी नहीं कहा था कि अयोध्या का विवादास्पद ढांचा 6 दिसंबर 1992 को एक बम विस्फोट में ढहा था।

- निर्मला देशपांडे

देश में अब खाद्यान्न का परिदृश्य बदल गया है। पहले हम खाद्यान्न की कमी से परेशान थे। अब हमारे खाद्य भंडारों में खाद्यान्न रखने की जगह नहीं है।

- शांता कुमार

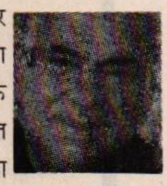

दिल्ली में लघु उद्योगपतियों को पुलिस की बंदूक की नोंक पर रखकर उद्योगों को सील किया जा रहा है। ऐसा लगता है कि जैसे दिल्ली में अघोषित आपातकाल लागू कर दिया गया है।

- मदनलाल खुराना

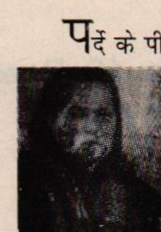

पर्दे के पीछे से भाजपा अपने एजेंडे को लागू करती चली जा रही है, जबकि सहयोगी दल मूक समर्थक बने हुए हैं।

- सोनिया गांधी

केंद्र सरकार राष्ट्रीय सुरक्षा के साथ कोई समझौता न करे। नियंत्रण रेखा पर सेना में किसी भी तरह की कटौती आत्मघाती साबित हो सकती है।

- फारूक अब्दुल्ला

ग्रीन हाउस गैसों के विकिरण से पर्यावरण को बचाने के लिए विकसित देशों खासकर प॰यूरोप, अमेरिका, जापान और आस्ट्रेलिया जैसे देशों को पूरी तरह दंडित किया जाना चाहिए।

-प्रमुख पर्यावरणविद् प्रो॰ जॉन बाइने

DENSA

PHARMACEUTICALS PVT. LTD.

8954777 (O)
544471 (R)

Office :
Anurag Mansion, Shiv Vallabh Road
Ashok Van, Dahisar (East, Mumbai - 400 068

Factory :
Plot No. 10, Dewan & Sons, Udyog Nagar, Palghat, Distt. - Thane
Mumbai (Maharashtra)

सम्पादकीय

संवैधानिक संस्थाओं का संकट

संसद के सत्र में पिछले पूरे सात दिन तक कोई काम नहीं हुआ। ध्यातव्य है कि संसद की एक दिन की कार्यवाही को चलाने के लिए लाखों रुपये खर्च होते हैं। यदि आए दिन संसद में हंगामा होता रहे और सदनों की बैठकें स्थगित होती रहें तो क्या यह उस जनता के साथ अन्याय नहीं है जिनकी खून पसीने की कमाई से देश की संसद का संचालन होता है। पिछले दो-तीन वर्षो से हमारी संसद में यहीं कुछ होता आ रहा है। संसद में हंगामा करना, अपनी बात को रखने के लिए बहस के स्थान पर नारेबाजी, शोर-शराबा तथा तोड़फोड़ का इस्तेमाल करना ना तो उचित है और ना ही सांसदों के आचरणों के अनुकूल ही। जिन्हें प्रतिनिधि सदनों की गतिविधियों की संचालित करने के लिए निर्वाचित किया जाय, वे यदि उन सदनों को काम ही नहीं करने दें तो प्रारंभिक रूप से वे अपने मतदाताओं के प्रति कर्तव्य हनन के दोषी होते हैं। एक सर्वेक्षण से यह बात उजागर हुई है कि सामान्य भारतवासियों के समक्ष जो विषय महत्व और आतुरता के होते हैं, उनका प्रतिबिम्बन संसदीय गतिविधियों में नहीं होता। संसद यदि जन सामान्य के मानस का प्रतिनिधित्व नहीं करती तो वह अपना लोकतान्त्रिक स्वरूप विलोपित कर लेती है। इसलिए यह लोकतंत्र के लिए ऐसा संकट है जिसका सर्वसाधारण में, विशेषत: मतदाताओं में, सक्रिय विरोध होना चाहिए। इनके खिलाफ आन्दोलन की जरूरत है जिससे ऐसे आचरण पर अंकुश लग सके।

यह बात ठीक है कि लोकतंत्र में विरोध आवश्यक है। बहुमत और शासनाधिकार से उनकी अभिव्यक्तियाँ तो रोकी ही नहीं जा सकती जो तात्कालिक रूप से अल्पमत में हो जाते हैं। बहुमत का यह अर्थ नहीं होता कि जो उसके बाहर है उनकी उपेक्षा की जाए। जो अल्पमत में हो जाते हैं वे भी मतदाताओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। इसलिए संख्या में कम होने मात्र से उनकी उपेक्षा को उचित नहीं ठहराया जा सकता। किन्तु यह भी सच है कि जिन्हें मतदाताओं ने बहुमत नहीं दिया उसका कतई यह अधिकार नहीं बनता कि वे बहुमत प्राय: समूह को सदन समूचित रूप से नहीं चलाने दें। संख्या ही जब लोकतंत्र का आधार है, उसमें पर्याप्तता नहीं प्राप्त करने वाले उनके कार्य में बाधक नहीं बन सकते जो बहुमत प्राप्त कर लेते हैं। इसमें बहुमत के प्रति विरोध प्रकट करने का अधिकार विनिष्ट नहीं होता। चूंकि विरोध को सदन में उपस्थित रखकर ही संसदीय व्यवस्था ने अपने को सुमार्ग पर रखने की व्यवस्था विकसित की है इसलिए वास्तव में विरोध ही उनका प्राथमिक दायित्व होता है।

पर प्रश्न उठता है कि विरोध का स्वरूप क्या हो, यह सदन की कार्रवाई को नहीं चलने देना कतई नहीं हो सकता क्योंकि यह शिष्टाचार और मर्यादा के उपर मतदाताओं के अधिकार का हनन है। हर हाल में विरोध संसदीय आचरण के भीतर करना होगा। जैसे-जैसे आजादी के वर्ष बीतते जा रहे हैं, अधिकांश देशवासियों के संकट बढ़े हैं, स्थितियां बिगड़ी हैं। जब से मतदाता सत्तारूढ़ दलों को अपने तिरस्कार से शासनाच्यूत करने लगे, तब से दल की धारणा प्रबलतर होने लगी और आज दल के आगे देश को भुलाया जा रहा है। शासन दल का नहीं होता, देश का होता है। यह प्रतिबद्धता इस देश में निर्मित ही नहीं होने दी गई। संसद में हर बार हंगामा और सदन न चलने देने की कारवाई न तो हमारे विकास के अनुकूल है और ना ही इससे लोकतंत्र की मर्यादा सुरक्षित। विशेषाधिकार की आड़ में इस प्रकार हंगामाजनक कार्य करना वस्तुत: विशेषाधिकारों का दुरूपयोग ही है। जिन अधिकारों के द्वारा देश की जनता की समस्याओं को पूरजोर तरीके से संसद में रखकर उन पर सार्थक बहस करवाकर उचित समाधान ढूंढ सकते हैं, उन्हीं अधिकारों का दुरूपयोग करके यदि संसद के कार्यो को ही नहीं चलने देंगे तो क्या यह जनता के साथ धोखा नहीं है? इस पर आज गंभीरतापूर्वक विचार करने की आवश्यकता है।

यह संकट भयानक उथल-पुथल में न बदल जाए, लोकतंत्र के वर्तमान स्वरूप का विकल्प न खोजने लगें और देश नवीन उथल-पुथल के कगार पर न पहुँच जाए, इसके लिए प्रत्यक्ष और प्राथमिक दायित्व उन्हीं का होता है जो सदनों में बहुमत में होते हैं। इसलिए जरूरत इस बात की है कि सब मिलकर संसदीय लोकतंत्र की विफलता को और न बढ़ने से रोकने के उपायों पर विचार करें। किसी भी विधि से संसदीय व्यवस्था का आधार, उसके प्रति अविश्वास और अनास्था का भाव बढ़ने से रोका जाए क्योंकि संविधान द्वारा प्रदत हमारी निर्वाचनीय संसदीय व्यवस्था को प्राप्त करके उसे छोड़ना यहाँ की जनता सहन नहीं कर सकेगी।

इधर देश और राज्यों की राजनीति में मची भारी उथल-पूथल ने राजनीतिक परिवर्तन के अनेक संकेत दिए हैं। हर राष्ट्रीय दल उथल-पूथल के संक्रमण से ग्रस्त हैं। इन्हीं परिस्थितियों हम नई सहस्राब्दि में प्रवेश कर रहे हैं। यूं कम्प्यूटर के चमत्कारों ने पिछले वर्ष ही नई सहस्राब्दि के आनन्द में भारतीय जनमानस को डाल दिया था। किन्तु वास्तव में अब जाकर नई सहस्राब्दि में हमारा प्रवेश हो रहा है। भुमंडलीकरण के कारण विश्व बाजार विशेषकर अमेरिकी अर्थनीति के दबाव में पुरी दुनिया में विकास का गड़मगड्ड परिदृश्य है, उससे हमारा देश भी अप्रभावित नहीं रहा है। देश दुनिया की इन तमाम विडम्बनाओं के बीच हमारी पत्रिका नई सहस्राब्दि में इस अंक के साथ पुरे जोश-खरोश से पाठकों के बीच है। वासन्ती परिवेश में हम आपसे गणतंत्र के अभिषेक को तत्पर है, ऐसे में हमसे पत्रिका के पृष्ठों में दो फर्मे का इजाफा करते हुए पाठकों, लेखकों में नए संवादों का श्रीगणेश किया है।

SAMANTA BROTHERS
Shambhu Nath Samanta
Raj Kumar Samanta
GOLD SMITH
A gem of Collection and Manufacturers of:
All Kinds of Set Exclusive Diamond, Gold & Silver Jewellery
Specialised in Chains
25/3876, Regerpura, karol Bagh, New Delhi-5, Tel.:5842778,5825210

संघर्ष

✍ डॉ॰ श्याम सुन्दर सिंह

उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत्।
आत्मेव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः॥
गीता 6/5

मनुष्य अपने आप को संसार समुद्र से उद्धार करे और आत्मा को अधोगति में न पहुँचावे " क्योंकि जीवात्मा स्वयं अपना मित्र है तथा साथ ही स्वयं अपना शत्रु है।"

आखिर संघर्ष क्यों ?

उत्तर की जटिलता ने प्रश्न की सरलता को तर्क-वितर्क की घातों-प्रत्याघातों से युग की निरन्तरता में धूमिल कर रखा है, फिर भी स्पष्टता का आवाहनीय स्वर सजीव, सुन्दर, सत्य और बुलन्द है। जगत की कल्पना इसके अभाव में निष्क्रिय, निष्फल तथा नगण्य है। पराविन्दु से इसका महत्व कम नहीं, क्योंकि व्यवहार तदुपरान्त अनुभूति से घायल इसका मर्मज्ञ रागान्धता की सीमा का विच्छेदन करने के प्रयास में ही 'परा' का स्वाभाविक रूप से दर्शन कर लेता है, जिसे आश्रसंमान्त सन्यास कहा गया है। महत्ता जो भी हो, सम्बन्ध विचित्र है, इसलिए तीन का सयोग ही प्रारम्भ और अन्त का हेतु होता है, सुनने में, सुन्दर आश्चर्यजनक, आनन्ददायक किन्तु, परिणाम भयानक निकलता रहा है। त्रिगुण, त्रिमूर्ति एवं त्रिलोक इसके अभिन्न अंग हैं, विभाजित काल की संज्ञा त्रिखण्ड सब के संचालन हेतु संख्या में परिगणित है। ईश्वर, शक्ति, माया का त्रिकोणावस्थित कुण्डलिनी में योगी साक्षात्कार किया करते हैं। इन्हीं के परिप्रेक्ष्य में गोचरीय जगत की अवधारणा है, जिसकी पुष्टि त्रयी से अपेक्षित है, तीनों वर्णो का संघर्ष ब्रह्माण्ड का मूल कारण है, जो अपर 'द्वन्द्व' संज्ञा से लोक प्रसिद्ध है, बहुचर्चित धार्मिक परिवेश में यह अध्यात्म नाम से ज्ञात है। शब्दकोश की 'समता' और 'विषमता' दो सुन्दर शब्द हैं। यद्यपि ये भी अर्थ तथा भाव की व्यापकता को प्रदर्शित करने में पूर्ण सक्षम नहीं हैं, इसी के नायक हैं, क्योंकि ममता लयकारक है, जबकि संघर्ष (द्वन्द्व) का ही प्रारंभिक रूप विषमता है। इस प्रकार उद्‌भव स्वरूप एक का अनेक होकर सृष्टि को विकीर्णता और विनिष्टता का दीर्घसूत्रीय योजना सभी प्राच्य और उदीच्य विद्वानों ने इसी की भिन्न-भिन्न ढंग से व्याख्या कर अपना-अपना सिद्धान्त स्थिर किया है। उदाहरणस्वरूप गीता का अद्वैत, द्वैत, रामानुज का विशिष्टाद्वैत, बल्लभाचार्य का शुद्धाद्वैत, कणाद का परमाणुवाद तथा कपिल का सांख्य जहाँ इसके नाना रूप हैं वहीं जर्मन हीगेल का आत्मवाद, डार्विन का विकासवाद, एवं कार्ल मार्क्स का भौतिक द्वन्द्ववाद **Dialectical Materialistic** इसके पृथक अपना अस्तित्व नहीं रख सकते हैं।

संघर्ष शब्द का अर्थ :

अर्थ के दृष्टिकोण से संयोजित तीन वर्णो का यह शब्द दीर्घाकार तो नहीं, किन्तु अल्पाकर अवश्य है, तो भी गहनता और विशालता के लिये यह अनन्त तथा शाश्वत है जो अपने त्रिसन्धि में सम्पूर्ण का धारक एवं विनाशक कहलाता है। अपने इस विशिष्टता के कारण सर्वोत्कृष्टता के उच्चासन पर आसीन होने के बावजूद विभाजकीय प्रक्रिया का जन्मदाता भी विभाजन की श्रृंखला से वंचित नहीं रह सका है। फलतः यह दो वर्गों में वर्गीकृत होकर मूलभूत सिद्धान्त को निरन्तर गतिशीलता प्रदान कर जन्म के उद्देश्य को चरितार्थ करता रहता है, ताकि विच्छेदन की प्रक्रिया सक्रिय तथा विजयी न हो सके। इसके दो रूप इस प्रकार हैं :-

1. संकल्प
2. विकल्प

संकल्प उच्छेदन और विकल्प विस्तारक रूप में कल्पित है, जहाँ पहला, एकाकार कराता है, वहीं दूसरा अनेकाकार के लिए प्रसिद्ध है। एक सन्धि का मूर्त रूप है तो दूसरा विच्छेद का, एक ममता, अनुराग तथा श्रद्धा को उत्पन्न कर अपनी शक्ति से उन्हें पुष्ट करते हुए प्यार का अमित भंडार संचित करके क्रीड़ा के अपरिमित क्षेत्र को सजाता है तो संकल्प एकाधिकार को जताता है। एक सतोगुण को साकार करता है, दूसरा रजो तथा तमोगुण को अनुगृहीत करता है : एक कानन जीवन की तरफ से चलने के लिये मार्ग प्रशस्त करता है तो दूसरा प्रसादीय उद्यानों की तरफ, जहाँ मयूर, नृत्य और सप्तस्वरकारा परिभूतिका के मधुर गुणों, रसालों के रसों, मदों से बोझिल पवनों, कलकलाती टहनियों की अपार झनकारों, विशाल गगनचुम्बी गिरि शिखाओं से छिटकते गन्धो, मलयालम

से उद्वेलित शीतलता की लहरों, नव कलोलों तथा पण्प से थिरकते तृणों से लेकर व्योम स्पर्शकारी वृक्षों के अंचलों के सान्निध्य में आलक्त पगधारी, नुपूर-कंकण-हार, केयूर-नथ-कर्ण-कुण्डलों से लटकता, कंचुक-पीतसारी से दमकती चन्द्रमुखी का अनूठा संयोग होता है, विद्वेषों का जोर बढ़ता है, उत्थान पतन, विकास की संज्ञा मिलती है, करूणा और खुशियों का मूल बनता है, अपने और पराये का पहिचान कराता है तथा क्षेपण एवं प्रक्षेपण के माध्यम से गुजरता हुआ स्त्रष्टा का बोध कराता है और अन्ततः संकल्पाश्रित हो जाता है। इस प्रकार सं + कल्प = संकल्प = समाधि की (चिन्तन) और तथा वि + कल्प = विकल्प = प्रस्फुटन (सृष्टि प्रकाशन) की ओर ले जाने का कम संचालित होता रहता है। इसी आधार पर जिसे अपर संज्ञा के रूप में जगत को जैनों और बौद्धों ने सतत् माना है, जबकि सनातन धर्मावलम्बियों ने निरन्तरता की जगह विखंडिता को स्वीकार किया है। इसलिए यह सर्वमान्य है कि ये ही शान्ति (विक्षोभ) एवं अशांति (क्षोभ) नाम से भी ज्ञात है, इनमें से एक मोक्ष, निर्वाण नामधारी योग का प्रतिफल होता है तो दूसरा वैचारिक विभिन्नता संज्ञाधारी तृष्णा का, जिसका अन्त भी महामोह से ओत-प्रोत है।

संघर्ष के कारण :

मानस पटल (सत्यलोक) ही जहाँ अर्णव के तुल्य विचारों का केन्द्र है, फिर भी प्रश्न और उत्तरों की झड़ी क्यों न लगे? इसके हेतु अन्वेषण में प्रारम्भ से लेकर अब तक सम्पूर्ण बाङ्मय उलझा हुआ है तो भी सहस्त्रों शताब्दियों के चिन्तन के पश्चात् कारण अयस्क की भाँति मिश्रित हैं। इसलिए इसके संभाव्य निराकरण हेतु रहस्यों की अनुभूति के माध्यम से उद्घाटित करना पड़ता है, क्योंकि इनका पर्याप्त सम्बन्ध वैदिक धर्मग्रन्थों से है, जहाँ ऋषियों ने साक्षात्कार करने का प्रयास किया है।

शास्त्र ही प्रमाण है शास्त्रयोनित्व तू ब्रह्मसूत्र-1/1/3, बृ॰ उ॰ 3/9/26 (जगत विकार का परिणाम है) इसलिये वैकारिक अहंकार आदि का नाम पुराण संदर्भित हैं। वेदो के चार हजार ज्ञान मंत्रों का ही विकसित रूप उपनिषद है, जिनसे इन पर यथेष्ट प्रकाश पड़ता है। अहंकार, काम-क्रोध और लोभ वाङमय में बहुचर्चित है जो सत्य के प्रतिद्वन्द्वी हैं। इनसे निर्मित जगत की नश्वरता के कारण ही ब्रह्म को सत्य तथा जगत को मिथ्या ब्रह्मसत्यम् जगत मिथ्या, एका ब्रह्म द्वितीयो नास्ति' आदि कहा गया है। गीता में भी जगत जाल को गतिशील रखने के लिये कार्य, कारण, श्रृंखला तथा इनके संग्रह से बने कर्म का उल्लेख किया गया है, (गीता 18/18)। तृष्णा तो प्रधान कारक ही है जो इच्छा को स्वेच्छा के अनुसार संचालित करने में ही अपनी महत्ता रखाती है, क्योंकि मन में तृष्णा की छाया पड़ते ही उसकी पूर्णता के लिए इच्छा को आदेश ही जाता है, तद्नुसार वह कार्य करने लगती है इसलिए मन को ही योगाभ्यास द्वारा नियन्त्रित रखने के लिये गीता आद्योपान्त कहती है कि 'मन बड़ा चंचल होता है'। बुद्ध ने भी तृष्णा का उन्मूलन करने के लिये कहा है क्योंकि यही दुःखों का कारण होता है तथा साथ ही अन्य आर्य सत्य, इसी के आधार पर निर्मित हैं। बुद्ध के पूर्व से जैन धर्म तृष्णा का घोर विरोधी रहा है, जिसके कारण स्वनियंत्रण उनका प्रधान धर्म माना गया है। इस दृष्टिकोण से सनातन हिन्दू, बोद्ध तथा जैन तीनों में मूलभूत समता है। इसलिए बौद्ध और जैन दोनों मूल हिन्दू धर्म का प्रतिरक्षक है।

उपर्युक्त वर्णन से दो तथ्य सामने हैं :-

1. सत्य (निवृत्ति)
2. विकार (प्रवृति)

संकल्प सत्य का है, जबकि विकल्प विकार का। सत्य को स्थिर रहने के लिये किसी अन्य की आवश्यकता नहीं किन्तु विकार के लिए अन्य कारकों की प्रबलरूप से आवश्यकता होती है, जिनमें अहंकार-मोह आदि नाम वर्णित हैं। इन्हीं के विनाश के लिए गीता कहता है (4/26-41, 5/23)। इनके उन्मूलन के पश्चात ही जीव अपने पूर्व रूप को पहचानता है, जिसे गीता ने अध्यात्म की संज्ञा दी है (8/3)। पाश्चात्य विज्ञ साक्रटीज ने भी डेफिल्स आफ ओराकिल्स की प्राप्ति के पश्चात अपने शिष्यों से कहा था कि 'तुम अपने को पहचानो' (पाश्चात्य चिन्तन की विचारधारा)।

बुद्ध ने भी ज्ञान प्राप्ति के उपरान्त लोगों द्वारा प्राप्ति के लिए मार्ग पूछे जाने पर 'स्व को पहचानने की ही' बात कहा था, क्योंकि दूरी के लिए मार्ग की आवश्यकता होती है, न कि पास में न

रहने वाले के लिए, जीव स्वयं में बोल रहा है इसलिए तुम अपने को पहचानो। इस प्रकार पंच महाभूत सहित अष्टम जड़ प्रकृति का एक आधार यही चार है (गीता 7/4-5)।

चतुर्वग में भी प्रथम नाम काम का आता है, जो अन्य तीन का मूल होता है। इसके नहीं रहने पर अन्य का अस्तित्व ही मिट जाता है।

क्रोध - मद - लोभ

काम

क्योंकि तृष्णा में काम का नाम आते ही एक विचित्र स्थिति उत्पन्न होती है। जिसमें विघ्न पड़ने से क्रोध आता है और क्रोध में विघ्न पड़ने से बुद्धि नष्ट होती है और विवेक के नष्ट होते ही व्यक्ति अपने स्थान से गिर जाता है। मद और लोभ इसी का अभिन्न अंग है। इसलिए सर्वप्रथम आवश्यकरूप में 'काम' को ही नाश करने के लिए कहा गया है (गीता 3/37--43)।

"काम एष क्रोध एष रजोगुण समुद्भव: महाशनों महापाप्मा विद्धयेनमिह वैरिणाम्"।

जिसके शमन होते ही जीव को अपने वास्तविक रूप का परिचय मिल जाता है, फलत: वह अन्य विकारो से मुक्त हो जाता है।

इसका वर्तमान परिणाम :

यद्यपि सत्य अनन्त है किन्तु काम की छत्र-छाया में ही वर्तमान का निर्माण है तथा साथ ही कलियुग अपनी विशिष्टता स्वरूप पूर्णता के साथ इससे आक्रान्त है, युगों का जन्म ही इसके अन्तर्गत है तो भी बात रही मात्रा की। पूर्व में इसकी मात्रा न्यून थी, जबकि वर्तमान की आधारशिला ही इस पर रखी हुई है।

माया काम की साक्षात मूर्ति है, जिसकी नंगा-विनाशकारी ताण्डव नृत्य काल-सन्धि में उपस्थित है। इसी का प्रतिरूप क्रोध चरमसीमा पर हैं, जिसके पोषण करने वाले दो मोहमयी (स्नेह) दुग्धाघातों से अभिसिंचिन करते रहते हैं। इसलिए नैतिकता का पूर्णाच्छेदन हो गया है। रही बात संज्ञा की जो मात्रा लेखनी के स्याह मुख पर शशि-श्याम-छाचा तुल्य जीवित है। क्रोध, ईर्ष्या, मद, अभिमान और लोभ अपहरण तथा अनैतिकता (बेइमानी) में रूपान्तिरित हो चुके हैं, जिनका सामूहिक नाम हिंसा है, जीवन का घृणित क्षेत्र रहा है तथा इसकी प्रतिरक्षा का सम्पूर्ण श्रेय स्तम्भ: असत्य को मिला। फलत: प्रबल हिंसा का विकृति रूप संघर्ष ने अपना क्रूर आधिपत्य स्थापित किया। इसीलिये सत्य प्रतिरूप दया विखन्डित होकर भाई-भाई, पिता-पुत्र और युगलों के बीच प्रलयकारी दृश्य उपस्थित कर दिया है।

काम प्रतिरूप माया की रक्षा में ही सम्पूर्ण शिष्टाचार समर्पित होकर उसी के परिप्रेक्ष्य में मर्यादा की कड़ियाँ वीभत्स स्वर में लड़खड़ा रही हैं, जिससे सौन्दर्य का ही विकासवादी युग में श्रेणी-व्यापार शुरू हुआ है। अनैतिक रूप में अपार्जन ने इसके श्रृंगार प्रसाधन को संभाला। फलत: चर्म-क्रय की अधिकता ने स्थान ग्रहण किया, क्योंकि इसी में लौकिक सुख की अवधारणा परिकल्पित है, जिसे वैज्ञानिक विकास की संज्ञा उपहार स्वरूप प्राप्त हुई है। आर्थरकिंग की अंग्रेजी कविता (पुराने नियमों की जगह नये नियम स्थान ग्रहण करते रहते है) सही है किन्तु धर्म की मौलिकता में इसका स्थान नहीं, क्योंकि पुरातन शिष्टाचार जीवन की निर्मलता, अस्तेय, अपरिग्रह और अहिंसा आदि सिद्धान्तों में कमी परिवर्तन की आवश्यकता नहीं होती है, जो ध्रुव सत्य है। इस प्रकार काम प्राप्ति में व्यवधान की उपस्थिति से ही मद और लोभ पर आधारित व्यापक संघर्ष का जन्म होता है, जो प्रारम्भिक द्वन्द्व से पूर्णतया भिन्न है।

प्रारम्भ में इसका अभिप्राय आध्यात्मिक और भौतिक द्वन्द्व से था, किन्तु वर्तमान इसके घृणित पक्ष से (नैतिकहीन संघर्ष) है। वैचारिक द्वन्द्व अविच्छिन्न रूप से प्रवाहित होता रहा, जबकि अमूर्त द्वन्द्व ही अब मूर्तरूप में दृष्टांकित होकर कण-कण में ध्यातव्य है एवं इनकी शमनकारी पुरातन सिद्धान्त वर्तमान उपयोगिता में अपनी निष्क्रियता के कारण उपहास के संकुल बन गये हैं। अत: उपर्युक्त व्याख्या की परिवेश में तथ्यों को समालोचना की कसोटी पर रखाकर उन्हें तर्क-वितर्क की अपूर्व ध्वनि से खण्डन करने पर निष्कर्ष स्वयं निकल आता है कि काम ही इसका आदि स्तम्भ रहा है। ☒

मानवाधिकार का हनन कानून कार्यान्वयन एजेंसियों से ही

✍ ज्ञानेन्द्र नारायण सिंह

राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष न्यायमूर्ति जे. एस. वर्मा ने कहा है कानून लागू करने वाली एजेंसियां ही देश में सबसे ज्यादा मानवाधिकार हनन करती हैं और उन्होंने इन एजेंसियों को समुचित प्रशिक्षण तथा शिक्षा के जरिये ज्यादा संवेदनशील बनाने का आह्वान किया।

न्यायमूर्ति वर्मा ने यहां बातचीत में कहा कि पुलिस के खिलाफ मानवाधिकार आयोग की हर वर्ष देश के विभिन्न भागों से बड़ी संख्या में मिलने वाली शिकायतों से पुलिस का असंवेदनशील चेहरा स्पष्ट हो जाता है।

उन्होंने अर्द्धसैनिक बलों के कर्मियों को भी मानवाधिकार संरक्षण कानून 1993 की परिधि में लाने पर जोर दिया जिससे उनके द्वारा शोषण की बढ़ रही घटनाओं पर नियंत्रण लगाया जा सके।

न्यायमूर्ति वर्मा ने कहा कि अर्द्धसैनिक बलों के कर्मियों द्वारा कथित मानवाधिकार हनन की जांच रक्षा मंत्रालय के कराने के बजाय इसे मानवाधिकार आयोग के दायरे में लाना चाहिए जिससे उन्हें ज्यादा जबावदेह और व्यवस्था को पारदर्शी बनाया जा सके।

उन्होंने देश में मानवाधिकारों की स्थिति सुधारने के लिए आयोग की सिफारिशों पर सरकार के उदासीन रवैये पर अफसोस व्यक्त किया।

उन्होंने कहा कि अर्द्धसैनिक बलों के मानवाधिकार संरक्षण कानून 1993 के दायरे के अंदर लाने और मानवाधिकार मुद्दों संबंधित विभिन्न एजेंसियों के बीच सहयोग बढ़ाने की सिफारिशें पिछली मार्च से सरकार के पास लम्बित नहीं हुई है।

न्यायमूर्ति वर्मा ने कहा कि राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग, राष्ट्रीय महिला आयोग, अल्पसंख्यक आयोग और अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति के आयोग के बीच सम्बन्ध बताने वाले प्रावधानों का अभाव मानवाधिकारों की सुरक्षा में सबसे बड़ी बाधा है।

ये सभी आयोग समाज के विभिन्न वर्गों में मानवाधिकार हनन पर नजर रखते है। न्यायमूर्ति वर्मा ने सुझाव दिया कि विभिन्न आयोगों को उनके कार्य में टकराव से बचाने और उनमें समन्वय के लिए एक व्यापक कानून बनाया जाना चाहिए।

उन्होंने कहा कि राज्य मानवाधिकार की स्थापना को वैकल्पिक न रखकर बाध्यकारी बनाया जाना चाहिए। उन्होंने साथ ही कहा कि इन राज्य आयोगों को राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के तहत कार्य करना चाहिए। जिस तरह उच्च न्यायालय उच्चतम न्यायालय के तहत कार्य करते हैं।

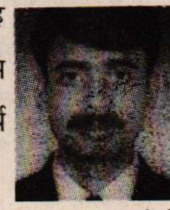

न्यायमूर्ति वर्मा ने कहा कि लोगों विशेषकर महिलाओं और कमजोर वर्गों को अधिकार देना, गरीबी को दूर करना और शिक्षा का विस्तार करना देश के सामने मुख्य मानवाधिकार चुनौतियां हैं। उन्होंने कहा कि सामाजिक और आर्थिक न्याय को बड़ावा देने के लिए समुदाय को शामिल करने की जरूरत है।

न्यायमूर्ति वर्मा ने कहा कि कमजोर वर्गों, बच्चों, मजदूरों और सुविधाओं से वंचित लोगों को न्याय मिलना चाहिए। उन्होंने कहा कि जनता के मानवाधिकार सुनिश्चित करने में न्यायपालिका की बड़ी भूमिका है जबकि राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग की को पूरक भूमिका निभानी है।

उन्होंने कहा कि शिक्षा के जरिये मानवाधिकार संस्कृति का विस्तार ही एक मात्र तरीका है जिससे स्थिति में सुधार किया जा सकता है क्योंकि यह न केवल लोगों को मानवाधिकारों का उल्लंघन करने से रोकेगा बल्कि उन्हें इसका पालन करने के लिए प्रेरित भी करेगा। ☒

GOLDEN

GOLDEN POLYMEX (INDIA) LIMITED

Regd. Office :
Uma Shanker Lane, Mogalpura, Patna City-800008
Ph. : 640212, 640015, Fax : 0612-644525

Mfrs. Of :
High Barrier - Extruded Multilayar Films
H.M., LLDPE, LDPE Bags, Gravure
&
Flexo Printing etc.

सपना तीसरे मोर्चे का

विचार संवाददाता, दिल्ली से

विभिन्न राजनीतिक दलों के कुछ नेताओं ने तीसरे मोर्चे का सपना पुनः संजोया है। प॰ बंगाल के पूर्व मुख्यमंत्री पद से स्वास्थ्य के आधार पर त्याग पत्र देने वाले वयोवृद्ध मार्क्सवादी नेता ज्योति बसु के अभिनन्दन के अवसर पर कोलकत्ता के साल्टलेक स्टेडियम में भारत के पूर्व प्रधानमंत्री वी॰ पी॰ सिंह तथा एच॰ डी॰ देवगोड़ा, राजद के अध्यक्ष लालू प्र॰ यादव, भाकपा नेता ए॰ वी॰ वर्द्धन, बिहार की मुख्य मंत्री राबड़ी देवी, और भाकपा नेता हरकिशन सिंह सुरजीत ने वहीं पुराना राग अलापते हुए भाजपा के साम्प्रदायिक राज से मुक्त होने की बात विगत माह में की। इसके पूर्व भी इसी वर्ष चार पूर्व प्रधानमंत्री की उपस्थिति में कोलकत्ता में ही तीसरे मोर्चे के गठन की चर्चा हुई थी। पर वही ठाक के तीन पात। दरअसल सच्चाई यह है कि आज की तिथि में सिर्फ 'साम्प्रदायिक' कहकर भाजपा को खारिज नहीं किया जा सकता। क्योंकि भाजपानीत केन्द्र की गठबन्धन सरकार बनने के बाद भाजपा की मूलभूत नीतियों में परिवर्तन आया है और वह 'न्यूनतम साझा कार्यक्रम' के आधार पर केन्द्र में सरकार चला रही है, जिसमें समता पाटी, तेलगुदेशम डी॰ एम॰ के॰ तथा बीजू जनता दल जैसी अनेक पार्टियां भी शामिल हैं, जिस पर आज तक साम्प्रदायिकता का रंग कतई नहीं चढ़ पाया है। हालांकि पिछले दिनों प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के अयोध्या में मन्दिर निर्माण के सवाल पर जो बयान आए और संसद के दोनों सदनों में जो बबाल मचा उससे भाजपा तथा सरकार की विश्वसनीयता को जरूर थोड़ा धक्का लगा है, फिर भी अब सिर्फ भाजपा विरोध के आधार पर तीसरे मोर्चे की कल्पना सम्भव नहीं है।

सब लोग इस बात से अवगत हैं कि कामोवेश जाति और सम्प्रदाय की राजनीति आज प्राय: सभी दलों के द्वारा की जा रही है। इसलिए तीसरे मोर्चे की कल्पना मात्र नीतियों और कार्यक्रमों के आधार पर ही की जा सकती है। इस बात इनकार नहीं किया जा सकता कि भाजपा भी एक सबल पार्टी बन चुकी है और उसने देश के प्राय: सभी क्षेत्रों में अपना आधार मजबूत कर लिया है और दूसरी ओर वामपंथी पार्टियां सिर्फ प॰ बंगाल, केरल तथा त्रिपुरा तक ही सिमट कर अब रह गयी हैं। उसमें भी प॰ बंगाल में उसे तृणमूल कांग्रेस से प्रबल चुनौती मिल रही है। और वी॰ पी॰ सिंह हो या लालू प्रसाद, देवगौड़ा हों या ज्योति बसु इनके अपील राष्ट्रीय नहीं बल्कि क्षेत्रीय हैं। इसलिए तीसरे मोर्चे की जो लोग सपना देख रहे हैं वे अलग-अलग क्षेत्र में कमजोर आधार वाले लोग ही हैं और इनकी कमजोरी कांग्रेस से प्रेम भी है जिसे मुलायम सिंह यादव सरीखे लोग कतई बर्दास्त करने को तैयार नहीं। राजनीतिक विकल्प को रचने की सम्भावना सदैव रहती है पर तीसरे मोर्चे की कल्पना तब तक नहीं की जा सकती जब तक समाजवादी पार्टी के मुलायम सिंह यादव, समता पार्टी के नीतीश कुमार डी॰ एम॰ के॰ के करुणानिधि, राष्ट्रीय लोकतान्त्रिक के शरद पवार, लोकजनशक्ति पार्टी के राम विलास पासवान तथा राजद के लालू प्रसाद सरीखे लोग नीतियों और कार्यक्रमों के आधार पर एकमत न हों। बहरहाल तो ऐसा कुछ दीखता नहीं। बल्कि सच तो यह है कि वे ही लोग अपनी-अपनी खीचड़ी अलग पका रहे हैं। इसलिए फिलहाल तीसरे मोर्चे के गठन का सपना मात्र सपना ही कहा जाएगा। सच तो यह है कि इस देश में नेताओं की एक ऐसी जमात तैयार हो गयी है, जिसे देश और देशवासियों से कोई लेना-देना नहीं है, उनके लिए देश से बड़ा अपना दल है क्योंकि वे अपने आदमी, धन, शक्ति, शिक्षा, जन्म, पद या उत्कृष्टता के नाम पर तथा अपनी प्रतिष्ठा को भूलाकर, केवल अपने परिवार और जाति समूहों को लाभ पहुँचाना चाहते हैं। सक्षम लोगों द्वारा भ्रष्टाचार को पनपाकर समाज तथा देश को नुकसान पहुँचाया जा रहा है। ☒

मध्यावधि चुनाव के लिए तैयार रहें

- शरद पवार

राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष शरद पवार ने मुंबई में आयोजित अपनी पार्टी के पदाधिकारियों की बैठक में यह संभावना व्यक्त की है कि केन्द्र की वाजपेयी सरकार पूरे पाँच वर्ष नहीं चलेगी और कभी भी, मध्यावधि चुनाव हो सकते हैं। अयोध्या, जम्मू-कश्मीर और अन्य कुछ विषयों पर तृणमूल कांग्रेस, तेलगु देशम और शिवसेना के रवैये से सम्भवत: श्री पवार को यह आभास हो रहा है कि राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबन्धन ज्यादा दिन नहीं चलेगा। ऐसा माना जा रहा है कि श्री पवार मध्यावधि चुनाव के पक्ष में हैं और अयोध्या तथा जम्मु-कश्मीर में युद्ध विराम पर जनमत चाहते हैं। उन्होंने यह भी संभावना व्यक्त की कि मध्यावधि चुनाव हुए तो एक नया राजनीतिक फ्रंट तैयार होगा और हो सकता है कि कांग्रेस में नेतृत्व के मुद्दे पर विभाजन हो जाए।

कहा जाता है कि श्री पवार इन दिनों भाजपा और कांग्रेस को छोड़ एक नए राजनीतिक गठजोड़ बनाने में, लगे हैं जिसमें वे भी दल के साथ हैं। जो अभी राजग के साथ हैं। किन्तु बहरहाल ऐसा कुछ लगता नहीं कि राजग के घटक दलों में से कुछ निकलकर श्री पवार के साथ हो लें क्योंकि सपा, राजद तथा वामपंथी पार्टियाँ मिलकर तीसरे-मोर्चे के लिए अलग राग अलाप रही हैं।

डॉ. राजेन्द्र गौतम हरियाणा हिन्दी साहित्य पुरस्कार से सम्मानित

डा. राजेन्द्र गौतम, प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय एवं कार्यकारिणी सदस्य, रा.वि.मंच दिल्ली शाखा को हरियाणा सरकार ने वर्ष 1999 के लिए **''हिन्दी साहित्य पुरस्कार''** से सम्मानित किया है। डॉ. गौतम के कई काव्य-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। रा.वि.मंच द्वारा आयोजित अनेक गोष्ठियों, व्याख्यानमाला में अपना योगदान दिया है। रा.वि.मंच की ओर से उनकी इस उपलब्धि के लिए हार्दिक बधाई।

विश्व हिन्दू परिषद् द्वारा मन्दिर निर्माण की घोषणा

रा.वि. संवाददाता

विश्व हिन्दू परिषद द्वारा आयोजित धर्मसंसद ने शनिवार को सरकार से कहा कि वह अगले वर्ष 12 मार्च तक अयोध्या में राम मन्दिर निर्माण के रास्ते की सभी बाधाओं को दूर कर दे जिसके बाद कोई भी शुभ दिन देखकर मन्दिर का निर्माण कार्य शुरू कर दिया जाएगा। इसके बाद 26 नबम्वर 2001 को एकादशी के दिन मन्दिरों में श्रीराम जय राम जय-जय राम का जाप शुरू कर दिया जाएगा। इससे पूर्व 18 फरवरी 2001 तक अयोध्या से दिल्ली तक की पदयात्रा कर मन्दिर निर्माण के लिए जनजागृति पैदा की जाएगी। धर्मसंसद में सर्वसम्मति से एक प्रस्ताव को मंजूरी दी गई जिसमें कहा गया कि वर्ष 2002 में शिव के सोमनाथ मन्दिर जीर्णोद्धार की स्वर्ण जयन्ती है इसलिए अयोध्या में राम मन्दिर का निर्माण इसी वर्ष शुरू करना उचित होगा।

प्रस्ताव में कहा गया है कि 18 से 25 फरवरी के बीच अयोध्या से दिल्ली तक एक विराट चेतावनी संत यात्रा का आयोजन किया जाएगा, ताकि सरकार इसपर बात के लिए दबाब डाला जा सके कि वह मन्दिर निर्माण के रास्ते में आनेवाली तमाम बाधाओं को दूर करें। और विवादित भूमि मन्दिर निर्माण के लिए हिन्दूओं को सौंप दें।

देशभर के हिन्दू इस वर्ष 18 सितम्बर से 18 अक्टूबर के बीच शिव की विशेष अर्चना आयोजित करेंगे और 26 नबम्वर को मन्दिर निर्माण के लिए विशाल जागृति अभियान चलाया जाएगा। धर्मसंसद में मौजूद प्रतिनिधियों ने जयश्री राम के जयघोष के साथ इस प्रस्ताव को सर्वसम्मति से मंजूरी दे दी।

इस बीच बजरंग दल ने कहा कि अयोध्या में मन्दिर निर्माण की तिथि घोषित होने के साथ ही समर्पित कार्यकर्ताओं की भर्ती शुरू कर दी जाएगी। ☒

कवि अटल बिहारी वाजपेयी : कृतित्व एवं व्यक्तित्व

डॉ. वैद्यनाथ शर्मा

भारतीयता, राष्ट्रीयता, मानवता, सहृदयता और उदात्तता की भावभूमि पर सर्जना के स्वरों को मुखरित करने वाले अटल बिहारी वाजपेयी सच्चे अर्थ में वरदायिनी, हंस-सुवाहिनी मां शारदा के वरद पुत्र हैं। विगत पांच दशकों से अधिक उनकी वाणी कोटि-कोटि देशवासियों की ठहार बनी हुई है। देश में वक्ता अनेक हुए हैं और हैं, किन्तु अटलजी की वाणी में जो सम्मोहन-क्षमता है, वह अभी तक तो अन्य किसी की वाणी में नहीं आ सकी। यही कारण है कि उनके भाषणों में बुद्धिजीवी, साहित्यसेवी तथा अन्य सामान्य जन समान रूप से आनन्द लेते हैं। ये गद्य को जो पद्यात्मक स्वरूप प्रदान करते हैं, वह श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर देता है। वे हंसी की फूलझड़ियों के बीच अपनी विशिष्ट व्यंग्य-शैली में बारीक से बारीक बात को, अप्रतिम प्रतिभा के कारण सहज ढंग से व्यक्त कर देते हैं। उनके व्याख्यानों की प्रशंसा संसद में उनके विरोधी भी मुक्त कंठ से करते हैं। उनके अकाट्य तर्कों का सभी लोहा मानते है। राष्ट्रसंघ की बैठकों में दुनिया के प्रतिनिधियों के बीच जब पुष्ट प्रमाणों के आधार पर उनकी सिंह-गर्जना होती है तो लोगों के छक्के छूट जाते हैं। जेनेवा सहित अन्य मंचों पर पाकिस्तान को पटकनी देने वाले अटल जी हमारे राष्ट्र-गौरव हैं, भारतीय, राष्ट्रीयता के प्रतीक हैं।

अटल जी का कवि रूप भी शिखर को स्पर्श करता है। आचार्य विष्णुकांत शास्त्री के शब्दों में-''वज्र से भी कठोर अडिग संकल्प-सम्पन्न राजनेता अटल बिहारी वाजपेयी के कुसुम कोमल हृदय से उमड़ पड़ने वाली कविताएं गिरि हृदय से फूट निकलने वाली निर्झरणियों के सदृश एक ओर जहां अपने दुर्दान्त आवेग से किसी भी अवगाहनकर्त्ता को बहा ले जाने में समर्थ है, वहीं दूसरी ओर वे अपनी

निर्मलता, शीतलता और प्राणवत्ता से जीवन के दुर्गम पथ के राहियों की प्यास और थकान को हरकर नई प्रेरणा की संजीवनी प्रदान करने की क्षमता से भी सम्पन्न हैं। इनका सहज स्वर तो देशभक्तिपूर्ण शौर्य का ही है, किन्तु कभी-कभी नवसर्जना की वेदना से ओत-प्रोत करुणा की रागिनी को भी ये ध्वनित करते है।'' सन् 42 से लेकर अद्यावधि उनकी रचनाएं अपनी ताजगी के साथ घटक सामग्री परोसती आ रही हैं। उनका कवि युगानुकूल काव्य-रचना करता आ रहा है। वे एक साथ छंदकार, गीतकार, छंद-मुक्त रचनाकार एवं व्यंग्यकार हैं। यद्यपि उनकी कविताओं का प्रधान स्वर राष्ट्रप्रेम का है तथापि उन्होंने सामाजिक एवं वैचारिक विषयों पर भी रचनाएं की हैं। प्रकृति की छबीली छटा पर तो वे ऐसा मुग्ध होते हैं कि सुध-बुध खो बैठते हैं। उनकी विचार-प्रधान नई कविताओं की हिन्दी के वरिष्ठ समीक्षकों ने भी सराहना की है।

कविता जन भावनाओं की अभिव्यक्ति करती है। कवि मानवीय संवेदनाओं को परखने की दक्षता रखता है। राजनीति जन समुदाय को स्वच्छ जीवन-दर्शन करने का वादा तो करता है, परन्तु अपनी उच्चाकांक्षा, राजनीतिक शिखर बनने के क्रम में लक्ष्य से भटक जाता है। यही कारण है कि राजनीति एवं राजनीतिज्ञ, सत्ता और शासक का पक्ष विवादित रहा है। राम-राज्य का आकलन एक आदर्श के तौर पर किया जाता है, मगर कैकेयी का राजा के रूप में राम के प्रति विद्रोह एवं धोबी द्वारा राजसत्ता पर उठाई गयी संदेह की ऊंगली मानवीय संवेदनाओं को प्रभावित करती परिलक्षित होती है। अटल जी राजनीति-शिखर से होकर भी विवादग्रस्त नहीं हुए। प्रतिपक्ष की दृष्टि में उनकी सफलता के लिए सबसे बड़ा अवरोध होकर भी सर्वप्रिय रहे। यह अटलजी के कवि व्यक्तित्व का ही प्रतिफल माना जाएगा। वस्तुतः अटलजी कवि हैं, राजनेता का पथ उसके पीछे है। दिनांक 24 अप्रैल 1992 को दिल्ली में उन्हें 'पद्मविभूषण' से अलंकृत किया गया था। अपने सम्मान में आयोजित आयोजन में उन्होंने **'मुझे इतनी ऊंचाई कभी न देना'** कविता पढ़ी थी। उस लम्बी कविता में वे कहते हैं :-

''ऊंचे पहाड़ों पर
पेड़ नहीं लगते
पौधे नहीं उगते

न घास ही जमती है
जमती है सिर्फ बर्फ
जो कफन की तरह सफेद
मौत की तरह ठण्डी होती है।
मेरे प्रभु !
मुझे इतनी ऊंचाई कभी मत देना
गैरों को गले न लगा सकूं
इतनी रूखाई
कभी मत देना" ।

कवि धरातल पर रहने की इच्छा प्रकट करता है। जन सामान्य के बीच रहकर ही वह काव्य-सृजन कर सकता है। एक सफल कवि का मापदण्ड अपनी कविता से जन समुदाय को आन्दोलित एवं प्रबुद्ध करना है। राजनेता जनता से सहारा पाकर शीर्ष की ओर उन्मुख होता है। एक क्षण ऐसा भी आता है, इतनी ऊंचाई पर पहुंच जाता है, जहां से वह जनता की नजर से ओझिल होकर केवल स्मृति-चिह्न बन जाता है। राजनेता और कवि, कुछ विचित्र सा लगता है। पर सत्य तो सत्य है। अटलजी कवि और राजनेता दोनों हैं। इतना अवश्य कहा जा सकता है कि इनके व्यक्तित्व ने पूर्णत: कवि रूप ले रखा है ओर राजनेता अधूरा है। उनका आचार-विचार सब कुछ एक कवि जैसा है। राजनीति में पांच दशक अटलजी ने पूरे किये। यह अवधि छोटी नहीं है। मगर राजनीति के ओछे खेल का पात्र नहीं बनने के कारण उनका कवि मन संवेदनशील रहा, सचेष्ट रहा। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि अटलजी कवि और राजनेता के एकाकार मूर्ति हैं। वे स्वयं इस संदर्भ में कहते हैं कि **''कविता मुझे विरासत में मिली है। ''**

अधिकांश राजनेता राजनीति के शिखर पर पहुंचने के बाद अपनी लोकप्रियता खोता है। अटलजी की लोकप्रियता क्रमिक रूप से बढ़ रही है। अटलजी का कवि व्यक्तित्व पूनम की चांदनी जैसा मनोहारी है। उनकी चन्द्रप्रभा की तरल छिटकन से पेड़-पौधे, बाग-बगीचे पहाड़ और घाटियों, और तो और रेगिस्तान की दृष्टि विरोचक रेत भी रोमांचित हो उठी हैं। मानवीयता के तल पर उनके चन्द्रकिरणों के चंदोवे से झोपड़ी और अट्टालिका समान रूप से आच्छादित है।

कभी-कभी अटलजी अपनी दलगत नीतियों से अलग होकर विचार प्रकट करते हैं। ऐसी स्थिति में उनसे सम्बद्ध दल को राजनीति क्षेत्र में हानि उठानी पड़ती है। उनका यह कदम **''जनहित हिताय''** से प्रेरित होता है, राष्ट्रगत बिन्दुओं से अनुप्राणित होता है। ऐसी स्थिति में उनका कवि व्यक्तित्व राजनेता अटल बिहारी वाजपेयी से काफी आगे निकल पड़ता है। अपनी हाल की अमेरिका यात्रा के क्रम में **'भारत-भारती संस्थान'** में सम्बोधन के क्रम में उन्होंने स्वयं कहा है **''कवि विद्रोह करता है और राजनेता समझौता''** । वे दलगत लाभ के लिए मानवीयता और राष्ट्रीयता से कभी समझौता नहीं करते । उनका कवित्व ऐसी स्थिति में विद्रोह करता है। जनसामान्य की संवेदना से अटलजी खुद को जोड़ लेते हैं।

अनेक साहित्यकारों ने अटलजी के कवि व्यक्तित्व को इस रूप में सराहा है -अप्रैल 96 के अंक में 'कादम्बिनी' के सम्पादकीय में डॉ. राजेन्द्र अवस्थी लिखते हैं - ''वाजपेयीजी जन्मजात कवि हैं और राजनीति में रहकर भी सामाजिक प्राणियों के साथ भरपूर सराबोर हो जाते हैं। ये सारे गुण एक रचनाधर्मी व्यक्ति के हैं । लेकिन कमाल है वाजपेयी जी राजनीति की दुनिया में भी शतरंज खेलने में पूरी तरह माहिर हैं । उनके सद्य: प्रकाशित कविता-संग्रह को पढ़कर उनकी क्षमता के सामने झुक जाना पड़ता है। ''

लब्ध प्रतिष्ठित साहित्यकार शिवमंगल सिंह सुमन इस रूप में अटलजी के कवि-मन को व्यंजित करते हैं-'' अटलजी उस दीपक की भांति हैं, जो अंधेरी रात में तब तक संघर्ष लगातार करता है, जब तक सबेरा उसके कदम न चूम ले । उनकी कविताएं एक संघर्षशील योद्धा की कविताएं हैं। उनकी कविताओं में वैसा ही ओज है जैसा सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की राम की शक्तिपूजा में है।" सुमन जी उनकी 'ऊंचाई' शीर्षक कविता को संवेदनशीलता का उदाहरण मानते हैं। उनकी कविताओं में चुनौती व विद्रोह दोनों चीजें मौजूद हैं। कविताओं पर छायावादी प्रभाव भी है। असल में अटलजी की कविताओं में सारा युग समाया हुआ है। वे भविष्य पर भी पैनी निगाह रखे हैं। उन्होंने स्वयं लिखा है - "अटलजी का कवि सत्य के प्रति निष्ठा के लिए सदैव जाना जाएगा । अटलजी अहर्निश काम में लगे रहते हैं।''

वाजपेयी जी का व्यक्तित्व मूलत: कवि का है । इसके सर्वांगीण विकास के प्रति वे विशेष सजग दिखते हैं। उनकी कविताओं में नारी-सौन्दर्य का सर्वथा अभाव झलकता है। जो कुछ लोगों की दृष्टि में उनके कवि व्यक्तित्व की ओर ऊंगली उठाने का आधार सा लगता है। शायद अटलजी एकांगी कवि होना नहीं चाहते, जिससे उनकी कविताएं विलासी पहचान बनाये। जन सामान्य की पीड़ा को अभिव्यक्ति देने का दायित्व वे सफलता पूर्वक निभाते

है।। गृहस्थ जीवन से उनका पलायन होता है। अटलजी का कवि हृदय इस बात की पूरी गारंटी चाहता है कि राजसेवा, राष्ट्रसेवा के लिए उठनेवाले कदम कहीं डिगे नहीं । गृहस्थ जीवन इस कदर इस ध्येय को विशेष प्रभावित करता है । मोह और लोभ गृहस्थ जीवन की पहली प्राथमिकता है जो कवि-राजनेता दोनों को खोखला करती है। अटलजी का उपर्युक्त दोनों बिन्दुओं पर लिया गया निर्णय कवि व्यक्तित्व का निर्णय है। संकट, संघर्ष ओर संयम की झझावातों से जूझता केवल कवि है।

अटलजी का जीवन एक खुली किताब है। सार्वजनिक जीवन में इतनी निर्भीकता राजनेता में कहां ? राजनेता तो अपने वैयक्तिक कार्य-व्यापार को सदा ढंकने का यत्न करता है, जन समुदाय को लुभाने वाला आकर्षक जिल्दसाजी करता है। यह कार्य वाजपेयी जी ऐसे कवि व्यक्तित्व सम्पन्न राजनेता के लिए न तो सम्भव है और न सम्भव होगा ।

वाजपेयीजी जितने तगड़े और बड़े राजनेता हैं, उनसे तनिक भी कम तगड़े और बड़े कवि नहीं हैं। कुछ लोगों की यह मान्यता है कि यदि वाजपेयी जी राजनीति के अंधड़-झंखड़ में न पड़े होते तो वे चोटी या शिखर के कवि होते । वाजपेयीजी ने स्वयं लिखा है-**''चोटी-एड़ी की बात मैं नहीं जानता, किन्तु इतना अवश्य है कि राजनीति ने मेरी काव्य रसधारा को अवरूद्ध किया है। मैं अपने कवि को मुश्किल से रख पाया हूं।''** सच बात तो यह है कि राजनीति के मंच पर एक पवित्र और निष्कलुष नेता के रूप में वाजपेयीजी अपना सार्थक और सटीक परिचय दे रहे हैं; उसके मूल में उनके कवि व्यक्तित्व की भूमिका ही मूलबद्ध है, क्योंकि कोई साहित्यकार जब राजनीति करता है तो राजनीति क्षेत्र में उनकी परिष्कृत और पवित्र चेतना लोगों को कायल कर देती है। साहित्यकार(कवि) मूल रूप से संवेदनशील प्राणी होता है जिसमें भावुकता की तरलता होती है। ऐसा व्यक्ति छल-प्रपंच, मायाजाल और धोखे के कुत्सित विचारों के कुसंस्कारों से अपने आप को अलग रखता है। आज की भ्रष्ट राजनीति के परिवेश की आंधी में राजनेता वाजपेयीजी का निष्कलुष व्यक्तित्व जो निर्वात दीप-शिखा की भांति पवित्र आलोक किरण की सृष्टि कर रहा है, उसके मूल में बस यही एकमात्र कारण है कि वाजपेयी जी मूल रूप से एक कवि हैं। इस संदर्भ में वाजपेयी जी ने स्वयं लिखा है कि ''जब कोई साहित्यकार राजनीति करेगा तो वह अधिक परिष्कृत होगी। यदि राजनेता की पृष्ठभूमि साहित्यिक है तो वह मानवीय संवदेनाओं को नकार नहीं सकता । कहीं कोई कवि यदि डिक्टेटर बन जाए तो वह निर्दोषों के खून से अपने हाथ नहीं रंगेगा। तानाशाही में क्रूरता इसलिए आती है कि वे संवेदनाहीन हो जाते हैं। एक साहित्यकार का हृदय दया, करुणा, क्षमा और प्रेम से आपूरित रहता है। इसलिए खून की होली वह नहीं खेल सकता।''

कविता और वाजपेयी जी का सम्बन्ध जन्मजात है। इनके पिता पं. कृष्ण बिहारी वाजपेयी ग्वालियर रियासत के अपने जमाने के जानेमाने कवियों में थे। वे ब्रजभाषा और खड़ी बोली दोनों में लिखते थे। उनकी लिखी 'ईश्वर प्रार्थना' रियासत के सभी विद्यालयों में सामूहिक रूप से गायी जाती थी। पितामह पं. श्यामलाल वाजपेयी यद्यपि स्वयं कवि नहीं थे, किन्तु संस्कृत और हिन्दी दोनों भाषाओं के काव्य-साहित्य में उनकी गहरी रूचि थी। दोनों भाषाओं के सैकड़ों छन्द उन्हें कंठस्थ थे और बातचीत में उन्हें उद्धृत करते रहते थे। अतः यह बात निर्विवाद है कि वाजपेयी जी का कवि व्यक्तित्व उनके तमाम व्यक्तित्वों की अपेक्षा ज्यादा सबल, सप्राण एवं सचेतन है। वाजपेयी जी के समग्र ओर सम्पूर्ण चारित्रिक उत्कर्ष की अट्टालिका की नींव उनका कवि व्यक्तित्व ही है।

आज सर्वत्र पिछले कई दशकों से उनके भाषणों की जो धूम मची हुई है, उसके एक-एक शब्द में उनके कवि व्यक्तित्व की स्पष्ट छाप दिखलाई पड़ती है। वस्तुतः अटलजी की मुख -गंगोत्री से उनके भाषणों की जो पयस्विनी फूटती है और उसमें संगीत की जो मधुर लहरी सुनाई पड़ती है, उसका मूल श्रेय उनके कवि व्यक्तित्व को जाता है। वाजपेयी जी की काव्योचित सरलता इन पंक्तियों में झलकती है। "जब मैं राजनीति में आया, मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि मैं एम.पी. बनूंगा। मैं पत्रकार था । जिस तरह की राजनीति चल रही है, वह मुझे रास नहीं आती। मैं छोड़ना चाहता हूं, मगर राजनीति मुझे छोड़ती नहीं। फिर मैं विरोधी दल का नेता हुआ, आज प्रधानमंत्री हूं। थोड़ी देर बाद प्रधानमंत्री नहीं रहूंगा। प्रधानमंत्री बनते समय मेरा हृदय आनन्द से उछलने लगा हो, ऐसा नहीं हुआ। अब जब मैं सब कुछ छोड़कर चला जाऊंगा, तब भी मेरे मन में किसी तरह की ग्लानि होगी, ऐसा होने वाला नहीं है।''

सम्पर्क : सकरवार टोला, मोकामा, पटना ☒

अली सरदार जाफरी -- एक संक्षिप्त परिचय

✍ डॉ॰ शाहिद जमील

आने वाली नस्लें मुझको भूल सकें नामुमकिन है

नक्शे कदम के मिटते-मिटते राहगुजार बन जाएंगे (रम्ज अजीमाबादी)

सैयद जाफर के मन-मस्तिष्क में उस वक्त शायद ही यह विचार आया हो कि उनकी पत्नी ने 29 नवम्बर, सन् 1913 ई॰ को बलरामपुर, गोण्डा, उत्तर-प्रदेश में जिस बालक को जन्म दिया है, वह (अली सरदार जाफरी) अत्यंत प्रतिभाशाली, कवि-हृदय, तेजस्वी, देश-प्रमी और आकर्षक व्यक्तित्व का मालिक होगा तथा साहित्य-आकाश से सूर्य की भांति विचार-रश्मि बिखेर कर देश-कुल का सम्मान-गौरव बढ़ाएगा। - जाहिदा खातून जाफरी ने अली सरदार जाफरी के अतिरिक्त सात बेटियों, जूवैदा खातून, जाफरी खातून, फखरन निसा, सादिका खातून, कमरुन निसा, रुबाब बानो एवं शहर बानों, और एक बेटा (जफर अब्बास मेंहदी) को जन्म दिया।

अली सरदार जाफरी की शिक्षा-दीक्षा परम्परा के अनुरूप ही हुई। प्राथमिक शिक्षा के बाद उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय से बी॰ ए॰ और लखनऊ विश्वविद्यालय से एम॰ ए॰ की उपाधि प्राप्त की, परन्तु वह एल॰ एल॰ बी॰ न कर सके।

सन् 1931 ई॰ में युद्ध-विरोधी कविता लिखने के कारण पहली बार कैद हुए। सन् 1936 ई॰ में अंग्रेजों के विरूद्ध राजनीतिक गति-विधि के जुर्म में मुस्लिम युनिवर्सिटी, अलीगढ़ से उन्हें निकलना पड़ा। सन् 1940 ई॰ में शायरी से युद्ध-विरोधी प्रचार करने के सबब मुख्य परीक्षा में शामिल नहीं होने दिया गया और उन्हें गिरफ्तार करके जेल भेजा गया। इतना ही नहीं, कैद से रिहाई के बाद भी वह बलरामपुर में नजरबन्द रहें।

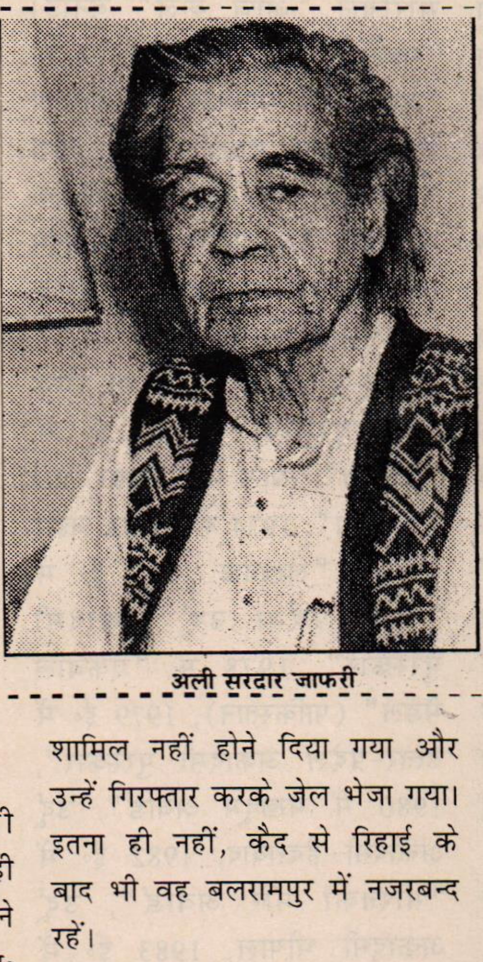

अली सरदार जाफरी

अली सरदार जाफरी ने बम्बई में सन् 1948 ई॰ में सुलताना मिन्हाज से शादी की। सुलताना मिन्हाजा ने दो बेटे अजली नाजिम जाफरी एवं अली हिकमत जाफरी और एक बेटी दुरदाना जोया को जन्म दिया।

अली सरदार जाफरी ने मानव एवं साहित्य-सेवा को ही मुख्य जीवन-उद्देश्य बनाया और जीवन-निर्वाह हेतु टी॰ वी॰, रेडियों और फिल्मों से सम्बद्ध रहे। उनहोंने कभी सरकारी सेवा करना स्वीकार नहीं किया।

सन् 1938 ई॰ में "मंजिल" (कहानी-संग्रह),1943 ई॰ में "परवाज" (कविताएं), "यह किस का लहू है" (नाटक), "प्यार" (नाटक), 1948 ई॰ में "नई दुनिया को सलाम" (लम्बी कविता), 1949 ई॰ में "खून की लकीर" (लम्बी कविताएँ), 1950 ई॰ में "अम्न का सितारा" (लम्बी कविताएँ), "एशिया जाग उठा" (लम्बी कविता), 1953 ई॰ में "तरक्की पसन्द अदब (आलोचना), "पत्थर की दीवार" (कविताएँ, 1962 ई॰ में "लखनऊ की पाँच रातें" (गद्य), 1964 ई॰ में "एक खाब और" (कविताएँ, 1965 ई॰ में "पैराहने शरर" (कविताएँ), 1969 ई॰ में "गालिब एण्ड हिज पोएट्री" (कुर्रतुलरेन हैदर के सहयोग से (1970 ई॰ में " पैगम्बराने सुखन" कबीर, मीर और गालिब पर समालोचना), 1977 ई॰ में "एकबाल अन्सारी" (आलोचना),

1978 ई० में "लहू पुकारता है" (कविताएँ), "तरक्की पसन्द अदब की निस्फ सदी (निजाम उर्दू व्याख्यान, दिल्ली विश्वविद्यालय) और "सरमाया-ए सुखन (प्रकाशनाधीन) के अरिरिक्त साहित्य, संस्कृति और राजनीति विषयक उर्दू एवं अंग्रेजी के विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में अनेक लेखादि प्रकाशित हुए हैं।

अली सरदार जाफरी ने "दीवाने गालिब," दीवाने मीर", "कबीर बानी" एवं "प्रेम-वाणी" का सम्पादन-संकलन किया "नया अदब", "गुफ्तगू" तथा "हिन्दुस्तानी बुक ट्रस्ट" के सम्पादक "किताब नुमा" के अतिथि सम्पादक और "कौमी जंग" के सम्पादक मण्डल के सदस्य रहें।

अली सरदार जाफरी की चुनिन्दा कविताओं के रूसी, अजबुक और फारसी लिपि में अनुवाद हो चुके हैं। कतिपय अंग्रेजी, फ्रांसिसी, अरबी एवं विभिन्न भारतीय भाषाओं में अनूदित हुई। "अम्न का सितारा" बारह भारतीय भाषाओं में अनूदित हुई और "नई दुनिया को सलाम" कविता को नेशनल बुक ट्रस्ट ने चौदह भाषाओं में अनुवाद हेतु चुना है, अब तक कई भाषाओं में हुए अनुवाद प्रकाशित हो चुके हैं।

अली सरदार जाफरी प्रगतिशील आन्दोलन के अग्रणी नायक, कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यकर्ता, अंजुमन तरक्की पसन्द मुस्ननेफीन के सदस्य और कांग्रेस से भी उनकी वैचारिक सम्बद्धता रही।

अली सरदार जाफरी के दस्तावेजी फिल्में "फिर बोलो! ऐ संत कबीर," "डॉ० मोहम्मद एकबाल", हिन्दुस्तान हमारा" आजादी के सौ साल" की कहानी और डायलॉग लिखे तथा " आजादी के सौ साल" का निर्देशन भी किया। टी० वी० सीरीयल "महफिले यारा" के पाँच वर्ष तक निर्माता रहे। 18 एपिसोड पर आधारित सीरीयल "आज कल" बनाई। "महफिले यारा" की तर्ज पर ही "कहकशा" सीरियल का निर्माण किया, जिसमें हसरत मोहानी, जोश मलीहाबादी, जिगर मुरादाबादी, फिराक गोरखपुरी, फैज, अहमद फैज, मखदूम मोहीउद्दीन और असरारूल हक मजाज पर एपिसोड-निर्मित हुए।

सन् 1995 में "सोवियत लैण्ड नेहरू पुरस्कार" 1967 ई० में "पद्मश्री", 1969 में "जवाहर लाल फेलोशिम", 1974 में सज्जाद जहीर पुरस्कार "लखनऊ 1977 ई० में "उत्तर-प्रदेश उर्दू अकादमी पुरस्कार", 1978 में "एकबाल मैडल" (पाकिस्तान), 1979 ई० में उत्तर-प्रदेश अकादमी पुरस्कार", 1980 में मखदूम अवार्ड", उर्दू अकादमी हैदराबाद, 1982 ई० में "मीरतकी मीर अवार्ड", उर्दू अकादमी भोपाल, 1983 ई० में "कुमारन आसान अवार्ड" (मलयालम), 1984 ई० में "हिन्द-रूस दोस्ती मैडल", 1986 ई० मुस्लिम युनिर्सिटी, अलीगढ़ ने "डी० लिट" की मानद उपाधि प्रदान की, 1986 ई० में ही मध्यप्रदेश सरकार ने "एकबाल सम्मान" प्रदान किया , 1987 में "फैज अहमद फैज अवार्ड" 1997 ई० में बिहार सरकार, राजभाषा विभाग ने द्वितीय राजभाषा (उर्दू) का "मौलाना मजरूल हक शिखर सम्मान-पुरस्कार" और 1998 ई० में "ज्ञानपीठ पुरस्कार" प्रदान किये गये।

अली सरदार जाफरी बम्बई विश्वविद्यालय के सिनेट सदस्य, जम्मू विश्वविद्याालय के विजिटिंग प्रोफेसर, महासचिव, अखिल भारतीय एकबाल शताब्दी समिति, अध्यक्ष, अंजुमन तरक्की पसन्द मुस्नेनफीन (उर्दू), सदस्य नेशनल बुक ट्रस्ट, मानद निर्माता अकाशवाणी और दूरदर्शन, अध्यक्ष, फिल्म राईटर्ज एसोसिएशन, बम्बई, निदेशक, महाराष्ट्र उर्दू अकादमी और गुजरात कमिटि रिपोर्ट के कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष रहे।

अली सरदार जाफरी का निधन अगस्त सन् 2000 को हुआ।

हैं दिन बदमजाकी के नौशाद लेकिन

अभी तेरे फल के दीवाने बहुत हैं

सम्पर्क : राजभाषा विभाग
पुराना सचिवालय बैरक
बिहार सरकार, पटना-1 ☒

डॉ॰ बालशौरि रेड्डी : एक अप्रतिम पुरूष

✍ डॉ॰ महेन्द्र कार्त्तिकेय

डॉ॰ बालशौरि रेड्डी के नाम से मैं तब से परिचित हूं जब मैंने उनकी पुस्तक "तेलगू साहित्य पढ़ी थी, लगभग चालीस वर्ष पहले 1960 में। उस समय मैं इलाहाबाद में था और दिनकर पुस्कालय में पुस्तकें पढ़ता था। भारतीय इतिहास और साहित्य में विशेष रूचि होने के कारण भी डॉ॰ बालशौरि रेड्डी की "तेलुगू साहित्य की रूपरेखा" के प्रति आकृष्ट हुआ। उस पुस्तक की सर्जनात्मक सूचना और भाषा सौष्ठव से तभी से अभिभूत हूं और वह प्रथम पुस्तकीय परिचय उनके रचनात्मक के प्रति ऐसी आस्था बना चुका है कि जब भी दक्षिण भारत से किसी हिन्दी रचनाकार के बारे में सोचते हैं, तो सबसे पहले डॉ॰ बालशौरि रेड्डी का नाम ही मन आकाश में चमकता है। पता नहीं क्या बात है कि डॉ॰ बालशौरि रेड्डी के स्तर का एक सृजनात्मक रचनाकार दक्षिण में अभी तक बीसवीं शती में नहीं हुआ। वैसे दक्षिण में हिन्दी विद्वानों की बड़ी लम्बी कतार है और उनके आलोचनात्मक कृतित्व की छवि पूरे देश में हैं, पर डॉ॰ बालशौरि रेड्डी जैसा कथाकार, निबंधकार, और बालसाहित्य के क्षेत्र में विपुल रचना प्रदान करने वाला कोई अन्य नहीं है। शायद इसीलिए किसी ने डॉ॰ बालशौरि रेड्डी का "दक्षिण" का प्रेमचंद : बालशौरि रेड्डी" कहा है। जो अपने पूरे परिप्रेक्ष्य में गलत भी नहीं है।

डॉ॰ बालशौरि रेड्डी से मेरा व्यक्तिगत परिचय बहुत बाद में हुआ। शायद 1998 में इन्दौर में अंग्रेजी हटाओ सम्मेलन में, जिसमें पांच मुख्यमंत्री और कई केन्द्रीय मंत्री तथा पूरे भारत से प्रतिनिधि आये थे। उसमें दक्षिण से काफी बड़ी प्रतिनिधि मंडल आया था और उसमें डॉ॰ बालशौरि रेड्डी भी थे। उस समय डॉ॰ बालशौरि रेड्डी "चन्दामामा" के हिन्दी संस्करण के सम्पादक थे और मैं "चन्दामामा" का एक नियमित पाठक था। डॉ॰ बालशौरि रेड्डी से प्रथम परिचय में ऐसा नहीं लगा कि मैं उनसे पहली बार मिल रहा हूं। ऐसा लगा कि जैसा मैं उन्हें अर्से से जानता हूं। प्रथम परिचय में बड़ी आत्मीयता बनी और पूरे अधिवेशन में हम आपस में खूब बतियाये। इन्दौर से लौटने के बाद मेरी डायरी में उनका पता और फोन नंबर स्थायी रूप से टंक गया।

फिर उनसे साक्षात्कार कई वर्ष बाद हुआ। वैसे मैं उन्हें लगातार दो तीन वष समकाजीन साहित्य सम्मेलन यके अधिवेशन में निमंत्रित करता रहा। लेकिन वह किन्हीं अपरिहार्य कारणें से नहीं आ सके। इस बीच श्री गोविन्द मिश्र जब मुबंई से अंडमान निकोबार गये और लौटते हुए मद्रास रुके तो उनसे रेड्डी जी मुलाकात हुई। मैं भी 1980 में अंडमान निकोबार एक सम्मेलन में भाग लेने गया और लौटते हुए मद्रास रूका भी। लेकिन मेरी मुलाकात नहीं हो सकी।

हमारी मुलाकात 1992 में ऊटी में एक सम्मेलन के दौरान हुई। उस समय तक डॉ॰ बालशौरि रेड्डी "चन्दामामा" के सम्पादन की जिम्मेदारी से मुक्त हो गये थे और भारतीय भाषा परिषद के निदेशक के तौर पर कलकत्ता चले गये थे। तीन दिनों तक ऊँटी में उनसे सत्संग रहा और उनके आंतरिक आत्मीय क्षणों का परिचय मिला। वहीं उन्होंने कहा कि "इस बार समकालीन साहित्य सम्मेलन में मैं अवश्य आऊंगा"। इसी

वर्ष समकालीन साहित्य सम्मेलन का एक अधिवेशन दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के संयुक्त तत्वाधान में सम्भव हुआ, जिसमें भाग लेने वह कलकत्ता से आये और हमारे साथ रहे और कलकत्ता में भारतीय भाषा परिषद के सहयोग से सम्मेलन करने का आह्वान कर गये। मेरा पिछले चालीस वर्ष का अनुभव है कि सामान्यत: साहित्यकार सामाजिक परिवर्तन से लेकर मूल्यों आदि की बड़ी-बड़ी बातें तो करता है, लेकिन ऐसा कोई काम नहीं करता, जो समाज के लिए उपयोगी हो। पिछले पच्चीस वर्षों से पूरे देश में समकालीन साहित्य सम्मेलन का आयोजन किया गया है। लेकिन सम्मेलन के आयोजन में सक्रिय भूमिका निभाने वाले साहित्यकारों की संख्या 10 प्रतिशत भी नहीं है। इस माने में बालशौरि रेड्डी एक समर्पित व्यक्ति है और उनके सहयोग से मैं दो अधिवेशन करने में सफल हुआ है। थाली, गिलास, कटोरी का जो खर्च हुआ वह व्यर्थ गया। इस बात के लिए मुझे उलाहना भी दी गयी कि जब वे नहीं आने वाले थे, तो उन्हें पूर्व सूचना देनी चाहिए थी। साहित्यकार मित्रों ने तो अपने आगमन की पूरी सूचना दी थी, जैने गाड़ी का नाम, शयनयान का क्रम, सीट क्र॰ आदि और उन्हें लेने मैं और मेरे पुत्र स्टेशन जाते थे और खाली कार लेकर लौट आते थे। डॉ॰ बालशौरि रेड्डी भी नहीं आ पाये थे और उन्होंने भी किसी असावधानीवश अपने न आने की सूचन नहीं दी थी। अत: मैंने ऐसे सभी मित्रों को बहुत बड़ी चिट्ठी लिखी थी। एक मित्र ने तो मुझे फोन कर "असभ्य आदि भला बुरा भी कहा और मैत्री सम्बन्धी लगभग टूट ही गया और डॉ॰ गंगा प्रसाद विमल आदि मित्रों ने भी बुरा माना और डॉ॰ बालशौरि रेड्डी भी बहुत रूठ गये। लेकिन उनकी नाराजी बहुत दिन तक स्थिर नहीं रही।

संभवत: भुसावल सम्मेलन के बाद ही मैं अस्व्स्थ होकर सधन चिकित्सा कक्ष में तीन दिर रहा और कुल दस दिन अस्पताल रह कर घर आया, तो तिरूपति विश्वविद्यालय में निराला जयंती के लिए निमंत्रण मिला। मैं तिरूपति दर्शन का लाभ रोक नहीं पाया और मैं चि॰ वैभव के साथ तिरूपति गया। वहाँ के संयोजकों से मालूम हुआ कि यहाँ डॉ॰ बालशौरि रेड्डी आने वाले नहीं हैं। वह तो तिरूपति से चि॰ वैभव चेन्नै गये और डॉ॰ बालशौरि रेड्डी से मिलने उनके घर गये और तक चि॰ वैभव से डॉ॰ बालशौरि रेड्डी ने अपना आहत होना प्रगट किया। और फिर मुझसे मिलने तिरूपति भी आये और आते ही मुझे ह्रदय से लगा लिया। अपनी नाराजगी भी प्रकट की। डॉ॰ बालशौरि रेड्डी की यह विशेषता है कि वह अत्यन्त उदार है और मित्रता में कोई दुर्व्यवहार को बाधा नहीं बनने देते हैं।

डॉ॰ बालशौरि रेड्डी के साथ इलाहाबाद, उदयपुर, तिरूपति, त्रिवेन्द्रम आदि अनेक स्थानों पर साथ-साथ रहने का अवसर मिला। इसमें कोई शक नहीं है कि वह अपने 12 उपन्यास, अनेक अनुवाद, असंख्य बाल कथाओं के साथ वह न सिर्फ महान रचनाकार है, बल्कि वह महान पुरूष भी हैं। वह मित्रता का निर्वाह करना जानते है और अपने स्वाभिमान को मित्रता बनाये रखने के लिए बहुत लचीला रखते है। जिसके फलस्वरूप ही जीवन के हर क्षेत्र में उनके असंख्य मित्र और शभेच्छु हैं। ☒

सम्पर्क: ए-27 गैनन डंसली फ्लैट, 168/169 सी॰ एस॰ टी॰ रोड सलीना, मुम्बई

पारम्परिक मूल्यों के प्रति युवा पीढ़ी का दृष्टिकोण

✍ अमरनाथ "अमर"

बहुत ही महत्वपूर्ण और प्रासंगिक विषय है –"पारम्परिक मूल्यों के प्रति युवा पीढ़ी का दृष्टिकोण" आज के संदर्भ में। पाम्परिक मूल्य जब समीक्षा के पड़ाव पर ठहर कर कुछ सोचने पर मजबूर करे तो विषय स्वत: गहरा हो जाता है।

यह समीक्षा हम बाद में करेंगे कि आज के युवाओं की दृष्टि क्या है? फिर दृष्टिकोण क्या है? और फिर तब पारम्परिक मूल्यों के प्रति उनका दृष्टिकोण क्या है? मुख्य विषय है कि आखिर यह मूल्य है क्या? अर्थात जीवन मूल्य क्या है? जीवन मूल्य वह धारा है जो मनुष्य को मनुष्य बनाती है। जीवन मूल्य अर्थात् सद्विचार, सद्बुद्धि, सद्व्यवहार, सदाचरण, सहिषणुता, अनुशासन, मर्यादित भावना और सुसंस्कृत कर्म और कर्मनिष्ठा। जीवन मूल्य का सम्बन्ध विचार से है और विचार का कर्म से। यही जीवन मूल्य संस्कृति को जन्म देता है उसे परीष्क्कृत कराता है और सुख-समृद्धि का मार्ग खोलता है। यही मूल्य जीवन को परिष्कार देता है, मनुष्यता का स्पर्श देता है और तभी हमारी संस्कृति "बहुजन हिताय-बहुजन सुखाय", "वसुधैव कुटुम्बकम" और "सत्यम-शिवम-सुन्दरम" की संस्कृति बन जाती है जिसका मूल उद्देश्य होता है मानव कल्याण। यह जीवन मूल्य ही सबका मूल स्त्रोत है।

आज के संदर्भ में युवा पीढ़ी का पारम्परिक मूल्यों के प्रति दृष्टिकोण जानने के पूर्व यह विचार करना जरूरी है कि युवा मूल्यों को जानते-समझते भी है या नहीं? भौतिक जीवन की आपाधापी में यह जीवन मूल्य जितनी तेजी से बिखरता जा रहा है उसे देख घोर चिन्ता होती है। मूल्यों में भी पारम्परिक मूल्यों के प्रति दृष्टिकोण! यानी हमें अतीत के प्रागंण से गुजरते हुए वर्तमान के आँगन तक झाँकना होगा।

पाम्परिक मूल्य से मतलब है वो मूल्य जो सदियों से सामाजिक, पारिवारिक जीवन में चलते आ रहे हैं निष्ठा और भावना के साथ। ये पाम्परिक मूल्य ही इतिहास रचते हैं। ये मूल्य ही इतिहास की धारा में बुद्ध और गाँधी पैदा करते हैं जो देश काल और इतिहास की धारा मोड़ देते हैं, जो सम्पूर्ण वाण्मय को नयी परिभाषा देते हैं। पाम्परिक मूल्य के इतिहास पर दृष्टि डाली जाये तोमूल्य उसी दिन जुड़ गए थे जब से सृष्टि हुयी। मैं पूरे विश्व या ब्रह्माण्ड के परिप्रेक्ष्य में न देखते हुए सिर्फ भारतीय परिवेश और सीमा रेखा के अन्तर्गत आने वाले पारम्परिक जीवन मूल्यों की चर्चा करूंगा।

जीवन मूल्य स्वयं में बहुत ही गूढ़ और गहन विषय है। इनकी परम्परा के विषय में विद्वानों के अपने-अपने अलग-अलग विचार हैं। एक हद तक इसे वैदिक और पौराणिक काल से जोड़ा जा सकता है। वेद के साथ ही जीवन मूल्य स्वत: स्थापित हो गए थे क्योंकि देव मूल्यों की ही बात करते हैं। यह मूल्य एक पक्षीय नहीं है। इसकी मूल धारा में अनेक धाराऐं समाहित हैं। जीवन? रिश्ते-नाते सम्बन्ध, साहित्य, कला, संगीत, इतिहास, यौवन, प्रेम-प्यार, शादी ब्याह, लावण्य सेक्स, विज्ञान, समाज और राष्ट्र सभी के मूल्य हैं - अपने मूल्य हैं जो सम्पूर्ण जीवन मूल्य को एक साथ प्रभावित करते हैं - अपनी, अपनी मर्यादाओं के दायरे में। तभी मनुष्य-मनुष्य बना और बनता आया है। क्या आज के युवाओं में इन पारम्परिक मूल्यों को देखने की दृष्टि है? ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में पारम्परिक मूल्यों की समीक्षा करने के पूर्व इन पर दृष्टि तो डालनी ही पड़ेगी। वेद ने प्रकृति की परिभाषा दी, मनुष्य को प्रकृति के करीब किया, संगीत को जीवन से जोड़ा और कला से जीवन को सुवासित किया। इतिहास तो स्वत: बनता गया।

रामकालीन भारत में जीवन मूल्य का आधार था - मर्यादा। तभी राम मर्यादा पुरूषोत्तम कहलाए। यानी पुरूषों में उत्तम। और यह उत्तम वही हो सकता है जिसमें जीवन मूल्य तक गहराई तक बसा हो। चिंतन -मनन, व्यवहार और कर्म में बसा हो। तभी तो तुलसीदास ने कहा -

"परहित सरस धरम नहीं भाई
पर पीड़ा सम नहीं अधमाई"

जीवन मूल्य की इससे बड़ी बात और क्या होगी। माता-पिता के प्रति कर्त्तव्य, भाइ के प्रति स्नेह, समाज के प्रति अनुराग, राष्ट्र के प्रति निष्ठा, असत्य के प्रति कठोर और सत्य के प्रति त्याग। ये जीवन मूल्य थे राम के। राम ने माता कैकेई और भाई भरत के लिए राज्य का त्याग किया। सत्य की निष्ठा के लिए अधर्मी रावण का नाश किया। ये जीवन मूल्य की ही तो बात थी जो उनका राज "राम राज्य" कहलाया यानी वह राज्य जहाँ के मनुष्यों में मनुष्रूता हो। आपस में सहिष्णुता हो, जीवन में मर्यादा हो और सुख शांति का सवेरा हो। यह सब जीवन मूल्य की देन थी। सीता रावण के कैद में थी। रावण जब भी आता वो धरती से एक दूब का तिनका उठाकर अपनी आँखों के सामने रख लेती। टीकाकारों और आलोचकों ने इसकी समीक्षा की।

निष्कर्ष निकला कि सीता का जन्म गर्भ से हुआ था और दूब भी धरती से उत्पन्न है। अत: सीता और दूब भाई-बहन हुए। अर्थात अधर्मी रावण के समक्ष एक बहन अपने भाई को अपने सामने रखती थी। इससे बड़ी सुरक्षा की बात और क्या हो सकती थी? यह अन्तर्भावना ही जीवन मूल्य था जो भारतीय नारी का जीवन दर्पण था। त्याग, ममता स्नेह का मूल्य ही नारियों की "जगत जननी" से अलंकृत किया। आज के आधुनिक परिवेश में युवाओं ही नहीं युवतियों के दृष्टिकोण को भी जानना होगा पारम्परिक मूल्यों के प्रति।

भारत कभी आक्रमणकारी नहीं था। बौद्ध धर्म चीन गया तो आक्रमणकारी के रूप में नहीं मानव कल्याण के लिए। यह उस वक्त का जीवन मूल्य था। इंडोनेशिया में चौराहों पर धनुष लिए राम की मूर्तियाँ स्थापित हैं। लेकिन आक्रमणकारी के रूप में नहीं, असत्य पर सत्य की, अधर्म पर धर्म की जीत के प्रतीक के रूप में। यह है पारम्परिक मूल्य का एक स्वरूप। यही मूल्य सदियों से चलते-चलते परिवार, समाज, राष्ट्र की धारा में समाहित होते हुए आज भी हमारे समक्ष हैं जिन्हें समझने जानने के लिए हमारे पास दृष्टि नहीं है। जीवन मूल्य की परिभाषा उदाहरण जीवन के हर पक्ष में हैं, उसे देखने की सिर्फ दृष्टि की कमी है।

रामायण के बाद महाभारत ने जीवन मूल्यों के कई रूप को देखा। मूल्यों की धारा में छल-कपट और धुर्तता की गंदगी भी प्रकाशित हुई। जिसे देश काल, परिस्थिति और इतिहास ने भोगा।

पारम्परिक जीवन मूल्य के प्रतीक रहे शिव, कृष्ण, सरस्वती। शिव ने जन कल्याण के लिए विषपान किया। यह "स्व" से "सर्व" का जीवन मूल्य था। कृष्ण की बांसुरी के जीवन के संगीत की मधुरता दी, जीवन की संगीत मय किया। यह उनका जीवन मूल्य था। सरस्वती की वीणा ने संगीत को शिक्षा, संस्कार, ज्ञान, विज्ञान और साहित्य से मंडित किया। वह उनका मूल्य था। बुद्ध ने "स्व" से "सर्व" की नई परिभाषा गढ़ी। मानव कल्याण को विश्वस्तरीय बनाया। सत्य और धर्म को कल्याणकारी बनाया। यह उनका जीवन मूल्य था। गाँधी ने राजनीति को मर्यादित किया। सत्य, अहिंसा, सहिष्णुता की नई परिभाषा गढ़ी और परतंत्रता के घुप्प अंधेरे को चीरते हुए स्वतंत्रता की रोशनी को बिखेरा। यह उनका जीवन मूल्य था। जिसने एक राष्ट्र, समाज, परिवार, समय, इतिहास, वर्तमान और भविष्य को प्रभावित किया। यह उनका जीवन मूल्य था। रहीम ने कहा –

"रहिमन पानी राखिए बिन पानी सब सून
पानी गए न उबरे मोती मानूस पून"

तो यही रहीम का जीवन का मूल्य था। – सबके लिए कबीर ने कहा –

"कबीरा खड़ा बाजार में लियो लुकाढी हाथ
जो घर फूंके आपना, चलो हमारे साथ"

तो यह कबीर का जीवन का मूल्य था – सबके लिए कविवर टैगौर ने जब कहा –

"यदि तुमार डाक सुने के ऊना आये
तोबे एकला चोलो रे तोबे एकला चोलोरे"

तो यह टैगोर का जीवन मूल्य था।

शिकागो (अमेरिका) में जब विवेकानन्द ने कहा –

"मैं मंदिर में जाकर पूजा करूंगा, मैं मस्जिद में जाकर घुटने टेकूंगा, मैं चर्च में जाकर सर झुकाऊंगा और मैं इतना ही नहीं करूंगा भविष्य में जितने भी धर्म आऐंगे उनके स्वागत के लिए भी तैयार रहूंगा।"

तो यह स्वामी विवेकानन्द का जीवन मूल्य था। सरदार भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद, अब्दुल हमीद, झांसी की रानी, कुंवर सिंह, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस आदि सपूतों ने देश की स्वतंत्रता के लिए अपना जीवन अपर्ण किया तो यह उनका जीवन मूल्य था। सबके लिए।

यानी वैदिक काल से स्वतंत्र भारत एक जीवन मूल्य परम्परा के रूप में, विरासत के रूप में मिलते आए हैं। तुलसी, रहीम, कबीर, वेदव्यास, बाल्मीकि, मीरा, टैगौर, मुंशी प्रेमचन्द, निराला, पंत, दिनकर आदि कवियों ने इन जीवन मूल्यों को हमारे करीब रखा, इनकी मीमांसा के लिए, समीक्षा के लिए, अपनाने के लिए, व्यवहार में ढालने के लिए कर्म में परिवर्तन के लिए। कोई भी व्यक्ति, परिवार, समाज या राष्ट्र इन जीवन मूल्यों के बिना जीवित नहीं सकता।

यह तो एक संदर्भ हुआ पारम्परिक मूल्यों के स्वरूप का।

अब मुख्य विषय है, कि इन पारम्परिक मूल्यों के प्रति आज के युवाओं का दृष्टिकोण क्या है? थोड़ा इन युवाओं के जीवन को भी तो झांक लें कि इनकी दृष्टि कहाँ तक जाती है? जरा समीक्षा तो कर लें कि इनके मूल्यों का प्रतीक स्वामी विवेकानन्द हैं या माइकल जैक्सन? शुद्ध वैचारिक, पारिवारिक, त्यागम दृष्टिकोण है या विशुद्ध स्वार्थी भौतिकवादी? त्याग से पूरे समाज को प्रभावित करने की उत्कंठा है या अपने व्यक्तिगत स्वार्थ के दायरे में अपने लिए भोग लेने की चाहत? बहुत बड़ा प्रश्न है। जीवन की मर्यादाऐं स्वतंत्रता प्राप्ति तक बहुत गहरा थीं। लेकिन स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद तो जैसे सब कुछ ठहराता ही चला गया। राजनीति भ्रष्ट हुयी तो राजनीति का जीवन मूल्य भी ध्वस्त होता चला गया। आपराधियों, और भ्रष्टाचारियों से राजनीति कुंठित होती गई जिसे सबसे स्वच्छ और परिष्कृत होना था। शिक्षा के मापदण्ड बदले। अंग्रेजों की अंग्रेजियत ने तो भारतीय दर्शन को ही झकझोर कर रख दिया। शिक्षा बिखरने लगा, परिवार टूटने लगे, दामपत्य जीवन को दीमक लगने लगा। पौरूष शौर्य

से निकल कर कमर की लोच पर आकर लुढ़क गया। खुजराहों का जीवन दर्शन भौडी नग्नता पर उतर गया। कितनी गिरावट आयी। राष्ट्रीय एकता, अखण्डता, भाईचारे को चुनौतियाँ मिलने लगी। खंड-खंड हो जाने की प्रवृति बढ़ने लगी। आतंकवाद का जन्म इन्हीं जीवन मूल्यों के ह्रास का परिणाम है। जीवन मूल्य ही संस्कृति, जीवन और राष्ट्र को गढ़ते हैं। लेकिन आज तो जीवन मूल्य ही बिखरता जा रहा है। शिव का नृत्य, भरत नाटयम, कुचीपुड़ी, कत्थक, मणिपुरी, कत्थककली की लोच की जगह माइकल जैक्शन और मैडोना की थिरकन आ गई। जहाँ न मूल्य है न परिभाषा, जीवन दर्शन। भारतीय पारम्परिक जीवन मूल्य वैज्ञानिक है। उसमें गहराई है चिंतन है, साहित्य, कला, संगीत और जीवन दर्शन हैं। लेकिन आज की पीढ़ि क्या समझती है इसे ? फिर क्यों बिखर रहा है समाज ? क्यों टूट रहा है परिवार ? क्यों विखण्डित हो रहा है राष्ट्र ? इसीलिए की आज के युवाओं में पारम्परिक मूल्यों को जानने की न तो दृष्टि है न चाहत। एक भौंडी नकल (पश्चिमी नकल) के आगोश में सिमटता जा रहा है युवा वर्ग ? क्या होगा राष्ट्र का ? जिस देश का जीवन मूल्य ही टूट जाये वह राष्ट्र अपने अस्तित्व को कैसे बचा कर रखेगा ?

यह निष्कर्ष सत्य है कि पारम्परिक मूल्यों के प्रति युवाओं का दृष्टिकोण गलत है। आज के युवा पारम्परिक मूल्यों को पिछड़ेपन के रूप में देखते हैं। तो यह मूल्यों का पिछड़ेपन नहीं है। उनकी दृष्टि का पिछड़ापन और दिवालियापन है।

फिर आज के संदर्भ में इस सोच को बदलना होगा। स्वामी विवेकानन्द से बड़ा आधुनिक कौन हो सकता है ? कबीर ने बड़ा आधुनिक कौन हो सकता है ? आज हम तथाकथित आधुनिक धर्म और जाति के नाम पर लड़ रहे हैं। वहीं कबीर ने कहा-

"पाहान पूजे हरी मिलें तो मैं पूजू पहाड़
तेते ये चक्की भली पीस खाए संसार"

तो कबीर से आधुनिक कौन हो सकता है ? और कबीर सच्चे मायने में आधुनिक इसलिए थे क्योंकि उनमें जीवन मूल्य था और मूल्य से ही संस्कृति ही, जीवन है, समाज परिवार और राष्ट्र है।

आज के युवाओं की दृष्टि को आधुनिक करनी होगी। पश्चिमी नकल को आधुनिकता का जामा नहीं पहनाया जा सकता। मूल्य आते हैं संस्कार से, विचार से व्यवहार से अध्यात्म से।

निश्चित ही आज के युवाओं का पारम्परिक मूल्यों के प्रति दृष्टिकोण संतुलित नहीं है। तो फिर क्या इन युवाओं की दृष्टि को यूं ही भटकने के लिए छोड़ दिया जाय ? "स्व" को "सर्व" की बजाय "सर्व" से "स्व" की ओर भागते देखा जाय ? क्या "वासुधैव कुटुम्बकम", "बहुजन हिताय -बहुजन सुखाय" शेष है। "युवा मानसिकता अभी पूरी तरह खराब नहीं हुई है। उनमें अद्भ्य उत्साह है, भरपूर क्षमता है, दूर दृष्टि है, पराक्रम है, कर्मठता है। जरूरत है इन सबको पारम्परिक जीवन मूल्यों से जोड़ने की। यह काम हमारे राजनीतिक कर सकते हैं। राजनीति में आदर्श लाकर। यह काम हमारे शिक्षक कर सकते हैं - शिक्षा को जीवन मूल्यों से जोड़ कर। यह काम हमारे अभिभावक कर सकते हैं - पारिवारिक समाजिक जीवन के संस्कारों को परिमार्जित कर। और सबसे बड़ी चाहत तो युवाओं की ही होनी चाहिए कुछ नया कर गुजरने की तमन्ना लेकर। अभी भी शेष नहीं अपेक्षा बहुत है। स्वामी विवेकानन्द ने कहा भी तो था -

"उठो जागो और चल पड़ो तब तक जब तक मँजिल न मिल जाए"। और मँजिल की राह में, उबड़-खाबड़ पगडंडियों पर जीवन मूल्य की छाँव बहुत जरूरी है।

यहाँ दूरदर्शन की भी भूमिका और जिम्मेदारी बढ़ जाती है। सत्यम-शिवम-सुन्दरम् का प्रतीक चिन्ह ओढ़ने से काम नहीं चलेगा। इसे इसका अग्रदूत बनना होगा। संस्कृति का संवाहक और मूल्यों का संवाददाता बनना होगा। सिर्फ हमारा ही राष्ट्र है जो सदियों से रोशनी की बात करता आया है, रोशनी बिखेरी है और सबके जीवन को रोशनीमय किया है। यह सब जीवन मूल्यों के कारण संभव हुआ है। ऐसी बात नहीं कि समीक्षा के दायरे में पारम्परिक मूल्यों का अवलोकन नहीं होना चाहिए। इसकी समीक्षा सदैव होनी चाहिए। तभी तो यह और कल्याणकारी हो सकता है। लेकिन दृष्टि चौकन्नी, गहरी और पारदर्शी होनी चाहिए। सम्भाव संवेदना पर आधारित होनी चाहिए। आदर्श और आधुनिकता की कसौटी पर कसी होनी चाहिए।

हमारा महान राष्ट्र जीवन मूल्यों की भांति रहा है। पारम्परिक मूल्य ही क्यों युवाओं को तो जीवन मूल्य की नई परिभाषा गढ़नी चाहिए। तभी तो

**"संकल्प कर लिए तो संकल्प बन गए हम,
मरने के सब इरादे जीने के काम आए"**

अंततः इतना हो कि आज के युवाओं को पाम्परिक जीवन मूल्यों को आत्मसात करना चाहिए क्योंकि ये जीवन मूल्य वैज्ञानिक हैं, कल्याणकारी हैं। तभी हम हमारा परिवार, समाज और राष्ट्र सार्थक हैं। तभी "सत्यम शिवम् सुन्दरम्" "बहुजन हिताय -बहुजन सुखाय" सार्थक हैं।

जीवन मूल्य में ही जीवन की सार्थकता है चाहे मूल्य पारम्परिक हों या तात्कालिक। (इस निबंध को दिल्ली दूरदर्शन द्वारा आयोजित निबंध प्रतियोगिता में प्रथम स्थान दिया गया । ☒

मैंने भी बाल रंगवाया

राम भगवान सिंह

बुढ़ापा घुसपैठिये की तरह चुपके-चुपके शरीर के उत्तर प्रदेश में प्रवेश करता है और चोटी पर आसीन हो बंकर बना लेता है। पहले तो यह अपना दो-एक सफेद झंडा गाड़ देता है, फिर कुछ दिनों बाद बंकर से निकल कर सारे शीर्ष मंडल पर कब्जा कर लेता है। कारगिल की चोटी की तरह व्यक्ति की चोटी पठार समेत बर्फ की सफेदी से चमचमा उठती है। बालों में बगुले के पंख लग जाते हैं। व्यक्ति अंधेरे में भी भूत की तरह सफेद बालों से साफ नजर आने लगता है। कम से कम बालों को देखकर अश्वेत आदमी नहीं रह जाता। वह गोरा से भी दस कदम आगे सफेद हो जाता है जैसे दूध का धोया हो चाहे उसने जवानी में कितने भी घपले और घोटाले किये हों।

बालों की दुधिया सफेदी पचास-साठ सालों की मेहनत की कमाई होती है। वैसे मेहनत न करनेवाले कामचोरों को भी यह बोनस नसीब हो ही जाता है। कर्मचारियों की कालवृद्ध प्रोन्नति की तरह ही ईश्वर ने बालों की कालबद्ध सफेदी योजना बना रखी है जो बिना हड़ताल, प्रदर्शन और धरना के लागू हो जाती है। और तो और, कोई चाहे गंगा में नहाए या अलकतरा में, चाहे कोई चारा खाये या यूरिया, कोई भ्रष्टाचार में लिप्त हो या बलात्कार में, भोले भगवान सबके बाल दूध में धो ही देते हैं।

मगर आदमी की काली आँखों में काली चीजें ही अच्छी लगती हैं। इसीलिए वह अपने गोरे चेहरे पर एक काला टीका लगा लेता है। सुन्दरियाँ अपने गोरे गाल पर एक काला तिल बना लेती हैं। गायों में काली गाय सर्वोत्तम मानी जाती है। उसी तरह बिल्लियों में सरदार और सबसे ज्यादा असरदार काली बिल्ली ही होती है। जूतों में आला काला ही होता है। और काला धन, उसकी तो पूछिए ही मत। बस यही समझ लीजिए कि गधा काला धन नहीं कमा सकता। और गधा तो क्या, गधे का बाप भी कागज काला नहीं कर सकता।

निष्कर्ष यह कि काला आला होता है। रात अगर काली न हो तो काले कारनामें ठप हो जाएंगे। काले कारनामें नहीं होंगे तो अच्छे कारनामें भी नहीं होंगे। आखिर अच्छा क्या होता है ? बुरे का विपक्षी। अच्छा तो परजीवी होता है, न ? बुराई नामक बैटरी से चलता है। जैसे अच्छाई और बुराई दो बहने हैं, उसी तरह तीता और मीठा दो भाई हैं, और फिर काला और सफेद दोनों मौसेरे भाई हैं। वैसे लोकतंत्र में सबका मान बराबर है, मगर लोक-जीवन में छोटे बड़े का ख्याल तो रखना ही पड़ता है। सो, काला भाई बड़ा है और सफेद भाई छोट।। तभी तो काला बाल पहले जन्म लेता है और सफेद बाल वर्षो बाद । और बड़ा होने के चलते काला बाल ही शरीर का जमीन्दार होता है। इस जमीन्दार का रंग-रौब फीका नहीं होना चाहिए सिर से पांव तक। इसलिए जूते के साथ-साथ बाल को काला मेनटेन करना वैधानिक अनिवार्यता है। नीचे से ऊपर तक काला-ही काला होना चाहिए। मध्य प्रदेश का हृदय भी बाहर चाहे जैसा हो, भीतर काला होना ही चाहिए।

ये तो सिद्धान्त की बाते हुई। मगर लगता है, प्रकाशन के पहले ही मेरा यह सूपर मौलिक सिद्धान्त लीक हो गया। विज्ञान का कमाल तो देखिए, दिमाग में कोई नया आइडिया आया नहीं कि बाजार में उसकी फोटो कॉपी बिकने लगती है। तभी तो मेरे गर्भस्थ आइडिया में सुखद संशोधन करते हुए मेरे लाड़ले ने अपना बाल भूरा रंगवा डाला-खांटी ताम्बे से तमतमाता हुआ। मैंने अब उसकी ताम्रवाली उदारीकरण का पक्षधर हूँ। उदारीकरण की नीति मात्र व्यवसाय में नहीं, बल्कि बाल में, बात में, व्यवहार में लागू होनी चाहिए। उदारता तो हमारा सांस्कृतिक दर्शन रहा है। कहा गया है, 'उदार चरितानाम् वसुधैव कुटुम्बकम'। अंग्रेजों के बाल भूरे होते हैं गेहूँ के पुष्ट दानों की तरह यद्यपि उनके यहाँ गेहूँ बहुत कम होता है। और एक हम है कि गेहूँ तो खूब उपजाते हैं मगर गेहूँ जैसा भूरा बाल रखने से परहेज

करते हैं। कहते हैं, भूरा बाल हटाओ। मेरा तो मत है, भूरा बाल बढ़ाओ। ''

बेटे के तर्क से मैं अभिभूत हो गया। भूरे बालवाले ही तो आधी दुनिया पर शासन करते थे। आज भी रिमोट कंट्रोल से उनका ही शासन चलता है। लगता है, भूरे बालों से मस्तिष्क को अच्छी खुराक मिलती है। और यह भी संभव है कि तेज मस्तिष्क वाले के बाल भूरे होते हों। संभवत: इसी कारण भूरे बालवाले ही पूरी धरती पर आज सबसे बलवान, धनवान, विद्वान और सर्वशक्तिमान बने हुए हैं। हमारे लिए परम सौभाग्य की बात है कि उनलोगों ने अभी तक अपने भूरे बाल पेटेन्ट नहीं कराये हैं। इसलिए समझदार लोगों को फटाफट अपना बाल भूरा रंगवा लेना चाहिए।

मेरी यह सलाह इस बार भी जनहित में जारी होने के पहले कॉलोनी के दस-बारह नौजवानों ने अपने बाल भूरे रंगवा डाले। आज का नौजवान कितना समझदार है! वह जानता है कि कल भूरे बालवालों की कम्पनियों में स्थानीय भूरे बालवालों की ही मांग होगी और कोई न कोई कम्पनी उसका वरण कर ली लेगी।

यह तो हुई नौजवान की बात! मगर इसका ऐसा संक्रामक प्रभाव पड़ा कि पुरानी कहावत बोल उठी-बड़े मियां तो बड़े मियां, छोटे मियां सुब्हभन अल्लाह। हुआ यूं कि अपने भ्राताजी के ताम्रवर्णी बालों के ग्लैमर से अनिभूत होकर नन्हे मोनू ने भी भ्राताश्री के बचे डाई से रात में चुपके-चुपके अपने बाल रंग डाले। नन्हे कलाकार ने अपनी उभरती कला का कुछ ऐसा प्रदर्शन किया कि आगे के बाल भूरे और पीछे के बाल काले शोभने लगे आधुनिक चित्रकला की तरह। मोनू तो बस सेल्फ-स्टाइल बाबा ब्राउन बन गया। और दो-एक दिनों में ही इस बाबा के अनेक चेले हो गए। कॉलोनी में सुन्दर, सुनहरे, भूरे बालवाले बच्चों को देख लगने लगा मानों हमारी कॉलोनी यूरोपिस्तान बन गई है।

रंगना अर्थात रंग बदलना हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है। वैसे मनुष्य को स्वयं मरने का अधिकार नहीं है, वह चाहे तो भूख से मर सकता है, बीमारी से मर सकता है, रंगदारी से मर सकता है, परन्तु स्वयं मरने पर कानून का यमराज केस कर देता है। जन्म अवैध हो सकता है, अवैध संतान हो सकती है, मगर मौत अवैध नहीं होती, आत्ममृत्यु के सिवा। हमारा विधान आदमी को अपनी आत्मा की हत्या का अधिकार देता है, मगर अपने शरीर की हत्या का नहीं। आत्मा का क्या है, उसका न रंग है, न रूप है, न आकार है, न प्रकार है। यहाँ तक कि उसका अता-पता भी नहीं है। वैसी आत्मा रहे न रहे, मगर शरीर तो सबके सामने है, ठोस और साकार जिसे अंधा भी पहचान सके। मनुष्य को ऐसे शरीर को सिर से पैर तक रंगने का अधिकार है। मेरी बेगम को संविधान के अधिकारों की जानकारी न सही, मगर अपने नारी-जन्म मौलिक अधिकारों की पूरी जानकारी है। वह हाथों को मेहदीं से, पैरों को महावर से,चेहरे को स्नो-पाउडर से और नाखूनों को नेल-पॉलिश से रंगना खूब जानती हैं। वह तो होली में दूसरों को गोबर और गाली से रंगना भी जानती हैं। और पिछले हफ्ते तो उन्होंने कमाल ही कर दिया। ट्रेन में एक नौजवान ने उन्हें 'मांजी' कहकर सम्बोधित किया तो दूसरे ही दिन उन्होंने अपने अल्पसंख्यक सफेद बालों पर कालिख पुतवा दी जैसे चुनाव में कोई विपक्षी उम्मीदवार के पोस्टर पर कालिख पुतवा देता है।

बेगम की बाल पुताई से सचमुच उनके बाल काली नागिन की तरह लहरा उठे और अपने मरियल बालों की कसम, मेरे कलेजे पर सांप लोट गया। मुझे तो साथ चलने में भी संकोच होने लगा। लगा कहीं कोई मुझे उनका बाप न समझ ले। मेरा पुरूषत्व लजाने लगा। बेगम से बात करते समय भी मुझे उनके काले बाल डंसते नजर आने लगे। आखिर करना क्या था, मैंने भी बाल रंगवाया और रात के अंधेरे में जाड़े के बहाने सिर में गमछा लपेटकर घर लौटा। पर हाय रे, मेरी किस्मत। दूसरे ही दिन सारे सिर में सूजन और चकत्ते निकल आए हैं, फफूंद की तरह। मुझे तो अब बाहर निकलने में भी शर्म आ रही है। ऐसा लगता है, अपना बाल नहीं बल्कि अपना मुंह काला करा लिया है। ☒

सम्पर्क : अंग्रेजी विभागाध्यक्ष
बी. एस. कॉलेज, लोहरदगा (झारखंड)

बिहार की समकालीन कविता-धारा

✍ वंशीधर सिंह

सृजन प्राणी मात्र का स्वाभाविक कर्म है। जहां मानवेत्तर प्राणी अपनी भौतिक आवश्यकताओं की तात्कालिक सम्पूर्ति हेतु सृजन करते हैं, वहां मनुष्य सौंदर्याभिरूचि के अनुसार सृजन करता है। मनुष्येत्तर प्राणी प्रकृति प्रदत्त उपकरणों का आश्रय लेने को विवश होते हैं, जबकि मनुष्य आवश्यकतानुसार प्रकृति प्रदत्त उपकरणों का नया रूप भी गढ़ता है । मनुष्य का संज्ञान जब अभिव्यक्ति का रूप ग्रहण करता है, तब सृजन के दौरान उसकी सौन्दर्य दृष्टि रचना को प्रगाढ़ और प्रभावी बनाती है। कविता अभिव्यक्ति का सबसे सूक्ष्म और संवेदनशील माध्यम है। सृष्टि के प्रारम्भ से ही कविता अपने स्वरूप को बदलती हुई विकसित होती रही है। कविता दिक्-काल सापेक्ष होती हुई भी कालातीत होती है।

समकालीन कविता में सामाजिक प्रवृतियों, परिदृश्यों, जीवन-संदर्भों का रूपायन हुआ है। मनुष्य और समाज कविता के केन्द्र में है। जो कविता आदमी के सरोकार और सामाजिक सन्दर्भ से हीन होती है, वह मनोरंजन की वस्तु होती है। आधुनिक हिन्दी कविता जीवन की समग्र संगति में विकसित होती रही है। इसलिए उसमें सामाजिक-राजनीतिक आशय के प्रति संलग्नता, सम्बद्धता और प्रतिबद्धता भी है। समकालीन कविता में नयी कविता का लघु मानव, क्षण-भंगुरता, गुहा विवर की एकान्त साधना, इतिहास का निषेध, विसंगति, विडम्बना तथा व्यक्ति स्वातंत्र्य का असीम विस्फोट गायब है । मनुष्य के संदर्भ में जो भी प्रासंगिक और अर्थवान है, समकालीन कविता परम्परा के स्वस्थ रूप को ग्रहण करती हुई नये युग संदर्भ और संघर्ष को चित्रित करती है। कहना उपयुक्त होगा कि कविता के इस विकासक्रम में बिहार के कवियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। बिहार के कवियों की कविताधारा विविधवर्णी रही है। उसमें अनेक रंगतों और रंगों की कविताएं हैं, लेकिन कविता की जो मुख्यध ारा है, वह निश्चित रूप से मनुष्य को केन्द्र में रखकर प्रवाहित हो रही है । बिहार की कतिपय प्रादेशिक और क्षेत्रीय विशेषताएं भी हैं, जिनका असर समकालीन कविताओं पर देखा जा सकता है । छायावादोत्तर काल के अंतिम महत्वपूर्ण कवि आचार्य जानकी वल्लभ शास्त्री हैं, जो आज भी रचनाशील हैं। इनकी मुख्य प्रवृत्ति गीतात्मक रही है। रामधारी सिंह दिनकर और नागार्जुन बिहार की काव्य-मनीषा के शिखर कवि हैं। जहां दिनकर की कविताओं में राष्ट्र उद्बोधन का भाव है और गुलामी से मुक्ति का मुखर स्वर है, वहां नागार्जुन में जनयंत्रणा और परिवर्तन की भी चेतना का अभिव्यंजन है। हिन्दी की प्रगतिशील कविता धारा नागार्जुन की कविताओं से होकर गुजरी है। जहां दिनकर की कविता में ओज और शौर्य है, वहां नागार्जुन की कविता में जन-अभियान और व्यंग्य का तेज है। छायावादोत्तर - काल के कवियों में केदारनाथ मिश्र प्रभात का काव्य-लेखन काफी महत्वपूर्ण है। यद्यपि इनमें गीति-चेतना भी है, लेकिन मुख्य रूप से इनकी कविताएं प्रबंधात्मक हैं। कैकेयी, तप्तगृह, ऋतम्बरा आदि इनकी महत्वपूर्ण काव्य कृतियां हैं। जहां रामदयाल पाण्डेय की कविताओं में वन्दना का स्वरसंलाप है, वहां कलक्टर सिंह केसरी की कविताओं में मिट्टी की सोंधी गंध है। मनोरंजन प्रसाद सिंह की कविताएं वीर-भाव की पूजा का चन्दन हैं। स्वातंत्रोत्तर काल के कवियों में हंस कुमार तिवारी, आरसी प्रसाद सिंह, गोपाल सिंह नेपाली, मोहन लाल महतो वियोगी, रूद्र, यौधेय, सत्यदेव नारायण अस्थाना, राजकमल चौधरी, लाल धुंआ प्रभृति महत्वपूर्ण रहे हैं, जिनकी कविताओं से हिन्दी काव्य-धारा विविध वर्णी बनी है। नेपाली में जहां सरस लयात्मक अनुगूंज है, वहां राजकमल चौध री में जड़ता के प्रति रोमानी विद्रोह है। राजकमल चौधरी के मुक्ति प्रसंग से बिहार की कविता धारा अलग से पहचानी जाती है, जो वर्जित प्रदेश की भी यात्रा करती है। प्रपद्यवाद के अन्तर्गत नलिन विलोचन शर्मा, केसरी कुमार और नरेश 'नकेन' के समधीत पुरस्कर्ता कवि रहे हैं। पोद्दार रामावतार अरुण और हरिहर चौधरी नूतन क्रमशः प्रबन्ध-चेतना और गीति-चेतना के उल्लेखनीय कवि हैं। साठोत्तरी कवियों

की पीढ़ी में राजेन्द्र प्रसाद सिंह और कुमारेन्द्र पारसनाथ सिंह ऐसे कवि हैं जो अपेक्षाकृत अल्प मूल्यांकित होते हुए भी महत्वपूर्ण कवि हैं। राजेन्द्र प्रसाद सिंह में जहाँ ध्वन्यात्मक गीति-चेतना है, वहां कुमारेन्द्र में मुक्तिकामी संघर्ष चेतना। कुमारेन्द्र की कविताओं में वाम-चेतना का चरम है।

आठवें दशक में उभरकर आये गीति-चेतना के कवि नचिकेता, शांति सुमन, विजेन्द्र अनिल और महेश्वर जन-चेतना को समर्पित रहे हैं। जहां शांति सुमन में लयात्मक सान्द्रता है, वहां नचिकेता और विजेन्द्र अनिल में संघर्षात्मक ऊष्णता है। नचिकेता के गीतों में जन-संघर्ष और निश्छल प्रेम की निष्कलुष अभिव्यक्ति है। 'जनता का आदमी' और 'गोली दागो पोस्टर' कविताओं के चर्चित कवि आलोकधन्वा एक ऐसे महत्वपूर्ण कवि हैं जिनसे होकर कविता की मुख्यधारा तेज हुई है। 'दुनिया रोज बनती है' की कविताएं अपनी भीतरी ताकत और तेज से प्रभावित करती हैं। कविता की जनवादी धारा को पुष्ट करने वाले कवियों में आलोक धन्वा के अलावा नवें दशक में उभरकर आये अरुण कमल और मदन कश्यप ऐसे कवि हैं, जिनकी कविताओं में जन-चेतना का कलात्मक अभिव्यंजन हुआ है। अरुण कमल की कविताएं बिना गर्जन-तर्जन के वह सब कुछ कह देती हैं जो युग-सन्दर्भ के लिए जरूरी होता है। मदन कश्यप की कविताएं युग की विद्रूपता और समय के तनाव को बारिकी से चित्रित करती हैं और मनुष्य की यंत्रणा और व्यवस्था-चक्र को भीतर से खोलती है। शिवनारायण के कविता-संग्रह 'काला गुलाब' में कई प्रगल्भ भाव-छवियाँ हैं और जन-चेतना का मुखर स्वर है। शिवनारायण की कविताओं में गहरी संवेदनशीलता है। वे बाजार के खिलाफ के कवि हैं।

जे पी. के नेतृत्व में हुए सम्पूर्ण-क्रान्ति आन्दोलन के क्रम में अनेक कवि उभरकर नुक्कड़ पर आये जो सीधे जनता की ओर मुखातिब हुए। इन कवियों में सत्यनारायण, गोपी वल्लभ सहाय, रवीन्द्र राजहंस, परेश सिन्हा, बाबूलाल मधुकर, रवीन्द्र भारती, करुणेश प्रभृति उल्लेखनीय हैं। इनमें से सत्यनारायण, रवीन्द्र भारती, रवीन्द्र राजहंस और परेश सिन्हा के काव्य-संकलन भी आये । विविध रंगों की इनकी कविताएं मंचों और कवि सम्मेलनों में पसंद की गई। कवि जीवानन्द झा और प्रो. जाबिर हुसैन ऐसे कवि हैं, जिनमें आदमी के भीतर छिपी अतुल शक्ति का अहसास है। जीवानन्द झा की कविताएं समकालीन कविता की प्राणवत्ता को उकेरती हैं। काशीनाथ पांडेय, विंध्यवासिनी दत्त त्रिपाठी, रामनरेश पाठक गीतिचेतना के ऐसे कवि हैं जो काफी अरसे पहले से काव्य-सृजन करते रहे हैं। बजरंग वर्मा अपनी व्यंग्य कविताओं के लिए मशहूर हैं।

हिन्दी एवं मैथिली में समान रूप से चर्चित मार्कण्डेय प्रवासी सान्द्र भाव के कवि हैं। हिन्दी में बीते तीन दशकों में उन्होंने अनेक प्रगल्भ गीत एवं गजल लिखे हैं। ज्ञानेन्द्र पति ऐसे जीवंत कवि हैं जो पिछले दो दशक से मनुष्य की जिजीविषा और संघर्ष-धर्मिता के मुखर स्वर को व्यंजित कर रहे हैं।

बिहार में कविता के क्षेत्र में महिलायें भी पीछे नहीं हैं। कवयित्रियों में शान्ति सुमन, प्रकाशवती नारायण, रमणिका गुप्ता, कुमारी राधा, मिथिलेश कुमारी मिश्र, पद्माशा झा, रश्मि रेखा, संध्या गुप्ता, सुभद्रा वीरेन्द्र, निर्मला मृदुल, साजीना, ग्रेस कुजुर, स्नेहलता पारूथी, पल्लवी विश्वास, रेणुका मिश्र, रुबी भूषण आदि, जो समकालीन कविता में अपनी सार्थक उपस्थिति से हिन्दी काव्य-धारा को तेजोदीप्त बना रही हैं। इनकी कविताओं में नारी-विमर्श के अनेक प्रश्न और तत्व मौजूद हैं।

समकालीन कविता को गतिशील बनाने में जिन कवियों का योगदान रहा है, उनमें श्याम सुन्दर घोष, जगदीश विकल, नन्द किशोर नंदन, जितेन्द्र राठौर, सिद्धेश्वर, भगवती प्रसाद द्विवेदी, राजनारायण चौधरी, रामयतन प्रसाद यादव, ज्योति प्रकाश, प्रेमयोगी प्रभृति स्मरणीय हैं। इस दशक में उभरकर आये कवियों में बद्री नारायण, शरद रंजन शरद, सुरेन्द्र स्निग्ध, रंजीत वर्मा, शिवनारायण, कैलाश प्रसाद स्वच्छन्द, हरीन्द्र विद्यार्थी, मेहता नागेन्द्र सिंह, विजय गुंजन, विनय सौरभ, अविनाश, प्रफुल्ल कोलख्यान, रमेश ऋतंभर, श्याम दिवाकर, निलय उपाध्याय राधेश्याम तिवारी, अमरनाथ अमर, अनिल विभाकर, मुकेश प्रत्यूष, विनोद दास नीरज सिंह, कृष्णमोहन झा, विनय सौरभ, निविड़ शिवपुत्र, संजय कुंदन, प्रणय प्रियंवद, श्याम दिवाकर, निर्मला पुतुल आदि हैं। ☒

नाट्य मंचन का विकास और नाटककार लमगोड़ा

✍ बाबूराम वर्मा

कविताएं लिखने के बावजूद लमगोड़ा जी वस्तुत: एक कुशल नाटककार ही हैं, और इसी रूप उन्होंने ख्याति भी अधिक पाई है, इसलिए यदि मैं अपने इस लेख में नाटक साहित्य पर ही थोड़ा विचार करूं तो यह उपयुक्त ही कहा जाना चाहिए। इसके अलावा, यह भी हो सकता है कि उससे लमगोड़ा जी के नाटक के अवदान पर हमें सन्तुलित दृष्टि अपनाकर उनका समुचित मूल्यांकन भी कर सकें, जो अभी तक सम्यक दृष्टि से किया नहीं गया और जिसे न करना या गलत ढंग से करना उनके प्रति ही नहीं, स्वयं हिन्दी के प्रति भी घोर अन्याय होगा।

पहली बात मुझे यह खटकती है कि संस्कृत साहित्य में नाटकों की पर्याप्त सम्पन्नता रहने पर भी और कालिदास के नाटकों (और काव्यों) की शास्त्रीय पठन-पाठन पद्धति में प्रभूत भूमिका चलती रहने पर भी संस्कृत से अनुप्राणित आधुनिक भाषाओं को नाटकों की विपन्न स्थिति का सामना क्यों करना पड़ा? हिन्दी के प्रथम (आधुनिक)नाटककार भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के समय में उन्हें हिन्दी में लिखे अपने पिता के हनुमन्नाटक के सिवाए किसी अन्य हिन्दी नाटक का पता नहीं था। संभवत: कोई अन्य नाटक रहा भी नहीं होगा। इसीलिए भारतेन्दु जी ने लग-लिपट कर हिन्दी की यह कमी पूरी करने का व्रत लिया और अनुवाद करके, मौलिक नाटक लिखकर (यद्यपि आधुनिक शोध ने उनके कई मौलिक कहे जाने वाले नाटकों को बंगला नाटकों का अनुवाद या छाया सिद्ध किया है), अपने सहयोगियों को नाटक लिखने के लिए प्रोत्साहित करके इस दिशा में उल्लेखनीय कार्य किया है।

उनके उत्तरवर्ती प्रसाद जी ने ऐतिहासिक नाटक अधिक लिखे और उनमें संस्कृत नाटक लिखने के नियमों का अनुसरण किया है। उनका उद्देश्य क्या था, स्पष्ट नहीं, परन्तु ऐसा लगता रहा है मुझे कि उन्होंने उस समय चल रही गुप्तों के विषय की पुरातात्त्विक-ऐतिहासिक खोजों का धैर्यपूर्वक सूक्ष्म आन्दोलन किया और उनमें अपनी ओर से, आवश्यक नाटकीय उपकरण समायोजित करके, उस युग को नाटकों के द्वारा सर्वजन सुलभ रूप में प्रस्तुत किया। उनका कार्य अपने अतीत के प्रति फैली भ्रांति को दूर करने के साथ-साथ उसमें उचित स्वाभिमान जगाना भी रहा है। देश प्रेम की उसमें कमी नहीं है। मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि उनका उद्देश्य स्वदेशाभिमान जगाना था और उसके लिए उन्होंने नाटक को अपनाया, इसे पुनरूत्थानवादी मनोवृति से किया कार्य भी शायद कहा जा सकता है। नाटकों की कमी दूर करना शायद उनका लक्ष्य नहीं था। यदि था भी तो मौलिक नाटकों का प्रणयन रहा होगा, क्योंकि भारतेन्दु के नाटको में अन्य भाषाओं के नाटको की छाया ही उन्हें अधिक दिखाई पड़ी होगी। कम से कम नाटक विधा में तो ऐसी ही स्थिति है। शकुन्तला का हिन्दी अनुवाद राजा लक्ष्मण सिंह ने किया, वह प्रसिद्ध ही है। और भी नाटक हिन्दी में इसी तरह आए।

हिन्दी का मौलिक नाट्य-लेखन संस्कृतानुसारी नहीं है, इसका प्राय: अनुवाद भी नहीं है, इस लेखन की प्रेरणा या प्रतिक्रिया पश्चिमी या बंगला लेखन की प्रतिक्रिया स्वरूप हुई है। यह नवीन नाटक लेखन है, जो हिन्दी में इससे पूर्व नहीं था।

थोड़ी जानकारी बंगला का भी प्रस्तुत कर दूं यद्यपि यह अधिकारिक नहीं है, परन्तु दिशा-दिग्दर्शक अवश्य है। गुरुदेव रवीन्द्र नाथ ठाकुर का नाट्य लेखन भी संस्कृत जटिलताओं का अनुसरण नहीं करता। गुरुदेव आधुनिक बंगला लेखन के पुरोधा हैं। हमें पढने को मिलता है उनके समय में योरोस्पियनों के कलकत्ता में क्लब थे जिनमें नये-पुराने अंग्रेजी नाटक लगभग नियमपूर्वक खेले जाते थे। संभवत: उसी से उत्तेजित होकर गुरुदेव के राष्ट्र एवं भाषा प्रेम ने उनसे बंगाल नाटकों की रचना कराई। उनका शिल्य विधान सरल है और विषय भी अपेक्षाकृत नये, जो उन पर पश्चिमी नाटकों की प्रतिक्रिया कहा जा सकता है अनुकरण, नहीं उसके मुकाबले में बंगला नाटकों को विकसित करना, उनका उद्देश्य था। उसके साथ-साथ उन्होंने अपने बंगला नाटकों को मंच भी प्रदान किया। ये नाटक उनके परिवार-परिसर में ही मंचित होते और परिवार वाले ही बहुधा इनमें भाग लेते थे। यहाँ तक कि अभिनेता, संगीतकार और दर्शक तक भी वे ही होते थे। तब कहीं जाकर उनका, सार्वजनिक (किन्तु सीमित स्तरीय) प्रदर्शन किया जाता था। गुरुदेव ने ही आधुनिक बंगला नाटकों की शुरूआत की।

गुरुदेव अकेले नहीं थे, उनके अन्य सहयोगी भी थे। दिखाना मुझे यही है कि नया बंगला नाट्य लेखन पश्चिमी नाटकों की प्रतिक्रियास्वरूप आगे आया है।

मराठी आदि अन्य भाषाओं में स्थिति थोड़ी भिन्न हो सकती है, क्योंकि वहाँ मराठावादी का अन्त होने पर भी, साहित्य का दबदबा समाप्त होने में काफी देर लगी होगी। संस्कृत का प्रचलन भी अधिक समय तक वहाँ रहा और उसकी जड़ें मराठी साहित्य में भी लग गई।

मंच की दृष्टि से हिन्दी की स्थिति बंगला और मराठी से भिन्न रही है। बंगला को सामन्त और अभिजात्य परिवारों का आश्रय मिला। ठाकुर परिवार का आंश्रय उसे नये युग तक खींच लाया और उसके पश्चात व्यापारी और पढ़ा लिखा वर्ग उसको प्रश्रय देने लगा। हिन्दी प्रदेश में, सामन्त वर्ग, अधिकतर मुस्लिम या मुसलमान

प्रभावित हिन्दू रहा जिसने पहले फारसी और फिर उर्दू को अपनाया। यहाँ हिन्दी नाटक को आश्रय नहीं मिला। वाजिद अली शाह को 'इन्दर सभा' नाटक प्रसिद्ध है जो राजाओं-नवाबों द्वारा वैसे (अर्थात् उर्दू के) नाटकों को संरक्षण दिया जाने का इतिहास कहता है। इसी शैली पर पारसी रंगमंच के नाटक चले हैं और उसकी भाषा शैली भी उसी ढंग की है। अधिकांश नाटक उसी पृष्ट भूमि से आए हैं जैसा लैला-मजनू या शीरी फरहाद इत्यादि। पं० राधेश्याम कथावाचक ने अवश्य हिन्दू विषयों को लेकर नाटक-लिखे, परन्तु आधुनिक युग आते-आते, जिसमें प्रसाद की चर्चा मुख्यत: आती है, पारसी रंगमंच ही जाता रहा। परन्तु, इस पारसी रंगमंच को न नाटकों की कमी रही और न दर्शकों की। बस, इसके नाटकों की पृष्टभूमि भारतीय नहीं थी, भाषा शैली भी उर्दू थी, भले ही उसे हिन्दी की एक शैली कह लिया जाए।

हिन्दी के नाटकों की यात्रा पृष्ठभूमि की कष्टवेदना को सहते-झेलते हुए आगे बढ़ी है। भारतेन्दु के हो या प्रसाद जी के, हिन्दी नाटक सस्ता मनोरंजन करके पतनशील मुस्लिम या उनसे प्रभावित समाज की ठकुर सुहाती करने के लिए नहीं रचे गए थे। मनोरंजन का उनका स्तर ऊंचा था और वस्तुत: तो वे देश प्रेम से परिपूर्ण, सोये हुए समाज की मुर्च्छा तोड़ने के लिए सर्जित हुए थे। 'प्रताप प्रतिज्ञा' जैसे नाटक देशोत्थान से परिचालित थे। ऐसे ही विषयों के नये नाटकों और उनके लिए वांछित नये दर्शकों की भी स्वभावत: कमी होनी ही थी। इनके दर्शकों को रामलीला देखने वालो, पैसा न खर्च पाने वाले सामान्यजनों से प्राप्त किया जाना था। यह वर्ग ही इन नए नाटकों को संरक्षण देने वाला थ और मानना ही पड़ेगा कि यह बड़ा सीमित और विपन्न था, और इसके दम पर आरंभिक वर्षो में मंच या नाटकों का विकास कर पाना अति दुष्कर कार्य था। नाटक स्कूल-कॉलेजों के वार्षिक उत्सवों या अन्य समारोहों पर अभिनीत किए जाते थे और उनमें हिन्दी अध्यापकों, हिन्दी प्रेमियों का प्रमुख हाथ रहता था। बहुत बार तो रामलीला की समाप्ति पर दो या तीन दिन तक कोई नाटक अवश्य खेला जाता था। उसी का मंच उपयोग में लाकर खर्च भी बच जाता था। इस तरह के नाटकों को कदाचित वीर अभिमन्यु का चलन सर्वाधिक था और स्पष्ट है, कि उसका उद्देश्य देश प्रेम और युवकों में वीरता जगाना ही था। नाटक के लिए नाटक खेलना उतना नहीं। रंगमंच, जैसा ऊपर कहा गया। राम लीला में प्रयुक्त चार या पांच स्टॉक पदों का रहता था, जिसके साथ हारमोनियम तबले वाले मंच के नीचे गड्ढे में बैठकर, गीत या नृत्य के अवसर पर संगीत संगत देते थे। यह मंच, जैसा लमगोड़ा जी ने बताया, कोई खास विकसित नहीं था। हाँ, प्रकाश गुल करके किसी विशेष पात्र या दृश्य पर प्रकाश केन्द्रित करने की परिपाटी चल पड़ी थी, जिसे लमगोड़ा जी ने अपने नाटकों में भी सूचित प्रयुक्त किया है। नाटक को 'धर्म भावना' कभी उखड़ने नहीं देती थी। नाटक में टिकट अवश्य लगता था, परन्तु

पेशेवर नाट्य मण्डलियों का विकास नहीं हो पाया था। यह काम शौकिया बना रहा। अभिजात्य वर्ग ने इसे पूछा ही नहीं, हीन भावना से भी देखा।

आधुनिक विषयों वाले नाटकों की कमी बनी ही रहती है क्योंकि आजकल समय, समाज और रूचियां बहुत तेजी से बदल रही है, विशेषकर पश्चिम के प्रभाव से और अंशत: धर्म के प्रति घटती हुई श्रर्द्धा से। अन्य भारतीय भाषाओं से ही नहीं, यूरोप की बहुत सी भाषाओं का प्रभाव उनके अंग्रेजी अनुवादों के जरिए हिन्दी पर बराबर पड़ रहा है। हिन्दी की शैकिया नाट्य मण्डलियां जर्मन नाटककार ब्रेख्त के नाटक भी खेलती है। मराठी नाटक (विजय तेन्दुलकर) काफी लोकप्रिय है। इसलिए हिन्दी में उसी तरह के नाटकों की मांग की जाती है। युगानुरूप नाटकों की जरूरत दिखाई देती है लमगोड़ा जी को भी। उन्होंने बताया है कि शिक्षण काल में उन्होंने 'ध्रुवस्वामिनी' (प्रसाद) और 'जूलियस सीजर' (शेक्सपीयर) नाटकों को ही पढ़ा था। उनके अन्दर के नाटककार ने युग की मांग पर कान दिए कि हिन्दी में "मंचन योग्य नये नाटकों" को लिखा जाना चाहिए। और वे इस ओर प्रवृत हुए। खेले जाने वाला नाटक चाहिए। यह भी समझना चाहिए कि नये विषयों के नई प्रविधियों से सम्पृक्त मंच नाटक-लेखन का विकास करता है तो स्वयं नाटक की भी अपनी विशेषताएं हो सकती जो आगे आकर मंच को विकसित कर सकती बल्कि करती है। दुर्भाग्य यही रहा है कि हिन्दी नाटकों की कोई विकसित या विकासमान पेशेवर रंगमंच मिला ही नहीं। जो भी उसके पास था, वह 'रामलीला' खेलने वाला मंच था। गैर पेशेवर नाटक खेलने वाले क्लबों या परिषदों के पास इससे भी कम विकसित रंगमंच था और नये हिन्दी नाटकों के लिए यही मंच उपलब्ध था। उसके 'अनुकूल बनने' में नाटक को कटना-पिटना पड़ता था बल्कि कभी-कभी अकुशल निर्देशक और अभिनेताओं के कारण उसकी हत्या भी हो जाती थी। मराठी या बंगला रंगमंच के मुकाबले के कुशल पेशेवर रंगकर्मी भी हिन्दी में यहाँ थे, उस वक्त और आज भी कहाँ हैं? लमगोड़ा जी बिल्कुल सही कहते हैं कि नाटक खेलना और ऐसे लोगों को समाज में नीची नजर से देखा जाता था। स्त्री पात्रों की भूमिका पुरूष ही निभाते थे। यह बात आज अटपटी जरूर लगती है, परन्तु यह सोलह आने सच बात है। स्त्रियां उन भूमिकाओं के लिए उपलब्ध थी ही नहीं। नाटककार भी स्त्रियों की भूमिकाएं कम ही रखते थे।

हिन्दी जगत में नाटक के लिए आदर्श स्थितियां उपलब्ध नहीं है। आज की नाटक-लेखकों ने ही इसकी अधिकांश जरूरतें पूरी की है। गुरुदेव ने नाटक लिखे, मंचित किए, उनमें स्वयं अभिनय किया, उनके मित्रों-सम्बन्धियों-परिचितों ने भी भूमिकाएं निबाही। दर्शक भी कम रहे भारतेन्दु ने भी ऐसा ही किया। नाटकों में भूमिकाएं निबाही, अपने अभिनय किया। दर्शकों की संख्या कभी उत्साहोपादक रही हो, ऐसा पढ़ने को नहीं मिलता बस, नाटक

मरा नहीं। नाटकों को दर्शक भी नये शिक्षित समाज से मिलने लगे, यद्यपि उनकी संख्या उतनी नहीं थी कि उसके बल पर पेशेवर नाटक दल अस्तित्व बनाकर जम जाए। पृथ्वी थियेटर भी कालान्तर में बन्द हो गया।

लमगोड़ा जी ने ऐसी परिस्थितियों में रहते हुए अपने बल पर नाटक-लेखन में हाथ लगाया। उन्होंने मंच के साथ भी अपने को जोड़े रखा। नाटक प्रदर्शित किए, उनमें भूमिकाएं भी निबाही। हो सकता है दर्शकों को बुलाकर जुटाने में भी श्रम किया हो। अपने पत्र में उन्होंने मुझे बताया कि एक हिन्दी सम्मेलन के अवसर पर उन्हें, अपना पैसा खर्च करके अपना नाटक प्रदर्शित करने का अवसर तक नहीं दिया गया। अपने परिचितों-मित्रों को भी उन्होंने 'नाटक देखने आने' का आग्रह भी किया ही होगा। नाटक प्रदर्शन में अपनी 'गाढ़ी कमाई का' पैसा भी खर्च किया। इसीलिए मैं उन्हें भारतेन्दु, प्रसाद जी की परम्परा में नाटक के लिए उद्योग करते पाता हूँ। उतनी कठिनाइयों में, उतने ही उत्साह से उतने ही समर्पण भाव से, परन्तु उतनी सफलता से अभिषिक्त होते हुए नहीं। हिन्दी प्रदेश को, जो वस्तुत: एक महासंघ ही है, अपने सपूतों को विदेशी मान्यता प्राप्त हो जाने के बाद ही पहचान पाने की बीमारी है। इसीलिए विद्वद्‌जन लमगोड़ा जी की चर्चा करने से भी कतराते हैं, सम्मान करना तो दूर की बात है। दासता का मिला उपहार हम हिन्दी भाषियों से गया नहीं है।

प्रारंभ में, लमगोड़ा जी ने 'ऐतिहासिक नाटक' लिखें जिनमें 'कोशा' 'तिष्यरक्षिता', 'मस्तानी' को ही मुझे पढ़ने का सौभाग्य मिला है। सूची में 'वासवदत्ता' और 'चोला' का भी उल्लेख है। इतिहास के विषय में उनकी दृष्टि रही है कि इन नाटको में नाम और तिथियों को छोड़कर सब कुछ सत्य है।" बल्कि अधिकांश नाम और घटनाएं भी सत्य हैं। जहाँ लेखक ने अपनी ओर से नाम और घटनाओं का सन्निवेश किया है, वह भी ऐतिहासिक घटनाओं की संगति में उस सत्य को उजागर करने के लिए है, उसके प्रतिकूल नहीं जाता।

दूसरे नाटकों की चर्चा दूसरे लोग, जो उनसे अधिक परिचित हैं, करेंगें ही, मैंने उन्हें जानबूझकर छोड़ दिया है। फिर यह समीक्षा मंच भी तो नहीं है कि वह आवश्यक ही हो।

'वह शम्बूक' और उसी पुस्तक में संकलित 'कच और देवयानी' तथा पारिजात पद्यबद्ध नाटक कहे गए हैं, पर इन्हें एकांकी कहना अधिक उपयुक्त होगा, कम से कम बाद वाले दो को, जो छोटे और एक घटना केन्द्रित अधिक है। पात्र कविता में बोलते हैं, इसलिए नाटक के बजाए काव्य की छाप अधिक पड़ती है जैसे ''पारिजात' का सन्ध्यावर्णन तो श्रेष्ठ काव्य ही है। पात्रों की इयत्ता कुछ दबी ही लगती है, क्योंकि पद्य में बोलना थोड़ा भी वास्तविक लगता है। कम से कम सभी कुछ, गद्य का समावेश उसे अधिक वास्तविक बनाता। उसके साथ पद्य बीच-बीच में रखा जा सकता था। वह दर्शकों के भी अधिक अनुकूल पड़ता। इस प्रकार पद्य नाटक एक प्रयोग और नाटककार की पद्य कुशलता का परिचय अधिक सिद्ध होते हैं। मुझे तो गद्य ही नाटक के लिए सही लगता है, भले ही उसमें नृत्य और गीत तक आ जाएं, थोड़ी कविता भी यात्रानुसार मिला जाए। परन्तु पूरा पद्यमय नाटक नहीं होना चाहिए, ऐसा मैं सोचता हूँ। आजकल तो ऐसा करना ही सही समझा-माना जाता है और इसी कारण से पद्य नाटक विरल ही है।

यदि पद्य नाटक को स्वतन्त्र विधा माना जाए तो लमगोड़ा जी उस विधा के भी श्रेष्ठ नाटककार हैं, इसमें कोई सन्देह नहीं। वे गद्य और पद्य दोनों शैलियों में अच्छे नाटक रच सकते हैं, और यह कम गौरव की बात नहीं है। ऐसे समर्थ साहित्यकार कम ही हैं। चाहें तो उनके नाटकों को नाटकीय कविता (ड्रामेटिक पोयट्री) की श्रेणी में भी रख सकते हैं जिसका हिन्दी में विशेष चलन नहीं है।

'वह शम्बक' पद्य नाटक में 'उलटा लटका धड़' और 'कटा शिर' मंच पर दिखकर पृष्ठभूमि से कथा रही गई है। ऐसे भयंकर दृश्य भारतीय परम्परा से मंच पर दिखाना उचित नहीं माना जाता। लूटपाट, हिंसा, हत्या भी मंच पर नहीं दिखाए जाते थे, सूचित कर दिए जाते थे। लगता है लमगोड़ा जी ने पश्चिम को अपनाया, जहाँ ऐसा कोई प्रतिबन्ध नहीं है। 'जूलियस सीजर' में ब्रूटस सीजर की हत्या खुले मंच पर करता है। यहाँ लमगोड़ा जी भारतीय परम्परा से दूर चले गए हैं। प्रविधि और सुविधा की दृष्टि से जो भी मंच पर दिखाना संभव हो, वह अब नाटक में आ सकता है, और आया है। पूर्व और पश्चिम मिल गए हैं।

एक बात और, इस नाटक में शम्बूक का वध करने वाले को लमगोड़ा जी ने राजा राम की जगह उनका वेशधारी ब्राह्मण राम बना दिया है। राम आरोपयुक्त हो गए इस तरह। पता नहीं हमसे समाज विल्पव में कोई कमी आई या नहीं, परन्तु तर्क संगति से राजा राम ने इस हत्या की जांच-पड़ताल क्यों नहीं कराई और हत्या के अपराधी को (भले ही वह शूद्र की क्यों न हो) कुछ भी दंड यश प्रायश्चित (प्रायश्चित एक प्रकार का आत्मदंड ही है) करने का कोशिश क्यों नहीं दिया। ऐसे प्रश्न उठाए जा सकते हैं। परन्तु नाटककार सभी प्रश्नों का उत्तर दे, क्या यह अनिवार्य है? यों, एक असंगति दूर करने के प्रयास में दूसरी असंगति उठ खड़ी होना अस्वाभाविक नहीं हैं।

लमगोड़ा जी के नाटक मुझे दूरदर्शन के लिए बहुत उपयुक्त लगे हैं और मैं समझ नहीं पाता कि वहां उनका उपयोग क्यों नहीं किया गया। कुछ नाटक विवादास्पद भी हो सकते हैं परन्तु कोशा, मस्तानी, और तिष्यरक्षिता जैसे नाटक तो सभी तरह से सुन्दर, प्रेरक और समयानुकूल संदेश देने वाले नाटक हैं। उन्हें तो 'दूरदर्शित' किया ही जाना चाहिए। ☒

सम्पर्क : 'उत्तरगिरि' छवि, बल्लपुर, देहरादून

मंच की चेन्नै शाखा की कार्यकारिणी की बैठक

✍ प्रस्तुति : आशुतोष मनुज

चेन्नै के दूरमोर स्टेशन के अतिथि विश्राम कक्ष में विगत 12 दिसम्बर 2000 को छह बजे सन्ध्या राष्ट्रीय विचार मंच के महासचिव श्री सिद्धेश्वर की उपस्थिति में हुई जिसकी अध्यक्षता शाखा की अध्यक्ष डॉ॰ मधु धवन ने, महासचिव ने प्रारंभ में मंच के इस वर्ष के क्रिया कलापों तथा आगे के कार्यक्रमों पर विस्तार से चर्चा की। अध्यक्ष के प्रस्ताव पर शाखा की कार्यकारिणी सदस्यों के बीच कम करें **विचार दृष्टि** में अच्छी तथा राष्ट्रीय भवनाओं पर आधारित विभिन्न विधाओं की रचनाओं के समावेश हेतु दायित्वों का वितरण किया गया। राजनीतिक नजरिया के तहत रचनाओं के संकलन का भार जहाँ श्री रमेश चन्द्र गुप्त 'नीरद' के कन्धों पर दिया गया, वहीं साहित्यिक लेखन के लिए डॉ॰ मधुधवन तथा संरक्षक डॉ॰ बाल शौरी रेड्डी ने जिम्मेदारी ली। सचिव श्री आशुतोष मनुज को सांस्कृतिक गतिविधियों पर प्रकाश डालने को कहा गया तथा गुलाबन्द कोटाड़िया ने सामाजिक विविध रचनाओं के लिए अपनी सहमति दी। श्रीमती पार्वती तथा डॉ॰ विद्या शर्मा ने व्यंग्य रचनाओं पर अपनी कलम चलाने का वादा किया। बैठक में विचार दृष्टि तथा मंच की सदस्यता अभियान को सफल बनाने पर बल दिया गया। डॉ॰ विद्या शर्मा ने बैठक में उपस्थित सदस्यों के प्रति आभार व्यक्त किया। ☒

सम्पर्क: सचिव, राष्ट्रीय विचार मंच, शाखा-तमिलनाडु

बंगलौर में मंच की कर्नाटक शाखा का गठन

✍ प्रस्तुति : गौड़ा साहब, बंगलोर से

दक्षिण रेलवे, मंडल कार्यालय, बंगलौर के राजभाषा विभाग के प्रांगण में विगत 14 दिसम्बर 2000 को नगर के साहित्यकारों एवं प्रबुद्धजनों की एक बैठक दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के श्री सीताशरण शर्मा की अध्यक्षता में हुई जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में **विचार दृष्टि** के सम्पादक श्री सिद्धेश्वर उपस्थित थे। सम्पादक सिद्धेश्वर ने पत्रिका तथा मंच के उद्देश्यों पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कर्नाटक राज्य में भी मंच की एक शाखा तथा पत्रिका के ब्यूरो प्रमुख की नियुक्ति का प्रस्ताव प्रस्तुत किया। विशिष्ट अतिथि के रूप में इस अवसर पर आमंत्रित हिन्दी सेविका डा॰ बी॰ एस॰ शांताबाई ने प्रस्ताव का समर्थन करते हुए ऐसे संगठन की आवश्यकता पर बल दिया। अध्यक्ष श्री सीताशरण शर्मा ने प्रमुख सामाजिक कार्यकर्त्ता श्री संजय प्रकाश का नाम मंच की कर्नाटक शाखा के संयोजक के लिए रखा, जिसे प्राधिकृत किया गया कि वे अन्य ग्यारह सदस्यों को तर्दर्थ समिति में मनोनीत कर लें। कन्नड़ भाषी तथा हिन्दी के प्रति अगाध आस्था रखने वाले पत्रकार श्री पी॰ सी॰ चन्द्रशेखर को कर्नाटक के लिए पत्रिका के ब्यूरो प्रमुख के चयन किया गया। बंगलौर रेलवे मंडल के राजभाषा अधिकारी श्री चन्द्रपाल सिंह के सजन्य से आयेजित इस बैठक में उपस्थित सभी विद्वत जनों के प्रति आभार व्यक्त किया श्री सिंह ने।

सम्पर्क : सचिव, राष्ट्रीय विचार मंच, बंगलोर

प्रो॰ रवीन्द्र कुमार जैन सारस्वत सम्मान समारोह का आयोजन

✍ प्रस्तुतिः डॉ॰ विद्या शर्मा

तमिलनाडु बहुभाषी लेखिका संघ चेन्नै के तत्वाधान में विगत 15 दिसम्बर 2000 को चेन्नै के कस्तुरी रंगन रोड स्थित एसियन कल्चर सेन्टर के प्रारंभ में प्रो॰ (डॉ॰) रवीन्द्र कुमार जैन के सम्मान में सारस्वत सम्मान समारोह का आयोजन मुख्य अतिथि प्रिन्स आफ आरकट के नवाब मोहम्मद अली तथा विशिष्ट अतिथि डॉ॰ बी॰ नारायण जी ने प्रो॰ जैन के हिन्दी साहित्य में अमूल्य योगदान की भूरि-भूरि सराहना की। दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा चेन्नै के पूर्व कुलपति डॉ॰ मलिक मोहम्मद ने अपने अध्यक्षीय उदगार में डॉ॰ जैन के व्यक्तित्व व कृतित्व की चर्चा की। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि रूप में उपस्थित मद्रास विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ॰ सैयद रहमतुल्ला ने भी अपने उद्गार में हिन्दी साहित्य के प्रति प्रो॰ जैन की सजगता को रेखांकित किया।

समारोह के मुख्य अतिथि नवाब मोहम्मद अली ने जहाँ **"प्रो॰ रवीन्द्र कुमार जैन अभिनंदन ग्रंथ"** का लोकार्पण किया, वहीं स्वतन्त्रता सेनानी तथा कर्मठता की प्रतिमूर्ति श्री शोभा कान्त दास के जीवन पर आधारित उपन्यास **"शिखिरों से ऊँचा"** का लोकार्पण डॉ॰ सैयद रहमतुल्ला के कर-कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। उल्लेखनीय है कि इस उपन्यास की लेखिका तथा हिन्दी साहित्य की सशक्त हस्ताक्षर डॉ॰ मधु धवन ने श्री दास के राजनीतिक-सामाजिक अवदान की चर्चा करते हुए उन्हें समाजवादी चेतना के एक जीवन्त व्यक्तित्व करार दिया है।

इस अवसर पर उपस्थित प्रो॰ रवीन्द्र कुमार जैन ने अपने आशीर्वचनों से समारोह की अलौकिक भव्यता प्रदान की। संघ की अध्यक्षता डॉ॰ जय लक्ष्मी सुबह्मण्यम ने प्रारंभ में उपस्थित मान्य अतिथियों एवं सुधी जनों का स्वागत किया तथा श्री गोविन्द मुदड़ा ने अपने को काव्यमय में संचालन से समारोह को जीवन्त बनाया।

नगर के जाने माने साहित्यकारो तथा विद्वतजनों ने

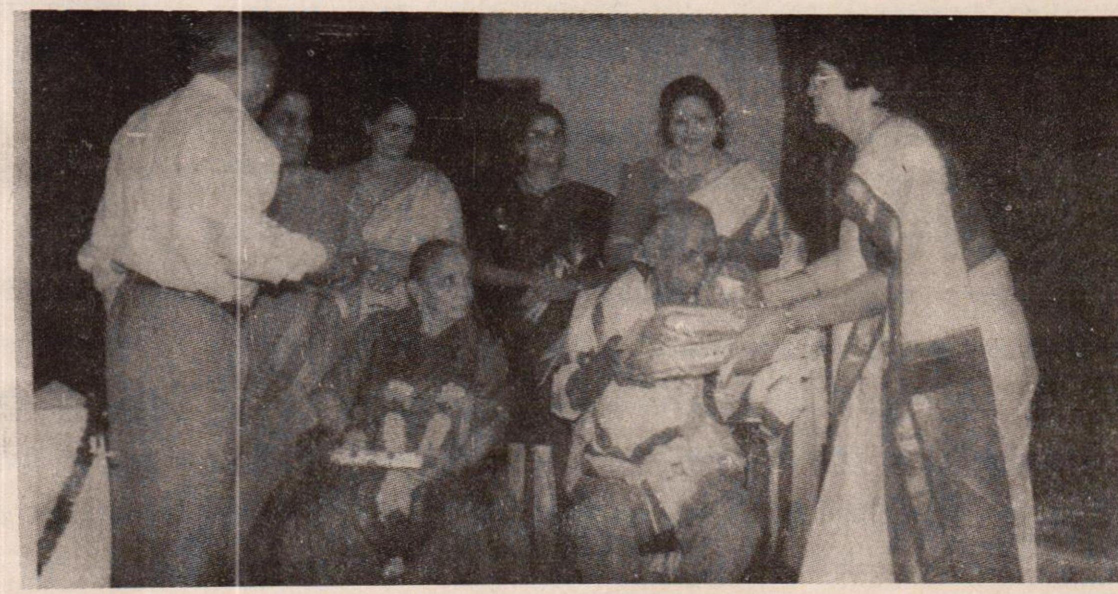

इस समारोह को अपनी उपस्थिति से गरिमा प्रदान की, उनमें डॉ॰ मधु धवन, डॉ॰ कमला विश्वनाथन, श्री पार्वती, डॉ॰ भवानी तथा श्रीमती निर्मला मौर्य का नाम उल्लेखनीय है। इस समारोह को तन-मन-धन से योगदान करने वालों में शांति लाल जैन, शोभा कांत दास, डॉ॰ बाल शौरी रेड्डी, गुलाब चन्द्र कोटाड़िया, डॉ॰ चुन्नी लाल शर्मा, डॉ॰ वत्सला किरण, डॉ॰ शशि रेखा, ज्ञान जैन, श्रीमती भसीन, डॉ॰ इन्द्रराज वैद्य, विष्णु प्रिया, डॉ॰ पी॰ सी॰ कोकिला, डॉ॰ पी॰ के बालसुब्रहण्यम् तथा डॉ॰ वी॰ सुन्दरम का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। श्रीमती शान्ति मोहन के आभार-ज्ञापन के पश्चात समारोह का समापन राष्ट्रगान से हुआ।

प्रस्तुति : डॉ॰ विद्या शर्मा, हिन्दी विभागाध्यक्ष
गुरु श्री शांति विजय जैन कॉलेज,
वेयेरी-7, चेन्नै

त्रिवेन्द्रम में मंच की केरल शाखा गठित

विगत 28 दिसम्बर 2000 को केरल की राजधानी तिरूनन्तपुरम के होटल हौरीजन के सभागार में नगर के विद्वत जनों की एक बैठक केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका के सम्पादक डा॰ एन॰ चन्द्रशेखरन नायर की अध्यक्षता में हुई जिसमें मुख्य रूप से राष्ट्रीय विचार मंच के महासचिव श्री सिद्धेश्वर जी उपस्थित थे, जिन्होंने बैठक की पृष्ठभूमि प्रस्तुत करते हुए मंच की केरल शाखा के गठन की आवश्यकता पर बल दिया तथा इसके मुख्य-पत्र **"विचार दृष्टि"** के प्रचार-प्रसार एवं विस्तार हेतु पत्रिका के केरल ब्यूरो प्रमुख के चयन का एक प्रस्ताव भी प्रस्तुत किया। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि भाषा तथा क्षेत्रीयता के सवाल पर बँटे-भारतीय समाज में राष्ट्रीय विचार मंच तथा राष्ट्रीय भावनाओं पर आधारित **"विचार दृष्टि"** पत्रिका ने न केवल एक सद्भाव का वातावरण बनाने में एक अहम भूमिका अदा की है बल्कि उत्तर और दक्षिण के बीच एक सेतु का काम करने में कोई कोर-कसर नहीं उठा रखा है। आखिर तभी तो चैन्नै के बाद पिछले 12 दिसम्बर 2000 को बंगलौर में इसने अपना कदम रखा और कर्नाटक शाखा का गठन किया और इस बार वर्ष के अंत में केरल में अपना पाँव बढ़ाया है। इसका अगला पड़ाव आन्ध्र प्रदेश होगा। बैठक में उपस्थित सभी प्रबुद्धजनों ने महासचिव की निष्ठा से सहमत होकर सर्वसम्मति से **राष्ट्रीय विचार** की तिरूवनन्तपुर में केरल शाखा का गठन किया, जिसके संयोजक हुए मलयालम भाषी तथा हिन्दी सेवी डॉ॰ एन चन्द्रशेखरन नायर। बैठक में एक प्रस्ताव पारित कर मंच की इस तदर्थ समिति के लिए विभिन्न क्षेत्रों से नौ सदस्यों को मनोनीत करने के लिए संयोजक के प्राधिकृत किया गया।

इस बैठक में हिन्दी एवं मलयालम के सुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉ॰ रति सक्सेना को **'विचार दृष्टि'** पत्रिका की ब्यूरो प्रमुख, केरल के पद पर सर्वसम्मति से चयन किया गया। बैठक के अंत में श्री अमोध देव राय ने आभार व्यक्त किया।

प्रस्तुति : डॉ॰ चन्द्रशेखरन नायर, त्रिरुवन्तपुरम

आदित्य को "साहित्य श्री" सम्मान

साहित्यकार श्री आदित्य प्रकाश सिंह (पटना) को उनकी रचना धर्मिता एवं हिन्दी साहित्य की सेवा के लिए अरविन्द प्रकाशन केन्द्र सतना (म॰ प्र॰) की ओर से "साहित्य श्री" सम्मान से अलंकृत किया गया। यह जानकारी केन्द्र के निदेशक श्री गौरी शंकर श्रीवास्तव पथिक से विचार दृष्टि कार्यालय को मिली। विचार दृष्टि परिवार की ओर से श्री आदित्य जी को बधाई।

इन्दौर के रमेश यादव शताब्दी रत्न से सम्माननित

मानव उत्थान में उल्लेखनीय योगदान के लिए इन्दौर से प्रकाशित डगमगाती कलम के सम्पादक श्री रमेश यादव को जैमिनी अकादमी, पानीपत द्वारा शताब्दी रत्न से सम्मानित किया गया। श्री यादव इन्दौर में विचार दृष्टि के प्रतिनिधि हैं। पत्रिका-परिवार की ओर से उन्हें ह्रार्दिक बधाई।

विचार प्रतिनिधि, इन्दौर

शंकर संस्कृति प्रतिष्ठान द्वारा हिंदी साहित्य के लिए पुरस्कार

सीताराम सिंह, नई दिल्ली से

शंकर संस्कृति प्रतिष्ठान के तत्वाधन में 27, दिसबर को नई दिल्ली में एक व्याखानमाला का आयोजन किया गया, जिसमें केंद्रीय, श्रम (मंत्री) डा॰ सत्य नारायण जटिया, सुलभ प्रतिष्ठान के डा॰ बिंदेश्वर पाठक, स्व॰ श्री शंकर दयाल सिंह की पत्नी कानन वाला सिंह, राकेश कुमार सिंह, तथा हिंदी पत्रकारिता से जुड़े हिंमांशु जोशी तथा अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया। डा॰ सत्य नारायण जटिया जी ने शंकर दयाल सिंह के साथ संसदीय राजभाषा समिति के अनेकानेक संस्मरणों पर प्रकाश डाला।

श्री बिंदेश्वर पाठक ने प्रतिवर्ष 1 लाख रू॰ का शंकर पुरस्कार तथा एक सोने की अंगुठी, हिंदी साहित्य में सर्वश्रेष्ठ योगदान के लिए प्रदान करने की घोषणा की। "संस्कृति के संरक्षण में भाषा का योगदान" विषय पर उन्होंने प्रकाश डाला। श्रीमती कानन बाला सिंह वृहद शंकर परिवार को देखकर खुश नजर आई। रंजन कुमार सिंह ने शंकर दयाल सिंह के नहीं रहने पर हिंदी साहित्य के क्षेत्र में उनके क्रिया कलापों को आगे बढाने तथा उनकी कमी से हिंदी के क्षेत्र में ह्यास को पूरा करने का वचन दिया। श्री जितेन्द्र सिंह, वरिष्ठ पत्रकार ने शंकर दयाल सिंह के जीवन की विशेषताओं पर प्रकाश डाला एवं कहा - "समय किसी के लिए प्रतीक्षा नहीं करता है। अतएव जो कुछ समाज एवं साहित्य के अभिवर्द्धन के लिए आप करना चाहते हैं कर डालें।

डा॰ केदार नाथ सिंह, अध्यक्ष शंकर संस्कृति प्रतिष्ठान एवं नगर के अनेकानेक विद्वतजन सभा में उपस्थित हुए।

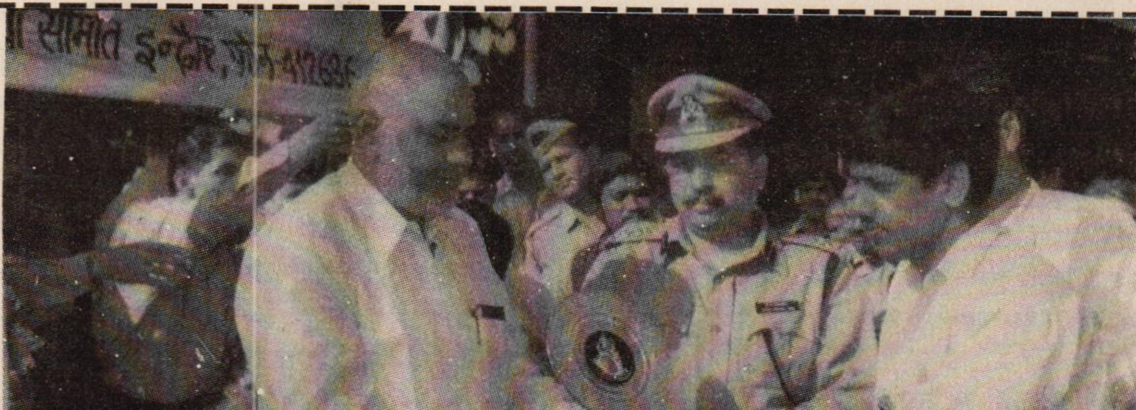

सम्मान ग्रहण करते युवा साहित्यकार रमेश यादव

रीति कविता और अहम-कविता का रचना-विधान

✍ डॉ॰ रेखा मिश्र

भारतीय विद्या और हिन्दी साहित्य के अनुसन्धाता अब तक यही मानते आ रहे हैं कि जिस ढंग के रूश्रृंयाश्रित श्रृंगारी मुक्तकों की विपुल रचना हिन्दी साहित्य के रीतिकाल के अंतर्गत हुई उसका प्राचीनतम लिपिबद्ध रूप संप्रत्ति प्राकृत की 'गाथा सप्तशती' में ही उपलब्ध होता है। स्वयं 'गाथा सप्तशती' के रूढ़िरूढ़ श्रृंगारी छंदों के विषय में विद्वानों का अनुमान है कि उनका वर्ण्य-विषय और रचना-विधान संबन्धी समस्त रूढ़ियाँ उनके रचयिता अमीरों के लोक-जीवन तथा लोक साहित्य से सीधे पंडितों के लिखित वाङ्मय के भीतर प्रविष्टि हुई होगी।

परन्तु अधिकांश हिन्दी के विद्वान इस तथ्य से अनभिज्ञ हैं कि रीति-मुक्तकों के ही समान इने-गिने कुछ विशिष्ट पात्रों तथा रति प्रसंगों की भित्ति पर श्रृंगारिक मुक्तक रचने की परम्परा दक्षिण भारत के तमिल साहित्य में दीर्घ काल से चली आ रही है। तमिल का प्राचीनतम साहित्य-संगम साहित्य ऐसे ही रूढ़ि-प्रधान श्रृंगारिक पद्यों से भरा हुआ है। तमिल काव्य परम्परा ऐसे पद्यों को 'अहम-कविता' की संज्ञा से अभिहित करती है।

संगम साहित्य के काल-निर्धारण के प्रश्न पर विद्वानों में मतैक्य नहीं है। कोई उसका निर्माण-काल ईसा पूर्व दूसरी या तीसरी शताब्दी मानने के पक्ष में है, तो कोई उसको ईसवी सन् की प्रारंभिक दो-तीन शताब्दियों में विरचित मानने का समर्थक है। लेकिन उसको तीसरी शती ईसवीं के पश्चात् आविर्भूत मानने के पक्ष में प्राय: कोई नहीं है।

आपातत: संगम-कालीन अहम-कविताएँ विश्व की अन्य भाषाओं में विरचित प्रेम-कविताओं तथा प्रणय-गीतों से सर्वथा भिन्न कोटि की जान पड़ती हैं। तमिल-विद्वानों का यह दावा भी है कि विश्व की किसी भी अन्य भाषा में तमिल की अहम-कविता के समतुल्य विविध रूढ़ियों एवं परम्पराओं से प्रतिबद्ध प्रणय-कविता प्राप्त नहीं होती।

किन्तु अहम कविता का विश्लेषण करने पर विदित होता है कि कतिपय अंतरों के बावजूद उसका रचना-विधान एवं वर्ण्य-विषय मूलत: वही है जो 'गाथा-सप्तशती' के छंदों तथा हिन्दी के श्रृंगारिक रीति-मुक्तकों का है। संक्षेप में अहम कविता के रचना-विन्यास सम्बन्धी मुख्य विशेषताएँ निम्नांकित है :-

1. काव्य रूप की दृष्टि से तमिल की अहम-कविता मुक्तक की कोटि में आती है। अतएव वह स्वत: सापेक्ष होती है तथा पूर्वापर छंदों से अनालिंगित होती है।

2. प्रत्येक अहम-कविता में एक नाटकीयता होती है, उसके वक्ता-श्रोता होते हैं, उसकी पृष्ठभूमि में एक परम्परागत नाटकीय प्रसंग भी रहता है।

3. अहम-कविता अनिवार्यत: किसी परंपरागत पात्र की उक्ति के रूप में होती है। ऐसे पात्रों में प्रमुख हैं - नायक, नायिका की सखी, धात्री तथा गणिका। नायक-सखा, भार (दौत्य, मनोरंजन, मानवन इत्यादि करनेवाला), प्रतिवेशी, ग्रामजन, रथवान जैसे कतिपय गौण पात्र भी अहम-कविता में कहीं-कहीं वक्ता बनकर उपस्थित होते हैं। न केवल ये पात्र, प्रत्युत् उनकी प्रकृति, गुण अवगुण तथा अहम-काव्य में उनकी भूमिका भी गतानुगतिक एवं परंपरासिद्ध है। अहम-कवि को इस पूर्वागत परंपरा के प्रति अतीव जागरूक एवं प्रतिबद्ध रहना पड़ता है।

4. तमिल-काव्य-परंपरा के अनुसार, अहम-पात्रों का नामकरण सर्वथा निषिद्ध है, अर्थात् उनके लिए व्यक्तिवाचक संज्ञाओं का प्रयोग नहीं होना चाहिए, नायक, नायिका, प्रियतम, बालम, बाला, सुन्दरी, सुतनु जैसी जातिवाचक संज्ञाओं द्वारा ही उनका उल्लेख वा संबोधन किया जाना चाहिए।

5. अहम-कविता की पृष्ठभूमि में विद्यमान नाटकीय प्रसंगों के विषय में यह उल्लेखनीय है कि वे भी प्रधानतया परंपरा-निदिष्ट हैं। यह कहना सत्य से दूर न होगा कि समूचे इस-काव्य के पृष्ठाधार के रूप में एक रूढ़ एवं परंपरागत प्रणय-कथा है। प्रत्येक अहम-कवि इसी कथावस्तु के एक प्रसंग

को चुनकर उसकी पृष्ठभूमि में उससे संबंद्ध किसी पात्र-विशेष की मनोदशा को उसी के शब्दों में अभिव्यक्त करता है। तथापि, अहम-कविता के कलेवर में कहीं भी उस प्रसंग का या वक्ता-श्रोता का स्पष्ट निर्देश नहीं होता, केवल संकेत भर रहता है। बहुधा पाठक को अपनी ओर से उनका आक्षेप करना पड़ता है और यह कार्य वह तभी सुचारू रूप से कर सकता है जब कि उसको अहम-काव्य विषयक परम्परा एवं रूढ़ियों का सम्यक् बोध हो। "जो इन पौढोक्तियों से परिचित न हो वह मुँह ताका करे, कविता उसके माथे में ही न धंसेगी, हृदय में धसना तो बाद की बात है।" रीति-मुक्तकों के संदर्भ में कही गयी आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र की यह उक्ति अहम-कविताओं पर भी अक्षरशः चरितार्थ होती है।

नीचे उदाहरणस्वरूप एक संगमकालीन अहम-कविता की कुछ पंक्तियों का भावानुवाद उद्धृत है, जिसमें उपयुक्त समस्त विशेषताएँ देखी जा सकती हैं -

"क्या लगती हैं हम कि आपसे रूठे ? लोग तो कहें कि कल की बरसती निशि में भी इक काले कचों की कामिनी के संग इसी भवन में ब्याह रचाकर आपने अगणित रति-रंग किये थे.... पर क्या लेना है हमें ? क्यों बोले भला हम ? आह ये मेरे दीपित वलय (कलाई से) खिसक रहे हैं .... पर इससे क्या ! जाइये नाथ, कोई क्यों आपको रोके।"

संगम कवयित्री 'अल्लूर नन्युल्लैयार' द्वारा विरचित इन पंक्तियों की वक्त्री है 'नायिका' श्रोता है, 'नायक'। नाटकीय प्रसंग है 'नायक के परस्त्री अनुराग के कारण नायिका में उत्पन्न रोष का। वक्ता, श्रोता तथा प्रकरण तीनों ही सहृदय द्वारा आक्षिप्त हैं, पद्य के भीतर कथित नहीं। सहृदय के उक्त आक्षेप का आधार है परंपरागत काव्य-रूढ़ि, जिसके कतिपय संकेत-मात्र पद्य के भीतर विद्यमान हैं। पद्य में नायक या नायिका का कोई नामकरण नहीं हुआ है।

यदि हम इसी प्रणाली पर किसी रीतिकालीन श्रृंगारी मुक्तक के रचना विन्यास का विश्लेषण करें तो निस्सन्देह उसमें भी आधारभूत रूप में अहम कविता की उपरि चर्चित नाटकीय विशेषताएँ ही उपलब्ध होंगी। उदाहरणार्थ महाकवि मतिराम के निम्नांकित सवैये को लीजिये -

कोऊ नहीं बरजै 'मतिराम' रहौ तितही जितही मन भायो।

काहे को सौंह हजार करौ तुम तो कबहूँ अपराध न ठायो।।

खाओ सोवन दीजै न दीजै हमें दु:ख यों ही कहा रसवाद बढ़ाओ।

मान रहोई नहीं मनमोहन ! मानिनी होय सो मानौं मनायो।।

ऊपर उद्धृत अहम-कविता के विश्लेषण में जो कुछ कहा गया है, वह सब मतिराम के उक्त सवैये के विषय में भी कहा जा सकता है। केवल एक अड़चन रीति-मुक्तकों में नायक-नायिका के लिए प्रयुक्त कृष्ण, राधा अथवा उनके अभिव्यंजक अन्य नामों के कारण उपस्थित हो सकती है, परन्तु वह भी कोई गंभीर बाधा नहीं है क्योंकि रीति-वाङ्मय के सभी सुधी पाठक इस तथ्य से अवगत हैं कि रीति काव्य में व्यवहृत कृष्ण और राधा के नाम अथवा उनका बोध करानेवाली अन्य व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ वस्तुत: श्रृंगारी नायक और नायिका की पर्याय-भर हैं, उन नामों का भक्त कवियों के आराध्य देवी-देवता राधा, कृष्ण के साथ कोई संबंध नहीं।

यह जान लेने पर कि प्रथम शताब्दी इस्वी के आसपास तमिल में प्रणीत संगमकालीन अहम-कविताएँ हिन्दी के रीति-श्रृंगारी मुक्तकों की कोटि की हैं, स्वभावत: मन में यह जिज्ञासा जगती है कि क्या रीतिकाल के समान संगम काल में ही श्रृंगारी रूढ़ियों के प्रतिपादक नायक नायिका भेद के शास्त्रीय ग्रंथ तमिल में वर्तमान थे। उक्त जिज्ञासा का एक कारण यह भी है कि यद्यपि गाथा-सप्तशती में परवर्ती नायक-नायिका भेदों के प्राय सभी रूप प्राप्त होते हैं।

गाथा-सप्तशती का समकालीन या उसका पूर्ववर्ती कोई नायक-नायिका भेद विषयक शास्त्रीय ग्रंथ आज तक देखने में नहीं आया है। जहाँ तक तमिल का संबंध है, उक्त प्रश्न का दो-टूक उत्तर दे पाना कठिन है, क्योंकि संगम काल में श्रृंगारी रूढ़ियों के निरूपक शास्त्रीय ग्रंथ तो तमिल में विद्यमान थे, किन्तु वे संस्कृत-हिन्दी के नायक-नायिका भेद के ग्रंथों से भिन्न थे। यद्यपि तमिल के इन ग्रंथों में नायक, नायिका, सखी, सखा, दूत, दूती इत्यादि उन्हीं के लक्षण, उनके कार्य, विविध प्रणय प्रसंग (या

अवस्थाएँ) इत्यादि उन्हीं विषयों का विश्लेषण विवेचन हुआ है जो संस्कृत-हिन्दी के नायक-नायिका भेद के ग्रंथों का प्रतिपाद्य विषय रहा है, तमिल की कथित शास्त्रीय कृतियों की निरूपण-पद्धति नायक-नायिका भेदों की विवेचन-प्रणाली से कई बातों से भिन्न है। संप्रति उपलब्ध तमिल के प्राचीनतम संगमकालीन लक्षण-ग्रंथ 'तोलकाप्पियम' के तृतीय खंड 'पोरूलदिकारम' में अहम या श्रृंगारी रूढ़ियों का विशद एवं व्यापक विवेचन हुआ है। एक दृष्टि से, तोलकाप्पियम का यह खंड संस्कृत-हिन्दी के परवर्ती नायक-नायिका-भेद विवेचन के पूर्वरूप-सा भासित होता है।

एक प्रमुख विशेषता जो तमिल के इन शास्त्रीय ग्रंथों में लक्षित होती है, वह यह है कि उनमें कहीं भी रस-सृष्टि का आग्रह नहीं है चाहे प्रसंगोद्भावना हो, या पात्र-परिकल्पना या चाहे हो परिवेश निर्माण, सर्वत्र सहजता, स्वाभाविकता एवं यथार्थता (या आदर्शमुखी यथार्थता) का ही अधिक ध्यान रखा गया है। नायक, नायिका, सखी इत्यादि को पात्र या व्यक्ति मानकर उनका निरूपण किया गया है, न कि रीति-कविता के समान उन्हे आश्रय आलंबन उद्दीपन इत्यादि रसाभिव्यक्ति के अवयव मानकर। तमिल के लक्षण-ग्रंथों तथा संस्कृत हिन्दी के नायक-नायिका भेद के ग्रंथों के बीच यह एक अत्यंत सूक्ष्म किन्तु अतिशय महत्वपूर्ण अंतर है, जिसके कारण तमिल के लक्षण-ग्रंथों की शास्त्रीय प्रतिपादन-प्रणाली ही नहीं। प्रत्युत् अहम कवियों की विषय उपस्थापन-पद्धति भी संस्कृत-हिन्दी के कवियों की प्रस्तुतीकरण-प्रणाली से भिन्न एवं विलक्षण हो चली है।

अवस्था भेद की दृष्टि से संस्कृत और हिन्दी के लक्ष्य-लक्षण ग्रंथों में जितनी भी प्रमुख प्रणय-अवस्थाएँ परिगणित या वर्णित हुई, कतिपय अपवादों को छोड़कर लगभग सभी का निरूपण तोलकाप्पियम में दृष्टिगत होता है। अपवादों में मुख्य हैं :-

(क) रीति-काव्य में वर्णित नायक-नायिका का सुरत-सुरतांत, पुरूषायित इत्यादि के चित्र जिनको अश्लील मानने के कारण तमिल-काव्यचेताओं के अहम-काव्य की परिधि से दूर रखा है।

(ख) रीति युगीन समाज एवं पारिवारिक जीवन की झांकी प्रस्तुत करने वाले कुछेक प्रसंग, तथा

(ग) राधा और कृष्ण की लीलाओं से सम्बन्धित कतिपय प्रसंग।

संगम-काव्य में भी कुछ ऐसे प्रणय-प्रसंग हैं जो रीति-काव्य में उपलब्ध नहीं होते। इन विशिष्ट प्रसंगों का संबंध संगमकालीन तमिल-जाति के सामाजिक जीवन के साथ है। जैसे :-

(1) विधिवत् विवाह में नायिका के गुरुजनों द्वारा बाधा उपस्थित किये जाने पर नायिका का नायक के संग घर से पलायन।

(2) विवाह में व्याघात पड़ने पर, नायक द्वारा 'मंडल' नामक ताड़ के पन्नों से बने अश्व पर सवार होकर नगर के गली कुचों में भ्रमण।

(3) विवाह के निमित्त नायक का मदमत्त वृषयों को वश में करना इत्यादि।

निष्कर्षत: भिन्न-भिन्न प्रतीत होने पर भी विषय एवं शिल्प दोनों दृष्टियों से तमिल की परंपरायुक्त अहम-कविता तथा हिन्दी की रूढ़िबद्ध रीति-कविता के रचना -विधान में कुछ बातें मौलिक रूप से समान हैं। ईस्वी सन् के आसपास विरचित तमिल के संगम-साहित्य तथा सत्रहवीं-अठारहवीं शती ईश्वी के हिन्दी रीति-साहित्य के मध्यवर्ती यह मूलभूत समानता अनेक शताब्दियों में सतत प्रवहमान एक राष्ट्रव्यापी भारतीय श्रृंगार-परंपरा की दिग्दर्शक है। कदाचित् इस परम्परा के रूप-धारण के पीछे आदि में भारत के किसी एक भाग के जन-जीवन एवं काव्य-साहित्यों को भी आप्लावित किया। समय-समय पर उक्त मूल-धारा में विविध स्थानीय एवं कालगत भेद भी जुड़ते गये होंगे जो आज अहम कविता और रीति-कविता के मध्य परिलक्षित होते हैं। साथ ही यह भी सत्य है कि ये परवर्ती अंतर ऊपरी हैं और उनके कारण मूल परंपरा-विशेषकर उसका रचना विधान बाधित नहीं हुआ है। तमिल भाषी इस बात से गौरव का अनुभव कर सकते हैं कि कालिदास-जैसे संस्कृत के महान कवियों ने जिस श्रृंगार-परंपरा से प्रेरणा ग्रहण की, उस परंपरा के अतिशय प्राचीन पद्य अद्यावधि उनके संगम साहित्य भंडार में सुरक्षित हैं। ☒

सम्पर्क : 401 डी, आन्दपुरी
पश्चिम बोरिंग कैनाल रोड
पटना-800001

समस्या, समाधान और सहजयोग

✍ डॉ० यजुनन्दन प्रसाद

आज अधिकांश मानव समस्याओं से घिरा है। समस्या सामाजिक हो या व्यक्तिगत, पर समस्या है। यह अधिकांश मानव का अभिन्न अंग बन गया है। इनका समाधान ढूंढ़ना स्वाभाविक है। मानव इसका समाधान मन–बुद्धि के स्तर पर खोजता है, पर समाधान मिलता नहीं। समस्या बढ़ती ही जाती है। समाधान मिले भी कैसे ? यह तो मन–बुद्धि की ही उपज है। इसका समाधान तो इससे परे ही हो सकता है।

आज के भौतिक युग में धन–दौलत को ही सबकुछ समझ लेना सबसे बड़ी भूल है। मानव धन इकट्ठा करने के लिए हर संभव प्रयास उचित या अनुचित कर रहा है। धन इकट्ठा कर लेता है पर समस्याओं से छुटकारा नहीं मिलता। मर्ज बढ़ता ही जाता है। निराश होकर गुरुओं की शरण लेते हैं। दान–धर्म करते हैं। तीर्थाटन करते हैं पर दुख–संताप बढ़ता ही जाता है। फिर बहुत से लोगों को नशे आदि की अप्रिय लत लग जाती है। बहुत लोग असाध्य रोगों जैसे – कैंसर, एड्स, हृदय रोग आदि से पीड़ित हो जाते हैं। इनसे छुटकारा पाने का कोई रास्ता उन्हें दिखाई नहीं पड़ता। वे निराश होकर भाग्य को दोष देते रहते हैं और किसी तरह परिस्थिति से समझौता कर लेते हैं। पर वास्तविकता यह है कि हर समस्या का कोई न कोई समाधान अवश्य होता है। इनका भी समाधान है, इसे ढूंढ़ने के पहले यह जानना आवश्यक है कि समस्याएँ आती ही क्यों है ? अधिकांश समस्याएँ मानवकृत हैं। मानव अपनी मूल प्राकृतिक धर्म कर्म समझ रखा है। गुरुओं ने उनकी व्यथा को और भी बढ़ा दिया है। गुरु आत्मसाक्षात्कारी नहीं हैं। अतः वे शिष्यों को सही रास्ता दिखा नहीं पाते हैं। फलतः समस्यायें सुलझने के बजाय और भी उलझ जाती हैं। गुरु के प्रवचनों से लोगों में वैराग्य भी उत्पन्न हो जाता है जिससे बहुत सारे घर परिवार बरबाद हो जाते हैं। गुरु का स्थान तो बहुत ही ऊंचा होता है, पर गुरु को योग्य होना चाहिए। गुरु वह प्रकाश देता है जिससे हम स्वयं एवं परमात्मा को जान जाते हैं। आनन्द प्राप्त होता है। हम सदानन्द बन जाते हैं। कबीर जी की निम्न पंक्तियों से गुरु का महत्व जाना जा सकता है :–

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काकै लागौं पांव।

बलिहारी गुरु आपनों, गोविन्द दियो बताय॥

आज के गुरु धन–दौलत के पीछे पड़े होते हैं क्योंकि वे साक्षात्कारी नहीं हैं। कबीर जैसे गुरुओं को धन–दौलत नहीं चाहिए। परमात्मा के दरबार में केवल भाव–भक्ति चाहिए। वह तो दाता है, भक्त वत्सल हैं। सच्ची श्रद्धा हो तो भक्तों के बस में होते हैं भगवान ।

सच्चा गुरु कौन है ? इसकी पहचान क्या है ? यह जानना भी जरूरी है सच्चा गुरु वह है जो आत्म साक्षात्कार कराए, जिससे शान्ति प्राप्त हो। दुखों और व्याधियों से छुटकारा मिले। मुक्ति प्राप्त हो, आदि–आदि ।

आज सब जगह हाहाकार मचा है। समाचार पत्रों में अप्रिय तथा दर्दनाक समाचार ही पढ़ने को मिलता है। श्री के. पी. महतो जी का लेख 'दहेज उन्मूलन के कुछ नुस्खें' (विचार दृष्टि, अंक–4, वर्ष–2) इसी का एक ज्वलन्त उदाहरण है। हमारे

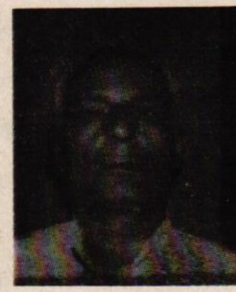

लड़के–लड़कियां कुमारी हैं। उनके बीच दहेज एक दीवार बन कर खड़ा है। इसे हटाना आसान नहीं है। कोई भी नुस्खा इसका बाल बांका नहीं कर सकता । यह मर्ज भी समाज में बढ़ता ही जा रहा है। समाज का हर व्यक्ति इससे प्रभावित है। दहेज न लेने वालों की संख्या नगण्य है। सभी धन–लिप्सा से ग्रस्त हैं। नैतिकता केवल दिखावे के लिए हैं। मन और बुद्धि का इस्तेमाल केवल धन कमाने के लिए किया जा रहा है। जिस विधि से हो धन मिलना चाहिए। मन को बुद्धि संभालता है। पर आजकल तो बुद्धि ही पथ भ्रष्ट है। सम्पूर्ण हृदय से मन–बुद्धि का प्रयोग केवल अधिक से अधिक धन उपार्जन के लिए किया जा रहा है। पढ़े–लिखे लड़कों की कीमत बढ़ती जा रही है। अगर सकारी नौकरी मिल गई तो पौ–बारह हैं। निम्न वर्ग कर्मचारियों की कीमत लाखों में है। समाज में दहेज लेना एक सामाजिक मापदण्ड बन गया है। जिसे जितना अधिक दहेज मिलता है उसका सामाजिक ओहदा उतना ही बड़ा समझा जाता है। इसलिए दहेज एक सामाजिक समस्या है। इनका उन्मूलन घृणा से नहीं बल्कि प्रेम से समाज का उत्थान करके ही हो सकता है।

समाज चूंकि व्यक्ति का समूह है,अतः इसमें कोई सुधार व्यक्तिगत स्तर से ही संभव है। हर व्यक्ति के मन और बुद्धि को आत्मा संभालता है पर आज मनुष्य की आत्मा ही प्रकाश विहीन है। फिर वह मन

और बुद्धि को कैसे प्रकाशित कर सकता है। अत: मुख्य समस्या इन्हें प्रकाशित करने का है। एक बार जब ये प्रकाशित हो जायेंगे तो अनैतिक कार्य कर ही नहीं पायेंगे। फलत: दहेज की कुप्रथा समाज से स्वत: ही विलीन हो जायेगा। आत्म साक्षात्कारी व्यक्ति दहेज की बात सोच भी नहीं सकता । इसलिए सामूहिक चेतना लोगों में जागृत करना होगा । यह सहजयोग के माध्यम से सहज में ही किया जा सकता है।

इस मार्मिक लेख के विपरीत बाबूराम सिंह लमगोड़ा द्वारा रचित उपन्यास " उनतीसवां व्यास " प्रतीत होता है। प्रो. राजेन्द्र प्रसाद मधुबनी जी ने इसकी समीक्षा की है जो महाभारत की वास्तविकता का पोल खोलता उपन्यास "उनतीसवां व्यास" के नाम से विचार दृष्टि के अंक-4 में प्रकाशित है। इसे पढ़ने से ऐसा प्रतीत होता है कि उक्त उपन्यास समाज के लिए घातक सिद्ध हो सकता है । सामाजिक स्तर डगमगा सकता है। लोगों में एक विपरीत भावना का उदय होगा। यह समाज को दो हिस्सों में बांट सकता है। सभी लोग अपनी विचारधारा पर ही बल देंगे। फलत: हर एक के मन में एक द्वन्द युद्ध की स्थिति पैदा हो जायेगी जो समाज के लिए बहुत ही हानिकारक सिद्ध हो सकता है। दूसरे धर्मों में ऐसे उपन्यास की मान्यता नहीं दी जाती है। इसे धर्म विरोध की संज्ञा दी जा सकती है। प्रो. प्रसाद ने स्वयं कहा है कि यह आज के सामाजिक नैतिक व्यवहार पर एक तमाचा है। पर किसी पर तमाचा मारने से सुधार नहीं हो सकता है। आज तक ऐसा हुआ ही नहीं है। वाल्मीकि और तुलसीदास में परिवर्तन किसी तमाचे से नहीं हुआ था। बल्कि यह एक मानसिक झटका था, जिसने उनके अन्दर स्थित आध्यात्म को जागृत कर दिया था।

तर्क-वितर्क से सभ्यता को प्राप्त नहीं किया जा सकता है। इससे हटकर ही इस सत्य को जाना जा सकता है। सत्य क्या है ? कौन व्यास सही हैं ? इसका निर्णय मन-बुद्धि से परे है । इसका सत्यापन केवल आध्यात्मिक ढंग से ही किया जा सकता है, वह आध्यात्म जो सहजयोग देता है। सामाजिक एवं वैयक्तिक समस्याओं का समाधान सहज में ही सहजयोग के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है। सहजयोग एक अनोखी प्रणाली है। इससे किसी भी चीज का सत्यापन किया जा सकता है। इसके माध्यम से समाज में आमूल परिवर्तन किया जा सकता है।

यहां पर एक अमेरिकन मनोवैज्ञानिक का जिक्र करना आवश्यक जान पड़ता है। फ्रायड नामक अमेरिकन मनोवैज्ञानिक ने मां-पुत्र के वात्सल्य प्रेम में मातृ रति की झलक पायी और इसके ऊपर एक सिद्धान्त लिख दिया जो सारी दुनिया में बिजली की तरह फैल गया । जरा सोचें, कितने भारतीय इस मत से सहमत होंगे । मां शब्द एक पवित्र मंत्र है। मां शब्द सुनते ही मातृ हृदय गद्-गद् हो जाता है। संतान को गोद में पाते ही मां के स्तन से दूध की अमृत धारा अविरल प्रवाहित होने लगती है। अमृत का यह स्रोत शिशु की मृत्यु के पश्चात् स्वत: सूख जाता है। मां की ममता ही तो यह स्रोत थी। ममता जब दुख का सागर बन गया तो स्रोत कैसे जीवित रह सकता है। जरा सोचें प्रसव की दुखद पीड़ा के बावजूद हर नारी को मां बनने की प्रबल इच्छा होती है।

मानव तर्क-वितर्क के माध्यम से लोगों को प्रभावित करता रहा है। इसके अलावा कोई दूसरा मापदण्ड था ही नहीं जिससे सत्य-असत्य का सत्यापन किया जा सकता। पर अब समय आ गया है जब इन तर्क-वितर्क से ऊपर उठकर मानव अपनी सभी शंकाओं, समस्याओं का सही समाधान सहजयोग के माध्यम से प्राप्त कर सकता है। इसका वर्णन संक्षिप्त में नीचे दिया जाता है।

सहजयोग : जैसा ऊपर कहा गया है यह एक अनोखी अद्वितीय प्रणाली है जिससे हम मनुष्य के अन्दर स्थित दैवी शक्ति को जागृत की जाती है। इसके लिए कोई घर-बार छोड़ने की जरूरत नहीं है। न हीं कोई धन-दौलत देनी होती है। केवल इस शक्ति को प्राप्त करने की शुद्ध इच्छा होनी चाहिए। यह किसी पर जबरन नहीं थोपा जा सकता है। भारत, रूस, यूरोपीय देशों तथा संसार के अन्य देशों में किए गए परीक्षणों से यह सिद्ध हो गया है कि कई भयंकर रोग जैसे : कैंसर, एड्स, आदि सभी बीमारियों में इससे आशातीत लाभ हुआ है। संसार में लाखों लोग जो असाध्य बीमारियों से पीड़ित थे, सहजयोग में आकर स्वस्थ हो गये हैं।

दिल्ली के लेडिज हार्डिंग मेडिकल कॉलेज में भी डॉ. यू.सी.राय ने विभिन्न रोगों पर सहजयोग के प्रभाव का परीक्षण किया है। इस परीक्षण से यह सिद्ध हो गया है कि सहजयोग को अपनाने वाले हर तरह के रोगियों को सबसे अधिक लाभ हुआ । इस अनुसंधान में कुछ विद्यार्थियों को पीएच.डी की उपाधि दिल्ली विश्वविद्यालय ने प्रदान की है। इन परीक्षणों का वर्णन **मेडिकल साइन्स इनलाइटेन्ड** नामक किताब में प्रकाशित है। संसार में ऐसे बहुत से लोग हैं जो मृत्यु के कगार पर थे पर सहजयोग को अपनाकर एक स्वस्थ व्यक्ति हो गए और आज वे सहजयोग के साथ साथ अपना कार्यकर्म भी अच्छी तरह से कर रहे हैं। ☒

सम्पर्क : सी-55, न्यू मुल्तान नगर, दिल्ली-56

स्थानांतरण

डॉ॰ राजनारायण राय

"जुकाम हो गया है राहुल बेटे को।" मैने बताया दबे -खुले स्वर में।

"बुखार तो नहीं है" नितम्ब तक फैलेक-लटकते बालों में कंधा देती सरला ने पूछ।"

राहुल की नाड़ी पकड़ अनुमान से कहा, "लगता है 100° के आस-पास होगा।" तब तो कैजुअल लीव लेनी पड़ेगी।

"और क्या? में लूं या तुम ... "कह अपनी नजर सरला के चेहरे पर टिका दी जिसमें तनाव के साथ ऑफिस जाने का उत्साह था "आज तो नहीं ले सकती। वी आई पी का विजिट है। दम मारने को भी फुर्सत नहीं मिलेगी। वर्क शिड्यूल को चेंज करवाना बेहद मुश्किल है।" अपने खुले केशों को एक मोहक स्टाइल में जुड़े का आकार देती हुई बोली" "तब! प्रश्नसूचक नजर से सरला के पाउडर पुत्ते चेहरे को देखा जिस पर साफ इबारत की थी कि वह निर्णय नहीं बदल सकती। मैंने पराजय की एक लम्बी सांस छोड़ते हुए कहा," मैं ही लेता हूँ" राहुल के बेड पर से उठ एक फाइल में से चौकोर कागज निकाल लिख दिया कि अस्वस्थ्ता के कारण कार्यालय आना संभव नहीं है; इसलिए एक दिन का आकस्मिक अवकाश दिया जाए।

सरला ने बड़ी तेजी से जूड़े में चमेली के ताजे सफेद फूलों का गजरा लगाया फिर गुलाब का अर्ध विकसित फूल। कल स्टाइल थी मालविका, आज है सुलभ।

चार वर्षीय राहुल छींकने लगा था। रूमाल से उसकी नाक साफ कर दी और पैताने पड़ी बादामी रंग की लोई खींच उसकी छाती तक फैला दी। अपनी मम्मी को जाते देख राहुल ने रोते हुए प्रिंटेड सिल्क साड़ी पकड़ने के लिए हाथ बढ़ाया पर सरला ने आगे बढ़कर प्रेस की हुई साड़ी बचा ली। मम्मी आगे मत जाओ मम्मी...।"

बीमार राहुल की आवाज में घिघियाहट थी। "अच्छे बेटे नहीं रोते।" सरला ने समझाती -पुचकारती हुई राहुल के गाल को चूमा और काले रंग का वैनिटी बैग उठा निकलने लगी। मैंने आवेदन पत्र थमाते हुए कहा, "मि०भल्ला को दे देना। भूलना नहीं। उनका क्वार्टर देख ही है- नीम के पेड़ के नीचे है।"

"अच्छा," कह चलते-चलते वैनिटी बेग में रख सरला तेजी से निकल गई -तीर की तरह । शायद देर हो रही थी ऑफिस जाने में।

राहुल सिसकता रहा और मैं गेट से बाहर जाती हुई उसकी मम्मी को, अपनी पत्नी को, उससे ज्यादा आफिस सुपरिटैंडेंट को देखता रहा। कुछ ही क्षणों में वह छरहरी रूपसी ओझल हो गई। "बाई..बाई" न उसके होंठो से फूटे न मेरे। धड़ाक से किवाड़ बंद कर दिया हाथों से बिना वेभ किए। हाई हिल सैन्डल की आवाज धीरे धीरे मंद पड़ती गई फिर खो गई ।मैं उस प्रखर अनी की चुभन महसूस करता रहा जो अपने जाये राहुल के प्रति बरती जा रही उपेक्षा और लापरवाही से उग आई थी। लगा, सरला को अपनी संतान से ज्यादा अपनी कैरियर की चिंता है।

यौवन और सौंदर्य से लबालब भरी प्याली सरला को पिछले माह यू.डी.सी. के ग्रेड में पदोन्नति मिली थी। तब से वह कितनी खिली-खिली लगती है-गोर गोल मुख के रक्ताभ अधरों पर उन्मुक्त हास, पर गति में गंभीरता। शाम को लौटी थी मिठाइयों के डिब्बे के साथ आधुनिकतम फैशन की साड़ियों और ब्रा का पैकेट लिए। कमरे में आते ही मेरे मुँह में बर्फी का आयताकार टुकड़ा डाल दिया,हर्षोल्लास में खिलखिलाती। अपने कपड़े बदलने के पहले ही पैकेट फाड़ साड़ियों को फैलाकर दिखाती हुई पूछा, "कैसी है."

पहचान और पसंदगी को दाद देता हुआ कहा था,"बेहद सुंदर मन-भावन। यह नीली जरी बार्डर की साड़ी तुम्हारे रूप-लावण्य को खूब उभारेगी।"

पुलक्ति सरला बोली, "वैसे हीं पहनकर कल से जाऊंगी।"

"जाना ही चाहिए। " मैंने कहा था।

तब से सरला दफ्तर जाती साड़ी में सज-संवरकर, सेंट की मादक सुगंध बिखेरती हुई, हरिणी-सी कुलांचे भरती हुई। लगता, वह फाइल-फोन और टेबल टाइपराइटर पर टंगे किसी दफ्तर में नहीं किसी पर्वतीय उपत्यका में बने अभयारण्य में जा रही हो -स्वच्छंद विहार के लिए।

गत रविवार की बात है। सुनील गगन में बादल के टुकड़े सघन होते जा रहे थे। राहुल के सिर पर लगे साबुन के बगुले के पंख से झाग को मैं धो ही रहा था कि अल्हड़ मेघखण्ड से बूँदे गिरने लगीं-टपाटप। मेरी पत्नी सरला इजी चेयर पर बैठी अखबार के रविवारीय परिशिष्टांक में

डूबी-सी थी। तार पर टंगे सूखे कपड़ों को भींगते देख मन में आया कि कहूं, नहीं आदेश दूं, ऐसा हुक्म जिसमें दबंग पति की कठोरता-दृढ़ता होती है कि सरला, अखबार फेंको और कपड़े उतार लो। पर उसे उठते न देख, झाग में राहुल को लिपटे छोड़, मैं खुद ही झट उठ-भागकर न केवल अपने बल्कि उसके पीले बॉर्डर और बूटियों वाली कोटा साड़ी, पीताभ लो कट ब्लाउज, ब्रा, पेटीकोट, टॉवेल आदि खींच ले आया और बरामदे में पड़ी कॉट पर रख दिया। उदास रोनी सूरत लिए राहुल के सिर पर प्लास्टिक के नीले मग से पानी उडेलते हुए मैं सोचा रहा कि सरला बूंदों को टिपटिपाहट से वास्तव में बेखबर है या जानबूझकर अखबार पर अपनी आंखे-गड़ाये हुई है। क्या वह चाहती है कि राहुल को नहलाने-धुलाने, जूते कपड़े पहनाने, तेल कंघा करने, कपड़े इस्त्री करने जैसे तुच्छ छोटे-छोटे कामों को अब मैं ही करूं या इसके बहाने यह जानना कि मेरा पति अब हुक्म दे सकता है या नहीं। फिर मेरे होठों से क्यों नहीं आदेश का तीर निकला 'क्या अब मुझमें दमखम नहीं'।

राहुल आंखों में झाग जाने से चिल्लाने छटपटाने लगा था। मैंने निर्दय बाप की तरह चुप कराने के लिए कान उमेठ दिया। भयभीत राहुल सिसकने लगा था। अब बिना किसी प्रकार का विरोध किए उसने मेरी सारी क्रियाओं जैसे पानी डालना, सिर धोना, टॉवेल से पीठ रगड़ना आदि को स्वीकार कर लिया-पराजित सा। बालों पर कंघा फेर पैंट-शर्ट पहना उसे कुछ ही मिनटों में तैयार कर दिया। सरला मेरे सारे कृत्यों को देख रही है, एसा मुझे लगा, पर न हिली-डुली, न कुछ बोली, अखबार में खोई डूबी रही। राहुल अपने को दिखाने के लिए बोला, "मम्मी...।"

"अरे! राहुल बेटा तो आज हीरो बन गया।" सरला की इस प्यार भरी बात सुन वह उसकी कुर्सी के पास खड़ा हो गया। सरला अब अपने धुले-सजे बेटे के कंधों पर हाथ रख सिने संसार के छपे फोटो दिखाने लगी थी। खमोशी का लिहाफ ओढ़े हुए था मैं, पर अंदर उसकी अखबार प्रियता का सालाना महसूस करता रहा। लगा, सरला इस घर की मालकिन है और मैं एक हुक्म बरदार, कम अक्ल गुलाम। पर पहले तो कभी एसा एहसास न हुआ था।

खूब याद है कि सरला मेरी जीवन-संगिनी बनी थी तब वह सिर्फ दसवीं कक्षा पास, सीधी खुबसूरत छोरी थी। अपने माँ बाप के हजार विरोध के बावजूद उसकी पढ़ाई शुरू करवाई थी। और बी.ए. करा दिया था। बावेला कम न मचा था,नौकरी को लेकर। माँ ने तो एक लम्बा पत्र ही लिखा था :बेटा, नौकरी करने वाली औरतों का कोई भरोसा नहीं। पति को पैर की जूती समझने वाली होती हैं वे। परिवार को ठुकराकर कब चल दे, यह ईश्वर भी नहीं जानता। इसलिए खूब सोच-समझ कर कदम उठाना ताकि आगे तुम्हें पछताना न पड़े । "मेरे पिता श्री ने भी हामी भर दी थी परंतु मैं अचल-अडिग रहा था अपने निर्णय पर। सरला तैयार हो रही थी कहां ! मैंने जोर न डाला होता तो क्या वह ग्रेजुएट हो दफ्तर-द्वार देखती भला तब उसका दोष कहां ! लेकिन किसे पता था कि उसमें ऐसा बदलाव आएगा कि वह पहचानी भी न जा सकेगी क्या माँ की बात सच होने जा रही है, यह सवाल रह रहकर आना फन निकाल लेता।

कई साल पहले का सरला का बुझा चेहरा उभर आया मेरे मानस पटल पर। दफ्तर में ज्वायन करने के लगभग दस दिन बाद-सरला ने सिसकती- बिसूरती शिकायती स्वर में कहा था,"समीर! मैं नौकरी नहीं करूंगी। लात मारती हूँ ऐसी कमीनी जिंदगी पर। " मैं भौंचका रह गया था" उसके फैसले पर। पूछा,"हुआ क्या।"

"तुम नहीं जानते, समीर कि बसों की काम लोलुप भीड़ क्या चाहती है। क्या नहीं सुनना पड़ता। माल ताजा है यार एक बार मिल जावे... ब्यूटी क्वीन की लचकती कमर तो देख हाय मर गया...ऐसे जुमले तो रोज मेरे कानों टकराते हैं। मैं अनसुनी बनी रहती हूँ .. और बसों में ठुसी भीड़ का कोई मनचला मेरे अंगों को छूता है, कोई मसलता है। इतना ही नहीं, उतरते समय निपल दबा देते हैं। मेरा बॉस भी साला किसी न किसी बहाने अपने केबिन में बुला लेता है और अपने जूते से मेरी सैंडिल दबा देता है.. पता नहीं, क्या मिलता है उसे "कहती-कहती सिसक पड़ी थी। मेरी छाती से लग बड़ी आजिजी से उसने कहा था,"समीर, ऐसी नौकरी-चाकरी को ठुकराने दो...।

उसके दोनों कंधों पर हाथ रख उसे समझाया था,"इन छोटी-छोटी बातों को लेकर उदास -निराश न हो। किस काम में उलझन-परेशनी नहीं है तुम्हीं बताओ?लगी लगाई नौकरी मत छोड़ो। किसी तरह एक महीना तो पूरा कर लो... फिर छोड़ देना.. "

सरला धीरे-धीरे अभ्यस्त हो गयी।

अन्तत: विजय मेरी ही हुई थी लेकिन अब यह पराजय में क्यों परिणत होती जा रही है।

सरला में परिवर्तन का प्रथम बीजांकुर स्नातक की उपाधि मिलने पर ही ललित

होने लगा था।

एक दिन सात बजे, संध्या काल में, प्लास्टिक के थैले में एक पैकेट ब्रेड बिस्किट और ढाई सौ ग्राम टमाटर लटकाए लौट रहा था। देखा सरला नयी पोर्टेबुल टी. बी. का कार्यक्रम देख रही है और उसकी उंगलियां यंत्र चालित-सी सलाइयों से ऊन के फंदों को उलट-पलट कर सुन्दर उभरा हुआ डिजाइन बना रही थी। मैं चौंका फिर सेचने लगा कि यह स्वेटर किसके लिए बनाया जा रहा है। मेरे लिए या राहुल के लिए बुना जाता तो निश्चय ही राय-मशविरा ली जाती, क्वालिटी-कलर को लेकर। मेरी सवालिया निगाह सरला से छिपी न रही। "बोलो,"कल बॉस ने अनुरोध किया था कि दिसंबर आने के पहले एक जैकेट बना सकें तो आराम रहेगा। सौ बुन रही हूँ। क्या करती। "नौकरी में ना भी तो नहीं कहा जाता।"

चिढ़ जलन को मुस्कान में छिपाकर मैंने कहा,"तुम्हारे बॉस का कलर च्वाइस तो अच्छा है-चटक रंग-लेमन और कत्थई।" " बॉस ने ," सच कहूँ तो फुल चुनने का काम मुझे ही दिया था। सरला खुली। उसका गर्वोद्दीप्त चेहरा देख कर लगा कि कहूँ कि अब बॉस भी अधिकार जलाने लगा। पर मौन रहा मैं। मुझे जरा भी भा नहीं रहा था, टी.वी. पर आ रहा लोक नृत्य। सोचने लगा कि बॉस के लिए दो बरनियां जा चुकी हैं- अचारों की, एक लाल मिर्च की, दूसरी आम की। अब नयी डिजाइन की जैकेट भी! हद हो गई! वह तो स्वार्थ का क्रूर पंजा फैलाता जा रहा है। कहीं गहरे अंत:में महसूस किया कि सरला के दिलमें राहुल के आगमन ने दूसरे दर्जे में डाल दिया है मुझे और अब उसके बॉस ने तीसरे में ढकेल दिया।

वह एक आदर्श पत्नी की भांति यात्राके लिए घर से निकलते समय मेरा चरण स्पर्श करती थी। लेकिन अब नहीं। क्योंकि पति-पत्नी का संबंध सूत्र छिन्न-भिन्न हो गया था, मात्र छलावा था। जब मैं दफ्तर जाता था तो मुझे सरला का अधरामृत अपरिचत ही मिल जाता, कभी, राहुल यदि अनुपस्थित रहा तो लौटने पर भी कपड़े बदलने के पूर्व ही और अब मेरे इन होंठों में उष्मा नहीं रही या उसमें उन्माद- आवेग नहीं सच तो यह है कि प्रमोशन ने सरला को इतनी ऊँचाई पर खड़ा कर दिया कि मेरे होंठ उसके आरक्त अधरों को देख तड़प सकते हैं पर छू नहीं सकते।

सूरज के अंधकार में गिरफ्त होते होते राहुल पड़ोस से लौट आया था। सरला की नजर उसके मिट्टी लिथड़े जूते और पैंट पर पड़ी। आग बबूला हो उसने एक तमाचा उसके गाल पर जड़ दिया यह बड़बड़ाती हुई कि आज फिर जूते कपडे .गंदे कर लिया । स्टूपिट ... साबुन पालिस में खर्च हीं नहीं होता जैसे क्या-क्या लाकर दूँ तुम सबको पौधों में उलझे हाथ मेरे रुक गये। तेजी से पहुंच राहुल को गोद में उठा पुचकारता रहा यह सोचता कि उसकी पिटाई सरला के दबे क्रोध का फल है या अपनी कमाई का धौंस दिखाने का बहाना।

मानता हूँ, मुझसे अधिक चालाक और समझदार है, घर को व्यवस्थित ढंग से चलाती है और सच कहूँ तो रंगीन टी.वी. और फ्रिज से इस पुराने मकान को उसी ने सजाया है। इसका मतलब यह तो नहीं कि मुझे अपने ही मकान में बेकार या सेवा-निवृत समझा जाए। सरला आज दो ही बजे दफ्तर से आ गई थी। लंच के बाद बेड पर लेट गई। पूछ बैठा, "कोई खास बात दफ्तर की" नहीं, बस में खड़ी-खड़ी थक गई।

मैं बेड पर गया और बोला-"लाओ अंगुलियां बजा देता हूँ" रहने दो पति देवता होता है। उससे यह काम, मैं उठ कर चला आया। तो क्या पत्नी की कमर पैर कोई दूसरा दबाए मसाज करे? मुझे लगा यह मात्र बहाना है मुझसे दूर रहने का और वह कुछ हीं मिनटों में सो गई थी। देखा कमरे की टेबल पर हाल हीं में खरीदा हुआ सफेद लाल रंग का पर्स पड़ा हुआ है।

एक विदेशी पत्रिका में पढ़ा था कि दफ्तरों की रूपसियां अपने पर्स में बराबर रखती हैं- कॉस्मेटिक्स, सेंट में डूबा हुआ रूमाल व इत्र की शीशी और गर्भ-निरोध क टेबलेट या कन्डोम के पैकेट बस का पास आदि। मैंने सरला के पर्स में खूब ध यान से झांका हीं नहीं हाथ डाल कर देखा,फूल की आकृति से युक्त रूमाल,बस का पास और 10 का नोट। मेरे दिल को बेहद सुकुन मिला कि सरला विदेश की दफ्तरों की बाला नहीं बनी। पर क्या पता वह दफ्तर में हीं अपने मेज की दराज में कुछ रखती हो वह कहीं देख न ले, इस भय से मैं वहां से हट टायलेट में घुस गया दबे पांव।

सोंच के अंध कूप से निकलने के लिए छटपटा रहा हूँ मैं। फिर भी उसके गंदे ठहरे पानी में डूब जाता हूँ मंडूक सा। लगभग पंद्रह वर्षों से एल.डी.सी. में ही कलम घसीट रहा हूँ कोई प्रोत्साहन नहीं, न ओवर टाइम ,न ऊपरी आमदनी। कैसी नौकरी है क्या बदकिस्मत है या पूर्वजन्म के कुकर्मों का फल भोग रहा हूँ। नहीं, सच यह है कि समाज ने केवल लेडिज के लिए ही प्रमोशन बनाया है। उसमें भी चिर कुमारियों और परित्यक्ताओं के लिए आरक्षित रखा है। पुरूष सत्तात्मक समाज में तो यही

होगा। जब नारियों का एक छत्र राजय होगा तो पुरूष भी स्पर्श-सुख दे प्रमोशन की सीढ़ियों को फांदता जाएगा। सुन्दर किशोरों तरूणों की मांग कितनी बढ़ जाएगी ..मैं भी।

कल भोजनोपरांत सरला काट पर लेटी एक सस्ता-सा पर नया फुटपाथी उपन्यास के पन्नों को पलट रही थी, मैं टी.वी. पर आ रहे सिरियल को देख कर उठा। अचानक मेरी नजर सरला के हिलते हुए पैरों पर पड़ी। मैं एक क्षण तक साड़ी से बाहर झॉंकते लाल चिकने तलवों और अंगूठों को देखता रहा। उन्मादित हो उनका स्पर्शानंद पाने के लिए अपनी अंगुलियों को बढ़ाया ही था कि वहीं रुक गई वे। जैसे विद्युतध ारा के रुक जाने पर लौह यंत्र करण ठहर जाता है, लगा कि वह मेरी पत्नी नहीं यु. डी.सी.के ग्रेड की पदाधिकारी है... ऑफ्सि में अपने बॉस के कंधे-कानों को अपने उरोज-उभार का स्पर्श देती हुई फाईल दिखाने वाली-चपला...क्यूट। मैं अब नहीं छू सकता उसे क्योंकि वह इतनी उँचाई पर पहुंच चुकी है कि मेरे हाथ छोटे पड़ गए हैं। नहीं, मैं ही बौना हो गया हूँ ।

रात में निवार की खाट पर मैं सोया था अकेला, दूसरी पर सरला और राहुल। "दफ्तर पहुंचकर रजिस्टर में हस्ताक्षर किया ही था कि संदेश आया, साहब ने याद किया है आप ...।" मैं पसीना पोंछता, होंठो पर मुस्कुराहट चिपकाए पूछा, "मे आइ कम इन सर!"

"यस कम इन!"

कक्ष में इंटर करते ही देख कि सरला बैठी है। आग्नेय नेत्रों से छूरती-कड़कती आवाज में पूछा, "यु ब्लडी समीर वाइ यू आर लेट टू डे।"

मेरे मुँह से घिघियाहट निकलने लगी "सॉरी सर, एक्स्ट्रीमली सॉरी मैडम "आंखे खुल गई थीं मेरी।

सरला ने मुझे झकझोरते हुए का, "सपना देख रहे हो क्या।"

मैं मौन रहा। सरला की नाक कुछ ही मिनटों में बजने लगी। पर मैं सोच के जंगल में पुनः भटकने लगबा। अचानक याद आया कि पहले सरला के साथ एक-दो किलोमीटर दूर गांवों और हरी चादर में लिपटे खेतों की ओर निकल जाता था। कभी वह टाल जाती तो अनेक प्रकार से मनुहार मान करता। वसंत ऋतु में सरसों की पीली चादर में लिपटे खेतों की मुलायम दूबों से ढकी पगडंडियों पर दोनें साथ-साथ चलते तो कभी-कभी वह फिल्मी गीतों को गुनगुनाती। उसके रस भरे लाल अधरों को छू लेने के लिए होंठों को बढ़ा देता,पर वह वहाँ अनस्पर्शित बचा लेने में शालीनता मानती। फिर भी, लगता, जिस सुख की कामना छात्र-जीवन में की थी वह यहीं है. . यही है,पर अब उसके साहचर्य में मेरे अन्तर्मन को कुछ बांधने क्यों लगता है. एल आई जी के दो कमरों के इस मकान में मेरा दम क्यों घुटने लगता है. कब तक इस दमघोंटू , मनहूस में, दबी'-दबी घिसटती ,लंगड़ाती जिन्दगी की यातना भोगता रहूंगा. मेरा मन पंछी विराद अन्नत नीला आकाश में उन्मुक्त विहार करने के लिए तड़फड़ा रहा था।

अब मैं उठ बैठा था। दफ्तर की घटनाएं याद हो आई। तीन माह पहले मेरा तबादला हो रहा उत्तर काशी के अत्यंत पिछड़े पहाड़ी कस्बे में जहां जाने से सबने इंकार कर दिया था। हमारे बॉस तिवारी जी ने कॉफी का प्याला पेश करते हुए अनुरोध किया था। मि. समीर यहां से आपका ट्रांसफर कर दिया जाए तो ..। कह मेरे चेहरे पर उभरी रेखाओं को वे पढ़ने लगे थे।

"सर! ऐसा न कीजिए प्लीज सर ! मेरा बहुत नुकसान हो जाएगा।"

"प्रोमोट करवा देंगे। अब तो खुश हैं"

"पत्नी भी यहीं शहर में लगी है नौकरी पर बच्चा भी स्कूल जाने लगा है। मुआफजी चाहता हूँ।"

"प्रोजेक्ट का काम सफल करेगा मि. समीर। कैसे होगा।"

"सर प्रदीप, मैथ्यू जैसे किसी बैच्लर को भेजना ठीक रहेगा।"

"ऑल राइट"। सिगरेट का कश खींचते हुए बॉस बोले "यू में गो नाउ"। भला कौन जाना चाहेगा उजाड़, बियाबान में, झोंपड़ियों में रहने, जंगली जेसा रहने। पतनी चाहं, पति सौ किलोमीटर दूर। कितनी विनती, कितनी गिड़गिड़ाहट, कितनी धूल फॉंकने के बाद अपना ट्रांसफर रूकवाया था कितने-चक्कर लगवाए थे बाबूओं से ले कर साहब तक। बाल-बाल बचा था बर्फीली जगह में जाने से। पर अब लग रहा है कि मैंने एक हिमाकत कर डाली थी इसी सरला और राहुल के लिए। अब क्या होगा. कल ही पैर पकड़ कर प्रर्थिना करूंगा कि आप, जहां चाहे, मेरा ट्रांसफर कर दें सर। नजरे इनायत होगी मुझपर। शुक्रगुजार रहूंगा-ताउम्र। जानता हूँ, साथी मुझे सनकी कहेंगे। क्या जिंदगी है पहले तलुए चाटे स्थानांतरण आदेश रुकवाने के लिए, अब नाक रगड़नी है करवाने के लिए।

अचानक मेरी नजर पड़ी अलार्म वाच पर, टॉर्च जला कर देखा "अरे छह बज रहे हैं!" झट उठ स्कूटर निकालने लगा मैं।

संपर्क:- "नारायणीयम्"
227, पंडित वाड़ी, फेज-2
पो॰-प्रेमनगर, देहरादून

युग परिवेश की नाना गतिविधियों के ताने-बाने से बना रंगीन चित्रपट

महात्मा गांधी जी से प्रदत्त सांस्कृतिक राष्ट्रीयता के रथ पर आरूढ होकर सत्य, अहिंसा के अस्त्र-शस्त्र धारण कर ग्रामोद्योग रूपी ग्रहमंडल की शोभा के दिव्य आलोक में, स्वतन्त्र भारत की कर्म वीथी का एक कर्मठ अम्लान निष्ठा के साथ, एकाग्रचित्त एवं सीधे सादे और उच्च विचारों का, स्पृहणीय आदर्श व्यक्तित्व का, धनी होकर समस्त समाज के लिए भव्य-दिव्य- चिर-वन्ध महान् व्यक्ति के रूप में शोभायमान हैं - पूज्य श्री शोभाकान्त दास ! जो इस पुण्य भारत की गरिमा सांस्कृतिक विशेषताओं की संस्था को अपना लक्ष्य बना लेता है, जिसकी दृष्टि में राजनीति के क्षेत्र चरखे से बढ़कर और कोई चीज आकर्षक और प्रयोजनमूलक नहीं दिखती, जो घर-गृहस्थी में उत्पन्न प्रेम-एकता की भावना को व्यष्टि और समष्टि के लिए सबसे बड़ा संबल मानता है, जिसके लिए कदापि सोने के चमत्कार में से प्रलोभन नहीं, जो आज भी भौतिकता की तमाम सुविधाओं के होते, सूत कातना और चरखा चलाना अपना कर्म-धर्म मानता है-ऐसा व्यक्तित्व **'शिखरों से ऊँचा'** है । इसलिए मानवीय मूल्य ही इनका धन-वैभव है। उभरती नाना परिस्थितियों में से व्यक्ति-वैशिष्ट्य किस तरह निष्ठा के साथ, असंगतियों और विषमताओं से जूझता हुआ, जीवन क्षेत्र में अपना अपनत्व घोल सुन्दर-सुखद-सहज तनाव मुक्त परिवेश का सृजन का मानव जीवन का भरपूर आनन्द लेकर आत्मविभोर हो जाता है - इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है **'शिखरों से ऊँचा'** उपन्यास का नायक श्री शोभाकान्त दास ! जो क्रान्तिकारी, स्वतन्त्रता सेनानी, समाजसेवी, निःस्वार्थी, परोपकारी एवं सतपथगामी हैं ।

अपने गुरु जयप्रकाश तथा उनकी अर्धागिनी प्रभावती, जिन्हें ये दीदी मानते हैं, दोनों के प्रति आज तक इनके मन में श्रद्धा भक्ति है - उनके अनन्य प्रभाव को उत्कंठ से स्वीकार करते हैं । स्वतन्त्रता सन्ग्राम के महान् नेताओं के सम्पर्क में, रामधारी सिंह दिनकर प्रभृति साहित्याकारों के सानिध्य में, इस राष्ट्र भक्त एवं समाज सेवी व्यक्तित्व-विकास में किस तरह प्रेरणा एवं प्रेरक शक्ति पायी-यह इस उपन्यास की प्रतिपाद्य है ।

यह उपन्यास इनके जीवन के चंद महत्वपूर्ण प्रसंगों में इनके युग परिवेश की नाना गतिविधियों का ताना-बाना बनाकर रचा गया रंगीन चित्रपट है। जिस पर, भारत का स्वतन्त्रता-संग्राम, वर्तनशील सामाजिक परिदृश्य, नैतिक मूल्यों का ह्रास-विकास, नारी की सबलता-दुर्बलता, साबरमती और गंगोत्री-शिवानन्द आश्रम की धार्मिक-आचार रीति-नीति एवं उनमें उभरता राष्ट्र प्रकृति के पंच भूतों का वैज्ञानिक विश्लेषण, योगाभ्यास से प्राप्त शारीरिक और मानसिक शक्ति सृष्टि का अलौकिक अपूर्व आश्चर्य, जीव-विकास का रहस्य, मानव के स्वाभाविक गुण दोष, समाजवादी चेतना की अपार शक्ति, बिहार एसोसिएशन का सेवाव्रत आदि नेक विषय वस्तुओं के साथ यमुनोत्री, गंगोत्री तथा हिमालय के ऊँचे शिखरों की चिन्ताकर्षक पृष्ठभूमि में, मिथिलांचल में हरिनन्द लाल के कायस्थ परिवार में उनके पुत्र नागेश्वरलाल दास और बहु भालेश्वर देवी की दूसरी संतान के रूप में जन्में श्री शोभाकान्त के उपादेय व्यक्तित्व चित्रित करने में उपन्यासकार डॉ. मधुधवन साधुवाद के पात्र हैं । श्रीमती सुकन्या जी के शब्दों में श्री शोभाकान्त का चित्र देखें - **'मेरे पति ने जीवन को निःस्वार्थ भाव से समाज के हित- चिन्तन में समर्पित किया है'** । अपनी विचार शक्ति, संवेदना शक्ति और कृतित्व शक्ति का मेल कर अपने को विकसित किया। उनकी शक्ति का साक्षात्कार, विश्वप्रेम, परोपकार ओर दयालु कोमल भावनाओं से होता है ।

यह उपन्यास श्री ज्ञानशरण के शब्दों को दोहराते हुए शोभाकान्त जी ने अपने चेतन मन को समझाया है - -हमारे आध्यात्मिक अस्तित्व के लिए धर्म वैसा ही आवश्यक है जैसा पार्थिव अस्तित्व के लिए कर्म । वास्तव में इनकी भावनाओं तथा विचारों के समक्ष पर्वत भी बौने लगते हैं । जो वाणी से सदा मधुर बोलता है और सत्कर्म करता है, वह व्यक्ति समय पर बरसने वाले मेघों की तरह लोकप्रिय होता है। आप में वे समस्त गुण पैदाइशी हैं इसलिए आप शिखरों से कहीं ऊँचे हैं शोभाकान्त जी। ☒

समीक्ष्य पुस्तक : शिखरों से ऊँचा

समीक्षक : डा. जयलक्ष्मी सुब्रहमण्यम

उपन्यासकार : डा. मधुधवन

पता : के - 3 अन्नानगर ईस्ट, चेन्नै-600102

चुम्बन : प्रेम अभिव्यक्ति या रोग संवाहक

✍ गुलाब चंद कोटड़िया

लंदन टाइम्स पत्रिका में प्रकाशित मानव शरीर के शोधकर्ताओं ने बी. बी. सी. के लिए एक रिपोर्ट तैयार की। उसमें अन्य शारीरिक क्रियाओं के साथ-साथ मनुष्य चुम्बन लेने-देने में कितना समय व्यतीत करता है उसका भी समय तय किया है। मनुष्य अपने प्रिय पात्र के चुम्बन में पूरे जीवन में मात्र दो सप्ताह अर्थात् चौदह दिन ही व्यतीत करता है इससे अंदाज लगाएं कि मनुष्य की जिन्दगी कितनी कंगाल है।

चुम्बन के अन्य शाब्दिक अर्थ है- अधरपान, चुमकार, चुम्मा, चुम्मी, चुम्माचाटी, मिठ्ठी पप्पी देना, बोसा या इंग्लिश में किस। चीन व जापान में यह शब्द ही नहीं है।

भारतीय समाज में हमारी अपनी सुव्यवस्था है कि प्रगट में पति-पत्नी या प्रेमी-प्रमिका चुम्बन नहीं लेते और इस क्रिया को प्रगट में अश्लील व मर्यादाहीन व्यवहार मानते हैं जबकि पाश्चात्य सभ्यता में इसे बुरा नहीं माना जाता। यों देखा जाए तो चुम्बन एक महान् अभिव्यक्ति ही है। मां-बाप अपने शिशु को प्यार-स्नेह से चूमते हीं है और आह्वलादित होते हैं। पति पत्नी में चुम्बन का आदान प्रदान उत्तेजना भर देता है। प्रेमी प्रेमिका में तो और भी अधिक। जीवन के अलग-अलग उम्र में अलग-अलग प्रतिक्रियाएं होती हैं। बड़े-बूढ़े बच्चों का माथा चूमते हैं।

चुम्बन के बारे में हमें कोई पूर्व स्थापित इतिहास नहीं मिलता। जहां तहां उल्लेख मिल जातें हैं। अपाषाण काल में जब सभ्यता इतनी विकसत नहीं हुई थी तब भी स्त्री-पुरुष आपस में शारीरिक मिलन करते ही थे तब किन्हीं अवयवों के मिलन से, उन्हें स्पर्श मात्र से सुखद अनुहभूति होती होगी या संवेदनशील अंग से उत्तेजना पैदा होती ही थी।

वैज्ञानिकों ने खोज की कि चुम्बन में ऐसी क्या खासियत है व जीवन में वह प्रेम व स्नेह की क्यों आवश्यक क्रिया माना जाता है। वे मानते हैं कि चुम्बन करते समय होठों के नीचे सिबेसियल ग्लेंड होते हैं जो ऐसे रसायन पैदा करते हैं जो प्रेमी युगल को आनन्द की अधिक प्रतीति कराते हैं बर्फ गलने जैसा भाव पैदा होता है और उनके शरीर में स्फूर्ति का अचानक संचार होकर एक दूसरे में समा जाने की अनुभूति होती है। .

लंदन के एक मेडिकल कालेज की एक छात्रा ने 30 युगल प्रेमी-प्रेमिकाओं के होठों का अध्ययन व सर्वे किया और जानना चाहा कि चुम्बन से किस प्रकार के रसायन पैदा होते हैं। शारीरिक विज्ञान के अनुसार होंठ स्नायु रेशों(फाइबर्स) के अस्थिविहीन अंग है और उनमें बीच-बीच में कोशिकाएं हैं जो अत्यन्त संवेदनशील होती हैं।

चिकित्साशास्त्रियों ने यह भी माना है कि चुम्बन मात्र स्नायु का मिलन नहीं है उससे भी कहीं अधिक होठों का स्फुरन बहुत ही उलझन भरी क्रिया है। प्लास्टिक सर्जन डाक्टर मेकमूथर ने अपनी टीम के साथ चुम्बन का कम्प्यूटर द्वारा अध्ययन किया और गहन अध्ययन आज भी चालू है। उनके अनुसार होठ का चित्र या पाषाण मूर्ति शिल्प कृति को देखकर कोई दर्शक रुक नहीं जाता । होठों को सुन्दर तो उसमें पैदा होता स्फुरण व हलन चलन बनाते हैं। होठों के नारे तो हर स्त्री-पुरुष करते है।। महिलाओं में ये नखरे कुछ अधिक ही होते हैं। होठ गोल करना, होंठ बिचकाना, सीटी बजाना, होठ से फुर्र शब्द करना, फ कहना ये हम रोजमर्रे के जीवन में देखते ही हैं। डा. मेकगूथर की टीम ने लेखक बेकेट के नाटक 'नॉट आई' में साढ़े ग्यारह मिनट लम्बा चुम्बन करने वाली अभिनेत्री बिली व्हाइटलोना के चुम्बन की वीडियो भी उतारी और उसका अध्ययन किया। यही नहीं डॉ. मेकग्रूथर की टीम ने विश्व में प्रथम बार चुम्बन करते वक्त होठों की त्वचा के नीचे क्या प्रतिक्रिया होती है उसकी भी फिल्म उतारी। इस मेग्नेटिक रेजानेंस इमेज यानी चुम्बन के समय स्नायु स्फुरण का क्या परिवर्तन होता है उसे पर्दे पर फ्रेम दर फ्रेम देखा जा सकता है उसे फास्ट फारवर्ड भी किया जा सकता है। आरम्भ से अंत या अंत से आरम्भ तक देखा जा सकता है। तंतुओं के अध्ययन से पता चलता है कि चुम्बन एक जटिल प्रक्रिया है। चेहरे पर उससे 34 स्नायु प्रभावित होते हैं जो होठ मिलने से ही सक्रिय जो जाते है। उसके उपरान्त जबड़े भी हरकत मे आ जाते हैं। चुम्बन से शरीर में विद्युत प्रवाह बहने लगता है। चुम्बन करने वाले के होठों के ऊपर इलेक्ट्रोड

मस्तिष्क से होकर चेहरे के स्नायु को किस प्रकार प्रभावित करते हैं उसका भी अध्ययन किया। चुम्बन के समय विद्युत प्रवाह का अनुभव होने का कारण होठों के तंतु तेज व गतिमान होकर मस्तिष्क द्वारा चेहरे के तंतुओं तक पहुंचाती इलेक्ट्रोड केमिकल बहुत जोरदार होती है। चुम्बन करते वक्त चुम्बन करने वाले व्यक्ति की जीभ ऊपर के होंठ को स्पर्श करती है। परन्तु होठों की मर्यादा भंग नहीं करती।

चुम्बन के कई प्रकार हैं। अलग-अलग व्यक्तियों के अलग-अलग तरीके होते हैं और भाव भी जुदा-जुदा होते हैं। रूसी कम्युनिस्ट सर्वोच्च पोलिट ब्यूरो के सदस्य जब अपने साथियों को चुम्बन देते हैं तो वे बड़े ही रूखे होते हैं। यही हाल अरब देश के नेताओं के चुम्बन के आदान-प्रदान में होता है।

अंग्रेज रूढ़िवादी कौम है और अपने स्वभाव जल्दी नहीं त्यागती है। चार वर्ष पूर्व आलिंगन के बाद चुम्बन पर खूब हो हल्ला मचा था। अभिवादन करते वख्त दूसरे के गाल पर चुम्बन दिए जाने की प्रथा है इसका अंग्रेजों ने विरोध किया और विरोध का कारण था कि चुम्बन से ऊंच -नीच का भेदभाव भुला दिया जाता है। इससे जातीय सम्प्रदायवाद को उत्तेजना मिलती है और चुम्बन फ्रांसिसी संस्कृति का प्रतीक है। ब्रिटेन की ग्रीन पार्टी ने सन् 1995 में अपनी वार्षिक आम सभा में अभिवादन योग्य आलिंगन पर हो हल्ला मचाया था। पार्टी प्रवक्ता डेविड टेलर के अनुसार सभी को ऊष्मापूर्वक एक दूसरे का आलिंगन करना चाहिए, तब उस पार्टी की महिला सदस्यों ने शिकायत की थी कि आलिंगनकर्ता पुरूष आलिंगन के नाम पर उनके शरीर के कामुक अंगो पर घर्षण करते हैं। इसी बात को ध्यान में रखते हुए स्काटलैंड की गैर सरकारी संस्था द डालर अकादमी ने मार्च 1995 से विद्यार्थियों के एक दूसरे के चम्बन लेने पर प्रतिबन्ध लगा दिया था।

भारत की फिल्मों में चुम्बन पर प्रतिबन्ध था लेकिन 1983 के बाद एक न्यायालय के फैसले के बाद वहां चुम्बन की छूट दे दी। चुम्मा चुम्मा, छम्मा-छम्मा या हम्मा-हम्मा, तम्मा तम्मा गीत बहुत ही लोकप्रिय हुए है।

कविगण होठों को फूल पंखुड़ियों की उपमा देते हैं और चुम्बन पर कई गीत भी लिखे है।

अब इस बात पर भी गैर करें कि हर क्रिया या काम पर भला बुरा सोचा जाता है वहां चुम्बन से हानि-लाभ क्या होता है विचार करें। चुम्बन लेने-देने वालों को भले ही अपार आनन्द आता है पर छूत की बीमारी की तरह कीटाणुओं का संक्रमण भी हो जाता है। यह बात चिकित्साशास्त्री भी मानते हैं। स्वास्थ्य विज्ञानिकों के अनुसार प्रमी-प्रेमिका को होठो पर जब गहरा चुम्बन लेता है तब एक दूसरे के मुंह से औसतन नौ मिलीग्राम पानी, सात मिलीग्राम चर्बी और एक मिलीग्राम दूसरे इन्द्रीय संबंधी पदार्थ आदान-प्रदान कर लेता है। आगे वे कहते कि 250 प्रकार के विषैले तत्व व रोग कीटाणु एक दूसरे के शरीर में प्रवेश पा सकते हैं। इसमें एक वायरस एपस्टीन बार जिसके कारण वलेकुलर बुखार हो सकता है। इसी को किस्सिंग डिसीज भी कहते हैं। यानी चुम्बन बीमारी पर सबसे भयंकर रोग तो एड्स की शम्यता है। होठों के अंदर कि झिल्ली इतनी नाजुक व पतली होती है कि गहरे दबाव से वह अंदर ही अंदर फट भी सकती है और उससे एड्स के कीटाणु मुंह में घुस सकते हैं।

अमरीका के एक मनोवैज्ञानिक डा॰ नेल्सन के अनुसार साइटोमेगालो वायरस कितनी ही बार मौते का कारण भी बन सकता है बड़ी उम्र के व्यक्ति बच्चों को चूमते हैं तो वह रोग लग सकता है। ये सब छुआछूत की बीमारी के कीटाणु है जिससे फ्ल, वायरस, टाईनाइटिस, मेनेजाइटिस जैसे रोग लागू पड़ सकते है। लम्बे समय तक चुंबन या शरीर के गुप्तांगों का चुम्बन करने से यह रोग बढ़ने लगने की पूरी संभावना होती है। चुम्बन से एक अन्य रोग मोनोन्यूकिल ओसिस जैसी जान लेवा बीमारी भी हो सकती है।

पश्चिम के ही एक डाक्टर हर्बट लौगन जिन्होंने चुम्बन का अध्ययन किया है। वे स्वीकार करते हैं कि चुम्बन से टायफाइड, उटारियां, सिफलिस, डिप्थीरिया, कोढ़, पीलिया, इन्फ्लूएंजा, मुंह का कैसर व त्वचा के कई अन्य रोग हो जाने का जाखिम इससे रहता है।

स्विट्जरलैंड के बने विश्वविद्यालय द्वारा किये गए अध्ययन व संशोधनों से पता चला है कि मात्र एक बार के चुम्बन से व्यक्ति के जीवन में तीन मिनट की कमी हो जाती है यानी जीवन में आयु ह्रास हो जाता है।

इस लेख के तथ्यों के लिए श्री राहुल मेहता, संदेश मुबंई का आभार।

उपरोक्त लाभ हानि को देखते हुए हमारी प्राचीन सभ्यता व संस्कृति ने चुम्बन पर निषेध व एक पत्नीव्रत की बात की है वह कितना दूरदर्शी निर्णय है। ☒

सहजभावों के ऋजु गीति-कवि: विन्ध्यवासिनी दत्त त्रिपाठी

डॉ॰ शिवनारायण

हिन्दी के रससिद्ध कवि विन्ध्यवासिनी त्रिपाठी नहीं रहे। पिछले 20 दिसंबर की अर्द्धरात्रि को हृदय गति अवरूद्ध होने से उनका निधन हो गया। अभी 2 दिसंबर को ही अपने 75 वें वर्ष में उन्होंने प्रवेश किया था। उनके हितैषी एवं काव्य प्रेमी उनके अमृत महोत्सव की तैयारी में लगे थे। लगभग साठ वर्षो की लंबी काव्य-साधना में उनकी पहली कविता पुस्तक 'अमलतास दिन' उनके बाल सखा डॉ॰ नामवर सिंह के प्रयास से खूब सज धजकर पिछले वर्ष के आखिर में प्रकाशित हुई। पुस्तक का लोकार्पण दिल्ली में ही नामवर जी के कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ, जिसमें वहां के यशस्वी रचनाकार शामिल हुए। उस आयोजन से आह्लादित मन वे 11 दिसंबर को पटना लौटे। आते ही उन्हें दुखद सूचना मिली कि उनके अनुज पंडित दुर्गादत्त त्रिपाठी का निधन गांव में हो गया। इस खबर से वे अंदर तक हिल गये। उसी बीच एक दिन मैंने उनसे फोन पर सम्पर्क साधा, तो बोले-गांव जाने के लिए मन बना रहे हैं। मन बनाने का क्या मतलब है-पूछे जाने पर बोले कि वे भीतर से अपने को अस्वस्थ महसूस कर रहे है, इसलिए नहीं भी जा सकते हैं। उस बातचीत के दो दिनों बाद ही पता चला कि वे अचेत हो गए हैं। इलाज के लिए उन्हें पटना में शेखपुरा स्थित इंदिरा गांधी आयुर्विज्ञान संस्थान में भर्ती कराया गया है। वे कोमा में हैं। भागा-भागा उन्हें देखने अस्पताल पहुंचा। रात्रि के 8 बजे होंगे। मेरे साथ सुप्रसिद्ध पुस्तकालयविज्ञानी डॉ॰ राम शोभित प्रसाद सिंह एवं अखिल भारतीय भाषा साहित्य परिषद के प्रांतीय अध्यक्ष श्री नृपेन्द्र नाथ गुप्त भी थे। अस्पताल के एक आपात सघन कक्ष में वे अचेत पड़े थे। ऑक्सीजन पर लंबी सांसे ले रहे थे। उनके जमाता एवं पुत्र वहीं थे। सभी घबराये हुए थे। डाक्टर ठीक से बता नहीं पा रहे थे कि उन्हें क्या हुआ है? एक डाक्टर ने कह भी दिया था कि आप इन्हें लेकर किसी भी स्थिति को लेकर तैयार रहिये। निरूपाय हम सभी भारी मन से घर लौटे थे। अगले ही दिन समाचार पत्रों में खबर छपी कि आधी रात को हृदय गति रुकने से उनका निधन हो गया।

त्रिपाठी जी मध्यवर्गीय जीवन के सहज भाव के ऋजु गीति-कवि थे। 60 वर्षो में काव्य साधना में उन्होंने लगभग 300 गीत एवं पचासेक निबंध लिखे। कुल जमा इतना ही। मात्रा की दृष्टि से देखें तो उन्होंने बहुत ही कम लिखा । छपे उससे भी बहुत-बहुत कम। छपने की लालसा से जैसे मुक्त थे। 1962 के आस-पास 'अश्रुफूल' के नाम से गीतों की पांडुलिपि तैयार भी की, तो इससे छपवा नहीं पाए। प्रथम गीत संग्रह 'अमलतास दिन', जिसमें 1945 से 92 तक के चुनिंदा गीत हैं, का प्रकाशन हुआ भी तो हितैषियों के उनके पीछे पड़ने पर अब से दो-तीन माह पूर्व। बाकी सारी चीजें उनकी अब भी अप्रकाशित पड़ी हैं। मंचों-संगोष्ठियों में भी वे इधर दस वर्षो से जा रहे थे। एक तरह से एकांत साधक अल्पख्यात कवि थे, किन्तु ऐसा नहीं हैं कि उनके गीतों ने साहित्य- समाज एवं काव्य-प्रेमियों का ध्यान खींचने में विलंब किया हो। वे लंबे समय से अत्यंत प्रभावशाली कवि के रूप में माने जाते रहे हैं।

दूरदर्शन पर 'अमलतास दिन' की समीक्षा करते हुए नामवर जी ने उन्हें न केवल जटिल जीवन का सहज कवि के रूप में रेखांकित किया, अपितु अत्यंत प्रभावशाली कविताओं के लिए उनका अभिनंदन भी किया है। पुस्तक की संक्षिप्त भूमिका के अंत में त्रिपाठी जी ने लिखा है कि-"अपनी रचनाओं के संबंध में मुझे कुछ नहीं कहना है। मेरे ये गीत अपनी बात अपने आप कुछ नहीं कह सकेंगे तो उनकी वकालत कर मैं इन्हें और कमजोर नहीं बनाऊंगा।" संकलन में त्रिपाठी जी के ऐसे एक भी गीत नहीं हैं जो पाठकों से सीधे संवाद न जोड़ लेते हों। कविता के शब्द तो कुछ दूर तक ही पाठकों के संग साथ चलकर थम जाते हैं, किन्तु उसके भाव अनंत दूरी तक मन मस्तिष्क में अपनी यात्रा जारी रखते हैं। सहज शब्दों में गहरी संवेदनशीलता से गहन भाव को पकड़ना उनकी रचना की खूबी है। गीत उनके मन से फूटते हैं, इसलिए भाव अंदर तक पैठ जाते हैं। अपनी रचना-प्रक्रिया के बारे में वे निश्छल मन कहते हैं-"गीत में लिखता नहीं/ कोई लिखा जाता/.... बांसुरी के गीत, चाहे/ गीत मर घट के/ रेत के हों गीत, चाहे/ गीत पनघट के / हर अंधेरे, दीप कोई

टिमटिमा जाता।" वह कौन सी चीज है जो उनके अंदर पैठ कर उनकी कलम से सृजित हो जाती है? कठिन से कठिन क्षणों में भी जीवन की शाश्वत अनुभूतियों को सहज भाव में जीने की शक्ति जिस प्रेरणा से बनती हो, वह उन्हें अपने पिता के रूप में विरासत में मिली। उनके पिता पंडित पारसनाथ त्रिपाठी अपने समय के प्रसिद्ध पत्रकार, कवि, साहित्यकार एवं चम्पारण आंदोलन में गांधी जी के सहयोगी थे। अपने कर्मठ पिता के मोहक व्यक्तित्व की उत्तेजना को त्रिपाठी जी के कवि मन ने बालपन में ही जी लेने की कोशिश की होगी, तभी तो वह वाराणसी के हिन्दू विश्वविद्यालय के अपने छात्र जीवन में ही अपने सतीर्थ त्रिलोचन शास्त्री, शम्भूनाथ सिंह, मोती बी ए, नामवर सिंह, केदारनाथ सिंह सदृश्य विरल व्यक्तित्व के साहचर्य में संबंधों के निर्वाह में अटूट आस्था के मंत्र को साधने में समर्थ रहे और साध लिया था और जिससे उनका सहज संवेदनशील मन निर्मित हुआ। कवि का ही संवेदनशील मन अपने समय के विविध परतों में रच बस कर उनकी सुगंधियों से रीति-रचना करता है। भाषा तभी सहज होती है जब मन सरल हो। जटिल मन की भाषा में प्रवाह नहीं होता। इसलिए 'अमलतास दिन' का कवि जटिल अर्थात टूटे मन को सदैव जोड़ने की प्रार्थना करता है। "आयो हम अपना यह/ टूटा मन जोड़े ... टूट रहे नदियों के -/ बंधे हुए घेरे/ कब तक यो भटकोगो/ बेसुध मन मेरे/ आयो यह धूप -छांव /संग-साथ ओढ़े।

सरल मन और साफ भाषा के कवि जब अपने समय की असहज गति से गुजरते हैं, तो पग-पग पर छद्म रिश्तों की नींव पर पारिवारिक समृद्धि की छाया अनुभव करते हैं ..... बाहर से भव्य किन्तु अंदर खोखले रिस्ते का छद्म वे स्वीकार कर नहीं पाते हैं ऐसे मैं उनका विह्वल मन फूट पड़ता है। -" चाह रहा मन की कहने को/ लेकिन बात नहीं, कोई बात नहीं। .. ....रीत गए हम/ बीते सरगम/ बढ़ती उमर / बढ़ जाती है / मन में रोज चुभन / रहा सोचता पर, लगता है / बातें सब सतही।" मन भावों से भरा सघन हो तो व्यक्ति बहुत कुछ कहना चाहकर भी कुछ कह नहीं पाता। अंदर और बाहर की मन स्थिति की भिन्नता उससे सहज मानवीय स्थितों से दूर भाग जाता है। ऐसे क्षणो को त्रिपाठी जी ने अत्यन्त सहज भावो में व्यक्त किया है। " बात जो मन में/ बहुत दिन से रही है/ आज तक वह अनकही है। .....बात भीतर और बाहर/ एक जैसी जब नहीं हो/ फर्क क्या तब तुम कहीं हो/ हम कहीं हो/ रास्ते जाने अनजाने लग रहे जब/ सोचता तब/ स्नेह मन की/ नियति और परिणति यही है।"

रिश्तों के खंड -खंड होने पर व्यक्ति की सामाजिक नियति जब बदलने लगती है, जब समृद्धि की लिप्सा में वह दीन होकर रह जाता है। संवेदनशील कवि मन त्रिपाठी जी इस अभीशप्त स्थितियों में अपने को असहज महसूस करने लगते हैं। शायद इसलिए वे इधर लगातार मंचो से सुना रहे थे - " चौराहे पर खड़ा सोचता / जाऊं कहां किधर .... पता नहीं मेरे जीवन में/ ऐसा क्या कुछ हुआ/ लगता जैसे मन का दर्पण/ रहा क्या अनछुआ/ नागपास नस-नस को कसता/ डूबा जाता मन/ चूकता जाता अमृत / कि भरता जाता रोज जहर।" बड़े दुखी मन से वे सुनाते -" बीत गए दिन / जब रिश्ते, रिश्ते होते थे।" रिश्तों को जीने की बेचैनी रह-रह कर उन्हें दंस मार रही थी। गांव से शहर तक वे देख रहे थे। -" दूर हुई चंदन की खूशबू/ जलते सारे गांव हैं .....आज सभी अपनापा टूटा/ छूटे रिश्ते-नाते /हम जोली की बात कहां अब/ सहमी सिहड़ी रातें/ जाने क्यों थकते से लगते/ सबके अपने पांव हैं। " पूंजी संस्कृति में जकड़ा भारतीय मध्यम वर्ग उत्तर आधुनिकता को जीने की ललक में सब कुछ गवान के बाद आज इतना थका-थका सा बेशुद है कि संबंधों की आंच में भी उसका अंतर पिघल नहीं पा रहा। यह पीड़ा कभी त्रिपाठी के इधर के गीतों में झलकती सी दिखती है। वह गोष्ठीयों में सुनाते -"रात भर खेता रहा मैं पार जाने को/ सुबह देखा तो लगा /घूटे बंधी है नाव/ और थक कर चूर मेरे हाथ मेरे पांव ।"

सहज भाषा के संवेदनशील भावुक कवि त्रिपाठी जी आज हमारे बीच नहीं रहे, जब-जब भौतिक समृद्धियों से थका हारा मध्य वर्गीय मन रिश्तों के सुगंध - वन में विचरण को ललकेगा, तब तब त्रिपाठी जी के गीत भी उनके अतृप्त मन-प्राणों को सहलाते मिलेंगे -

"जब जब चाहा तुमने,
तुमको मैंने गीत सुनाया।"

इन्हीं भाव के साथ हम अत्यंत प्रभावशाली गीतों के सर्जक स्मृतिशेष विन्ध्यवासिनी दत्त त्रिपाठी जी को 'विचार दृष्टि' परिवार की ओर से संमवेत श्रद्धांजलि निवेदित करते हैं। ☒

सम्पर्क : 1/सी अशोक नगर, पटना

डॉ॰ लोहिया के शिष्य पटेल का निधन

कर्नाटक ने एक समाजवादी नेता खोया

विचार संवाददाता, बंगलोर से

पारिवारिक क्षेत्रों में "जयण्णा" के नाम से प्रसिद्ध कट्टर समाजवादी राजनेता तथा कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री जे॰ एच॰ पटेल का पिछले 12 दिसम्बर को निधन हो गया। इकहत्तर वर्षीय जयदेवप्पा हालप्पा पटेल प्रख्यात समाजवादी चिंतक डॉ॰ राममनोहर लोहिया के कट्टर अनुयायी थे। स्वतन्त्रता सेनानी पटेल के जीवन पर डॉ॰ लोहिया का अमिट प्रभाव था। उन्होंने भूमिहीनों के लिए लड़ाई लड़ी व राज्य में भू-सुधार कानून लागू करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। गरीबों तथा निचले तबकों के लिए पटेल द्वारा विधायक, सांसद, मंत्री उपमुख्य मंत्री तथा मुख्य मंत्री के रूप में किए गए उनके योगदान को भुलाया नहीं

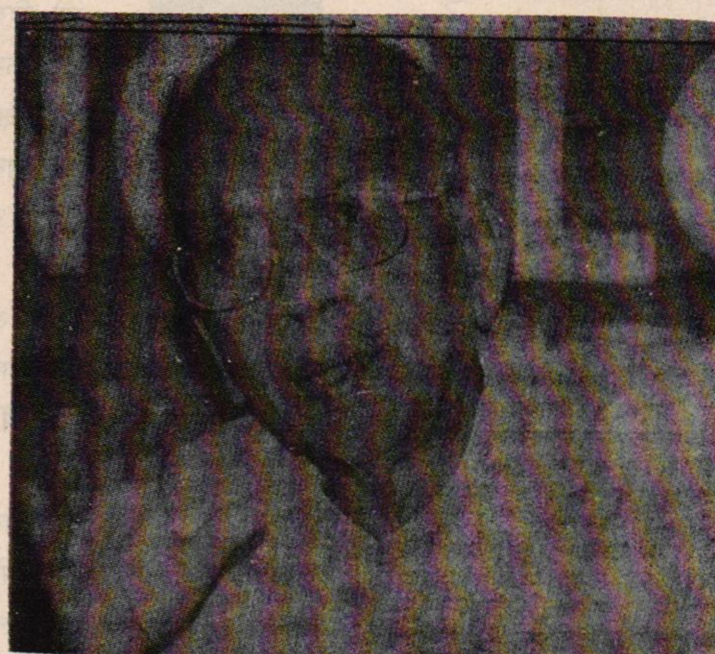

जा सकता। अपने राजनीतिक जीवन में कांग्रेस तथा भाजपा के कट्टर आलोचक रहे।

चार दशक से अधिक राजनीतिक सफर करने वाले पटेल अपने विनोद प्रिय स्वभाव एवं वाकपटुता की वजह से अपने सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन में उन्होंने एक अलग पहचान बना ली थी तथा अपनी व्यक्तिगत जीवन शैली के चलते वे हमेशा लोगों की नजर मे रहे। कर्नाटक के मुख्यमंत्री के रूप में दिए गए उनके बयान कि वे भगवान कृष्ण के अनुयायी तथा शराब व शबाब के रसिया हैं, ने उन्हें विवाद में फंसा दिया था।

संसद में जिन दिनों हिन्दी एवं अंग्रेजी की ही मान्यता थी 1967 में लोकसभा के सदस्य होने के बाद पटेल ही एक ऐसे सबसे पहले सांसद हुए जिन्होंने कन्नड़ में भाषण देकर न केवल इतिहास रचा था बल्कि कन्नड़ को संसद में ले जाने की उनकी दृढ़ इच्छा शक्ति ही अन्य प्रादेशिक, भाषाओं को संसद में उपयोग का मार्ग प्रशस्त किया। केन्द्रीय प्रतिरक्षा मंत्री जार्ज फर्नांडीस ने पटेल के पहले भाषण का अनुवाद किया था। **विचार दृष्टि** परिवार की ओर से समाजवादी नेता को हार्दिक श्रद्धांजलि। ☒

पद्म श्री डॉ॰ लक्ष्मीनारायण दुबे का निधन

हिन्दी के सुप्रसिद्ध विद्वान एवं भारतीय संस्कृति के समर्थ व्याख्याता पद्म श्री डॉ॰ लक्ष्मीनारायण दूबे का सागर में हृदय गति अवरूद्ध होने से विगत सितम्बर महीने में निधन हो गया। उनके निधन से हिन्दी की क्षति तो हुई ही, 'विचार दृष्टि परिवार' भी स्तंभित रह गया। निधन से कुद ही दिनों पहले तो हिन्दी का सहस्त्राब्दी सम्मान लेने वे दिल्ली पहुँचे थे, तो उनसे भेंट हुई थी। तब उनसे 'विचार दृष्टि' को लेकर भी हमारे प्रधान सम्पादक सिद्धेश्वर से अनेक बातें हुई थी। और हम पटना में उनकी भेजी सामग्री की प्रतीक्षा कर रहे थे कि उनके निधन की खबर मिली।

विदेशों में तो हिन्दी-सेवा के लिए वे जाते ही रहे, देश के भी विभिन्न भागों की साहित्यिक गतिविधियों से उनका जुड़ाव रहा। बिहार से वे अपना विशेष लगाव महसूस करते। एक बार उन्हें मुजफ्फरपुर में रेलवे आयोजित रामवृक्ष बेनीपुरी शताब्दी समारोह में भाग लेने जाना था।, तो वहाँ जाने के क्रम में दो दिनों पहले ही पटना आ गए। सिद्धेश्वर जी ने उनके सम्मान में अपने आवास पर एक आयोजन किया। उस आयोजन में दिल्ली से आए एक सुप्रतिष्ठित कवि राधेश्याम तिवारी को भी काव्यपाठ कराना था। डॉ॰ दुबे के उस आयोजन में अपने अमेरिकी प्रवास के अनुभवाों को जोड़ते हुए हिन्दी की प्रगति पर जो अभिभाषण किया, वह अद्‌भुत था।

डॉ॰ दुबे ने हिन्दी में लगभग से दर्जन पुस्तकों की रचना की। कृष्ण हरि सिंह गौड़ विश्वविद्यालय में प्राध्यापक के रूप में उन्होंने पचासेक शोधानियाँ का दिशा-निर्देश भी किया। अपनी महत्ती हिन्दी सेवा के लिए वे भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों की हिन्दी सलाहकार समिति के सदस्य भी रहे। निधन से पूर्व वे रेलवे हिन्दी सलाहकार समिति के सदस्य थे। समिति की प्राय: सभी बैठकों में उनकी मुलाकात सिद्धेश्वर जी से होती और समवेत रूप से रेलवे में हिन्दी की प्रगति की दिशा में कारगर उपायों पर विमर्श करते।

हिन्दी के जाने-माने विद्वान दुबे जी के निधन से जो क्षति हुई है, उसकी भरपाई जाने कब हो! हम 'दृष्टि परिवार' की ओर से उनकी दिवंगत आत्मा को हार्दिक श्रद्धांजलि निवेदित करते हैं। ☒

तरन्नुम के निधन से जहां का नूर चला गया

75 वर्षीय मलिका-ए-तरन्नुम **नूरजहां** के कराची शहर में निधन से संगीत जगत ने एक महान गायिका एवं सुप्रसिद्ध अभिनेत्री को खो दिया है। स्वर साम्राज्ञी लता मंगेशकर ने नूरजहां के निधन को संगीत जगत की अपूरणीय क्षति बताते हुए कहा कि नूरजहां उन्हें बहन की तरह मानती थीं और उनसे उन्होंने कई बातें सीखीं। अभिनेता प्राण ने कहा कि नूरजहां हरदिल अजीज और खुशमिजाज थीं।

नूरजहां अभिनेत्री भी थी और उन्होंने अपनी पहली फिल्म **'मामला जाट'** में नायिका की बहन की भूमिका अदा की थी। फिल्म खानदान में भी उन्होंने अभिनय किया था।

भारत और पाक के बीच सद्‌भाव का वातावरण बनाने में लता जी तथा नूरजहाँ का वर्षो से प्रयास रहा है। क्योंकि वे दोनों कई सालों से प्रतिदिन लगातार दूरभाष पर नियमित रूप से बातें करती थीं एक दूसरे के साथ।

रक्त दान एवं नेत्रदान में सहयोग करें
खुद दान करें एवं दूसरों को भी प्रोत्साहित करें
विचार दृष्टि कार्यालय से

व्हाइट हाउस में बुश के नए कदम

अनुज, नई दिल्ली से

अमेरिकी इतिहास में अब तक के सबसे स्पष्ट और कानूनी पेचीदगियों के उलझाव से बोझिल राष्ट्रपति के चुनाव में रिपब्लिकन पार्टी के उम्मीदवार जार्ज बुश

ने आखिरकार व्हाइट हाउस में 20 जनवरी, 2001 को अपने कदम रखा। अपनी पराजय को स्वीकार कर डेमोक्रेट अल गोर ने सर्वोच्च न्यायालय के फैसले का सम्मान किया और इस प्रकार लगभग एक माह से विश्व के सबसे शक्तिशाली राष्ट्र को शर्मिन्दगी का अहसास कराने वाली कानूनी लड़ाई समाप्त हो गई।

21 जनवरी 2001 से निवृतमान राष्ट्रपति बिल क्लिंटन की विदाई के बाद अमेरिका की ही नहीं बल्कि पूरे विश्व की समस्याएं बुश की झोली में डाल दी गयीं। 20 जनवरी को आणविक आयुद्ध भंडार का 'बटन केस' परिवर्त्तित कोड के साथ वर्त्तमान राष्ट्रपति जार्ज बुश को थमा दिया गया।

यह कहने की आवश्यकता नहीं बिल क्लिंटन द्वारा छोड़े जाने वाले समस्याओं के पिटारे में सबसे महत्वपूर्ण समस्या है आतंकवाद, जिससे न केवल अमेरिका बल्कि विश्व का कोई भी देश आज अछूता नहीं है। दूसरा है वैश्वीकरण, जिससे विकासशील अथवा अविकसित देशों के गरीबी दुरूचक्र में फंसे नागरिकों को कोई लाभ नहीं मिला है क्योंकि अमेरिका के अपने व्यावसायिक हित इतने व्यापक हैं कि लगभग सभी विकासशील राष्ट्र उनके दुष्परिणामों के शिकार हैं। खैर जो हो देखना यह है कि वर्षों से व्हाहट हाउस में इन समस्याओं के जमे भूत से जार्ज बुश कैसे निपटते हैं। ☒

अब बिल क्लिंटन फ्रांस के राष्ट्रपति होंगे

मृत्युंजय, नई दिल्ली से

खबर है कि वाशिंगटन छोड़ने के बाद अमेरिकी राष्ट्रपति बिल क्लिंटन फ्रांस के स्वाभाविक नागरिक बन सकते हैं और यहाँ तक कि वर्ष 2002 के फ्रांसीसी चुनाव में राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार भी बन सकते हैं।

वास्तव में फ्रांस के नागरिक कानून का एक नियम पूर्व में फ्रांसीसी उपनिवेश रहे इलाकों के नागरिकों को यह अधिकार देता है कि वे पाँच साल की अधिकृत निवास अवधि की प्रतीक्षा किए

वगैर तत्काल फ्रांस की नागरिकता हासिल करने के लिए आवेदन कर सकते हैं। इतिहासकार पैट्रिक वेल ने बिल क्लिंटन को लिखे अपने पत्र में, जो 'न्यूयार्क टाइम्स' में प्रकाशित हुआ है, कहा है कि "अब आप व्हाइट हाउस से निकलने की तैयारी कर रहे हैं। निस्संदेह आपके विभाग में ये बातें कुलबुला रही होंगी कि अब आप क्या करेंगें। इस तरह फ्रांस के स्वभाविक नागरिक होने के कारण आपके सामने फ्रांस का राष्ट्रपति बनने का भी आवास है।" मालूम हो कि वर्ष 18.03 में राष्ट्रपति थॉमस जैफरसन ने डेढ़ करोड डॉलर में लुसियाना को नेपोलियन से खरीदा था। फ्रेंच नेशनल सेंटर फॉर साइंटिफिक रिसर्च में शोधरत पैट्रिक वेल ने फ्रांस के प्रधानमंत्री नियोनेंल जास्थां और राष्ट्रपति जैक शिराक के खिलाफ क्लिंटन के पक्ष में राष्ट्रपति बनने के अवसर भी गिनाये।

पैट्रिक ने कहा कि "आप नेशनल एसेम्बली को भंग कर सकते हैं और नए चुनाव करा सकते हैं। आप अनंतकाल तक हर साल में पुनर्निर्वाचित हो सकते हैं। हालांकि फ्रांस का मुखिया होने के कारण तब आपको अब और आगे भी हमेशा अमेरिकी के खिलाफ कड़े शब्दों का प्रयोग करना होगा। " पैट्रिक ने बताया कि फ्रांस में हाल ही में हुए एक सर्वेक्षण के मुताबिक फ्रांसीसी वर्ष 2002 के चुनाव में जास्वां व शिराक के खिलाफ एं 'तीसरा उम्मीदवार चाहते हैं। ☒

फेमिना मिस इंडिया प्रियंका चोपड़ा ने पहना 'मिस वर्ल्ड' का ताज

✍ सत्य प्रकाश

भारत की अठारह वर्षीय प्रियंका चोपड़ा ने मिस वर्ल्ड 2000 का खिताब जीत लिया है। स्वप्निल आंखों में पूरब की हया, दमकते चेहरे पर विजय का आत्म विश्वास और विचारों से भारतीयता में रची बसी प्रियंका ने भोर की पहली किरण फूटने से पहले पूरी दुनिया में अपने रूप का उजाला फैला दिया। उसे लंदन के मिलेनियम डोम में आयोजित प्रतियोगिता में 'मिस वर्ल्ड' का ताज पहनाया गया। किसी छायावादी कवि की नायिका

जैसी प्रियंका का रूप इतना मोहक है कि उसे देखकर संगमरमर के ताज में भी जान आ जाने सा आभास होता है। कमल के अधखिले फूल पर ठहरी अलसाई सी ओस की बूंद जैसी इस सौन्दर्य की देवी के रूप ने पूरी दुनिया को चकाचौंध कर दिया। 1994 का अफसाना एक बार फिर दोहराया गया। उस वर्ष भी मिस यूनीवर्स और मिस वर्ल्ड प्रतियोगिताओं में भारतीय सुन्दरियां विजयी रही थीं इस वर्ष एक बार फिर लारा दत्ता के मिस यूनिवर्स खिताब जीतने के बाद प्रियंका ने मिस वर्ल्ड प्रतियोगिता जीतकर भारत को दोहरी विजय दिलाई। वैसे तो प्रतियोगिता के दौरान ही प्रियंका को भावी विजेता के रूप में देखा जा रहा था। लेकिन आज जब उसे विजयी घोषित किया गया तो उसकी आंखों में एकाएक सफलता का सुरूर सा उतर आया और विजय के इन क्षणों में वह इतनी भावुक हो गई कि उसके गुलाब की पंखुड़ियों जैसे नाजुक होंठ फड़फड़ा उठे। इस दौरान उसके चेहरे पर भावों का एक इन्द्रधनुष सा लहरा गया।

पिछले सात वर्ष में यह पहला मौका है जबकि मिस वर्ल्ड प्रतियोगिता में भारतीय सुन्दरी ने अपने रूप का डंका बजाया है। पिछली मिस वर्ल्ड भी भारत की युक्तामुखी थीं । परम्परा के अनुसार जब युक्ता ने प्रियंका को ताज पहनाया तो ऐसा लग रहा था जैसे मंच पर कई सूरज एक साथ चमक उठे हों।

उत्तरप्रदेश के बरेली शहर की 18 वर्षीय प्रियंका ने दुनिया की सबसे सुन्दर लड़की होने का गौरव हासिल किया है। जबकि इटली की 18 वर्षीय जार्जिया पामास को प्रथम उपविजेता और तुर्की की 20 वर्षीय बुसले अक को द्वितीय उपविजेता आंका गया। 18 जुलाई, 1982 को पैदा हुई प्रियंका को घर परिवार और मित्र मंडली में 'मिमी' कहकर पुकारा जाता है। आपकी दृढ़ इच्छाशक्ति या **प्रजेन्स ऑफ माइंड** से प्रियंका ने इस मुकाम पर पहुंचकर साबित कर दिया है कि 'मन में लगन' हो और कुछ कर गुजरने की तमन्ना हो तो व्यक्ति किसी भी मुकाम पर पहुंच सकता है। गजब के आत्म विश्वास ने आज प्रियंका को इस मंजिल तक पहुंचाया है। प्रियंका की इस सफलता का सम्पूर्ण श्रेय उनकी मां डा. मधु चोपड़ा को जाता है। उन्होंने प्रियंका का हर कदम पर साथ दिया है।

मिस इण्डिया से मिस वर्ल्ड तक पहुंचने वाली प्रियंका चोपड़ा की सफलता की कहानी की शुरूआत करीब एक वर्ष पूर्व हुई थी फेमिना मिस इण्डिया के लिए अगस्त 99 में एक विज्ञापन निकला था जिसे पढ़कर प्रियंका के 10 वर्षीय भाई ने अपनी मां से प्रियंका के फोटो भिजवाने को कहा। मां को बेटे का यह सुझाव पसन्द आया और उन्होंने चुपचाप प्रियंका के फोटो भिजवा दिये। उन्होंने इस बारे में प्रियंका से कोई बात नहीं की क्योंकि अगर फोटो चुने नहीं गए तो प्रियंका को दुःख होगा। इसके पश्चात एक महीने बाद उन्हें एक जवाबी पत्र मिला, जिसमें लिखा था कि उत्तरी क्षेत्र से चुने गये तीन आवेदकों में से एक प्रियंका भी है। तब जाकर प्रियंका को और उनके पिता को इस बारे में पता चला। प्रियंका चोपड़ा के प्रशंसकों को यह भी जानना आवश्यक है कि मूल रूप से बरेली की रहने वाली प्रियंका ने अपनी पढ़ाई लखनऊ व बरेली के अलावा अमरीका में भी की है। बरेली के आर्मी स्कूल की इस छात्रा ने ग्यारहवीं कक्षा के दौरान बरेली क्लब में हुई एक सौन्दर्य प्रतियोगिता भी जीती थी। लेखन, नृत्य, गायन और अभिनय की शौकीन प्रियंका को कविता लिखने व पढ़ने का भी शौक है। अगर उन्हें आगे चलकर फिल्मों में भी काम करने का अवसर मिला तो वे करेंगी। बरेली के आर्मी स्कूल की सौन्दर्य प्रतियोगिता जीतने के बाद प्रियंका ने मिस इण्डिया का खिताब जीत लिया और आज उन्होंने विश्व सुन्दरी का खिताब जीत कर भारतीय सौन्दर्य का परचम लहराया है। ☒

कन्नड़ सीखें और सिखायें

✍ बी॰ एस॰ शांताबाई

हिन्दी	कन्नड़
1. यह लड़का छोटा है।	ई हु डुग चिकुवनु
2. वह बाजार जाता है।	अवनु पेटेगे होगुत्ताने
3. हम आँखों से देखते हैं।	नावु कुण्णुगकिंदा नोडुत्तेवे
4. आपके स्कूल में कितने लड़के है?	तम्मे शालेयल्लि एष्ट हुडुगस इद्दोर?
5. मेरे भाई के पास दो घड़ियाँ हैं।	नन्न अण्णन हत्तिरयेर डुगड़ियारगठ्ठिवे।
6. इस कमरे में चार कुर्सियाँ है।	ई कोणेयल्लि नाल्यु कु चिगठ्ठ इवे।
7. नारियल का पेड़ ऊँचा है।	तेंगिन मर एन्तर पागिदे।
8. राम के घर में बिल्ली है।	रामन मनेयल्ली बेकु इदे।
9. लड़का दूकान जाता है।	हुडग आगडिगे होगुत्राने।
10. मैं कहानी सुनाता हूँ।	नानु कथे केठ्ठुत्तेने।
11. महिलाएं गहने चाहती हैं।	हेंगसरू वडवे इच्छिसुत्तार।
12. डाकिया चिट्ठियाँ लाता है।	अंचेमवनु पत्रगठ्ठन्नु तरूत्ताने।

साभार : हिन्दी प्रचार वाणी,
178, 491 मैन, चामराज पेट, बंगलोर -560018

MAHESH HOMEOPATHIC LABORATORY

BAHADURPUR, PATNA-16

ADMINISTRATIVE OFFICE : JAMAL ROAD, PATNA-1

☎: 230641(O) , 674041(R)

OFFERS A WIDE RANGE OF MOTHER TINCHERS, DILLUTION BIOCHEMIC TABLETS PATENTS, GLOBELS.

OUR PRODUCTS : **ALPHA TONICS, COUGH DYNE, BABY TONICS, VITA-TONE, EMOVITA,GASTROTONE, PILO-CARPOUS, HAIR OIL, A BONDED LABORATORY**

पिछली सड़क

✍ मनीष शर्मा

हम पिछली सड़क पर नहीं जायेंगे।
हमारे सामने है संसार
और तमन्ना है ..
आसमान छूने की।
पैरों में पंख लगा रहे हैं,
सपने नये आ रहे हैं,
नवे दैर की
नयी खानिगियां ..
हृदय-तार झंकार रहे हैं,
गीत कोई गा रहे हैं।
आशा के जुगनू,
मन के अंधकार हटा रहे हैं।
अब सुप्रभात होने को है,
नयी पीढ़ी को नयी जिंदगी
जीने को है।
वो पिछली सड़क पर नहीं जायेगी,
अपनी राह खुद बनायेगी!!

हाइकु

✍ मुकेश रावल

(1)
तुम समीप
अध मुंरी पलकें
जीवन सुख।

(2)
चाह लेकर
हर पल जीविन
मौन से दूर।

(3)
आशा-लता-सा
जीवन सुखमय
हँसना सदा।

(4)
कोई न जानें
मिट्टी का सुख दुःख
सिर्फ कवि ही।

(5)
भूख भूख ए।
पशु और मानव
दोनों समान।

सॅपर्क 4, राधा कृष्णन नगर
विद्यानगर रोड, आनन्द, गुजरात

युवा चिंतन

सृजन का आनंद

✍ रजनीश कुमार

सवाल ! जवाब ! पता नहीं क्या करना है?
कैसे-कैसे समय आगे बढ़ता है।
अंर्तद्वंद की उलझन में कुछ पता नहीं हो जात है।
काम तो अन्यनस्क की तरह हो जाता है।
लेकिन मन कहीं कुछ और तलाश रहा होता है।
यही अहसास प्रकृति के रहस्य को
समझने के लिए उद्वेलित करता है।
क्या चाहिए ? तृप्ति या भटकन ।
हाँ, भटकन तो रहती है पर तृप्ति की अनुभूति तो
सृजन में ही है। पुरुष अपनी प्रकृति से अहंकारी
होने के कारण तोड़-फोड़ करता रहता है और
उसी में खुश रहता है। अगर उसमें थोड़ा भी
स्त्रैण गुण आ जाए तो वह देवगण की श्रेणी
में आ सकता है। शांति! शांति! शांति!
कहाँ से आएगी। यह तभी आ सकती है,
जब 'क्रिएटविटी' हो पुष्प के खिलने का एहसास
ही उसके पूर्णत्व की प्राप्ति का मार्ग है।
आज कहाँ-कहाँ लोग जा रहे
हैं। उन्हें पता नहीं। थोड़ा-सा प्यार चाहिए। वह
क्या चमक-दमक के आवरण से ढँक नहीं
गया है। कुछ पाने की इच्छा सब कुछ भुला
दे रही है। अपने को जानने का समय
नहीं है। अध्यात्म ही एकमात्र रास्ता है -
'एक्सटेसि' के लिए। स्थूल से सूक्ष्म की ओर
प्रयाग। कैसे होगा? पथ कठिन है पर दिख
रहा है। आगे बढ़ना होगा। नहीं तो पता
नहीं, कहाँ जायेंगे।
जिंदगी दरिया-एवे हासिल है,
और मेरी कश्ती टूटी।
मैं घबरा के दुआ करता हूँ,
तूफाँ के लिए ॥

सम्पर्कः आई॰ आई॰ टी॰, नई दिल्ली

पटना हड्डी एवं रीढ़ रोग अस्पताल

एच/3, डाक्टर्स कॉलोनी, कंकड़बाग, पटना-20 (बिहार)

राजेन्द्र नगर उपरी पुल के सटे पूरब

- रीढ़ के सभी प्रकार के रोगों का सम्भव इलाज।
- हड्डी एवं जोड़ के सभी प्रकार के रोगों का अत्याधुनिक इलाज।
- अत्याधुनिक इमेज इंटेसिफायर एवं अन्य ऑटोमेटिक् एवं पावर उपकरणों की सुविधा उपलब्ध।
- वातानुकूलित ऑपरेशन गृह की व्यवस्था।
- नर्सिंग एवं रहने की निम्नतम दर पर उत्तम व्यवस्था।

चिकित्सक : डॉ० विश्वेन्द्र कुमार सिन्हा
(M.S.FICS, Ph.D. Orth.)
हड्डी एवं रीढ़ रोग विशेषज्ञ
पटना मेडिकल कॉलेज अस्पताल, पटना (बिहार)

'कैक्टस' कहानी-संग्रहः एक समीक्षा

✍ डॉ॰ तपेश्वर नाथ

प्रस्तुत कहानी संग्रह प्रबुद्ध समीक्षक, विचारक, नाटककार डॉ॰ राजनारायण राय की जीवन कथा दृष्टि का साक्षी है। इसमें कुल दस कहानियाँ हैं। इन दसों की वर्णन शैली इतनी दिलचस्प है कि इन्हें आठ-दस बैठकों में -कुल दो-चार दिनों में आर-पार पढ़ा जा सकता है। सो, मैं भी दो-चार दिनों में इन्हें पढ़ गया। बीच-बीच में कुछ कहानियों में ऐसे घरेलू, दर्दीले, पीढ़ीगत अन्तराल वाले आत्मीयतापूर्ण स्वानुभव परोसे गये हैं कि उन्हें अपने साथ-साथ गृहकारज में गर्क पत्नी को भी, जबर्दस्ती पढ़ वाते जाना अपेक्षित महसूस किया और पढ़वा गया। पर, यह क्या ? वह तो एक-दो कहानी पढ़ते-पढ़ते रो पड़ी। मैं तो अकचका गया। 'कहीं से कोई दु:संवाद-फोन तो नहीं आया ?' - पूछने पर ज्ञात हुआ कि कोई फोन दु:संवाद नहीं है, बल्कि 'कैक्टस' की दो कहानियों में वर्णित बेटे-पतोहुओं के सास के प्रति बरती उपेक्षा भावना से आहत मन की पीड़ा थी जो भीतर न रूक सकने से आँखों से बह गयी।

आप पूछेंगे वे कौन सी कहानियाँ हैं ? तो, मैं उनके नाम नहीं बताऊंगा। आप स्वयं इतने प्रबुद्ध हैं कि 'थीम' कह देने पर स्वयं समझ जायेंगे। प्रतीत होता है कि इन दसों कहानियों में मूल में कथाकार का जैसे स्वयं का भोगा हुआ दर्दीला सच है कि मन की व्यथा को बखश औसुओं में बाहर उकेर दे।

वस्तुत: जीवन की तीन बुनियादि जरूरतें होती हैं -रोटी, कपड़ा और मकान। इस संग्रह की अधिकांश कहानियों की समस्याएँ यद्यपि मूलत: मकान से ही संबंधित हैं तथापि यह भी कारण नहीं, कार्य है। मकान का कारण भी कहीं भीतर है। और वह है - अभी-अभी एक पुरानी हो रही पीढ़ी का नई पीढ़ी के साथ सह अस्तित्व का संकट। इसी को पहले सहने, बाद में ऊबने और फिर उसे अबरने के लिए यह किया गया। मशक्कत भरा भवन-निर्माणजनित पुरूषार्थ प्रदर्शित है।

'अभिकेतन' में सनिकेतन बनने का कठिन कर्मयोग है। एक मध्यमवर्गीय बुद्धजीवी! बुढ़ापा व अवकाश ग्रहण की बेचारगी। बेटों-पतोहुओं की उपेक्षा से ढोकरें खाकर ऊब कर अपनी कुटिया बनाने का निश्चय करता है और अपने इस असहयोग आन्दोलन में अकेले ही ऐंड़ी-चोटी का पसीना एक कर अपने सर पर एक छत खड़ी कर लेता है। यद्यपि यह मानी मन की त्रासदी से उत्पन्न है। किन्तु, कारण जो हो, कार्य स्वावलम्बन की दिशा में एक सशक्त कठोर कदम ही है।

'एक और निर्णय' एक बेटा परस्त, खुदगर्ज और उसकी ज्यादती से मस्त जबान बेटी की करूणा दासता है। पिता नाकारा है। मां ही सर्वेसर्वा है। कुल मिलाकर, परिवार दकियानूस होने से अन्तर्जातीय विवाह की इजाजत भी बेटी को नहीं दे सकता। नतीजा उसे घर छोड़कर चल देना पड़ता है।

'टूटती बैसाखियौ' में नई पीढ़ी द्वारा फिर पुरानी पीढ़ी को अपमानित करने की करूण दासता है। यहाँ मां बाप हेयरकट फैशनेबुल पतोहू द्वारा महरी बना दी गयी, उसे परोक्ष रूपेण गंवार-मुच्छड़ तक कह देती है। पुराने और नये में सोच का अंतर साफ है। खायेंगे हिसाब से पर फैशन करेंगे - वे हिसाब। बेटा जोरू का गुलाम है। बूढ़ी मां छोटे-बड़े सब बेटों बैसाखियों को एक-एक कर आजमा चुकी। सब पोलो। 'बड़े मियां बड़े मियां छोटे मियां सुभान अल्लाह।' यहाँ भी अपना खपड़ैल घर बेटों के लिए कंक्रीट के पिंजरे से 'हजार गुना' अच्छा लगता है। लेखक के गृह मोह का यही राज है।

पश्पाद्वर्ती कहानी - 'कैक्टस' शीर्षक कहानी है। यह अधिक मनोवैज्ञानिक है। इसमें आरंभ में तो पति-पत्नी में कामजनित खिंचाव प्रदर्शित है। किन्तु, बगल के वर्मा परिवार के कालाधन सज्जित संसर्ग के कारण स्वर भेद से दोनों के बीच भयंकर दुराव-कटाव होने लगता है। और, यह भी रातों-रात त्वरित गति से हो जाता है। जो प्रमदा शाम को खजुराहो की मिथुनमूर्ति सी मादक सुरभि वाली माधवी लगती थी, वही विस्तर पर जाते ही वर्मा परिवार की तारीफ व तरफदारी करने के कारण कैक्टस सी कटीली बन जाती है। चूंकि, नर से ज्यादा नारियों में भोग वैभव के प्रति तीव्र मोहाकर्षण देखा जाता है। नर प्राय: नि: स्पृह और सादे जीवन का हामी है। पर, उसकी पत्नी विमला ऐसो आराम की जिंदगी पर न्योछावर है। इधर श्रीमान जी को मोटबलि विमला और उसकी ऊंगली में सूखी भिण्डी का खुरदरापन तो मिसेज वर्मा में पूरी बहार नजर आने लगी है। यही इस कहानी की मनोवैज्ञानिक परिणति है।

'चलते-चलते' में गाँव से चलते एिक शहरी नौकरहारा का बेवशी में जन्मभूमि से उखड़ते रिश्ते का दर्द अनुभूत होता है। शहरी को गाँव की स्वच्छ जलवायु व शुद्ध खान पान का मोह तो खींचता है पर बच्चों की पढ़ाई और भविष्य का चेत आते ही वह उस मोह को तोड़ देने में मजबूर है। इसी मजबूरी की अभिव्यक्तित्व द्वन्द्व इसकी विशेषता है।

'श्रद्धा सुमन' में एक बेकार युवक सौरभ द्वारा आत्म संघर्ष से ऊब कर आत्महत्या कर लेने की त्रासदी प्रदर्शित है। पर, इससे भी बढ़कर एक बुद्धिजीवी की संवेदना यह कि अवकाश ग्रहण के बाद अपनी जीविका के लिए जो एक नियुक्ति पत्र मिला था उसे वह श्रद्धांजलि स्वरूप उसी कविता में झोंक देता है। ताकि कोई यह न कहे कि बेकार छात्र के प्रति उस शिक्षक की कोई हमदर्दी कोरी नहीं, ठोस है। एक छात्र को शिक्षक द्वारा दी गयी यह एक विलक्षण श्रद्धांजलि या बलि है।

'शुभारंभ' एक ऐसे नये इंजीनियर के ईमान के पजन की कहानी है जो ठेकेदार से मिले रिश्वत की पहली कमाई को पूजासन पर रखने में भी नहीं हिचवकता, मानों यह उसके देवता द्वारा दिया गया प्रथम वरदान हो। सारे शिक्षागत आदर्श उसके घरौदे सिद्ध होते हैं जो अति शीघ्र गहरा जाते हैं। और, रह जाते हैं –केवल बाहरी तड़क भड़क में ध्यान केन्द्रित होकर। पूजा पर बैठे इस रघु के मन मृग को कहानीकार ने कंचन और कामिनी के पीछे बारी-बारी से दूर-दूर भगा कर ऐसा ढ़ोगी बना दिया है कि उसका मानसिक व्यभिचार चरम छूने लगता है। अन्ततः उसके किशोर बालक दिव्यांशु के उसे 'रिश्वत खोर' रूप में भांप लेने पर उसका उसे पीटना तथा उन पाँच हजार रू॰ की मां नहीं, बेटी नहीं, बीबी के हित भी नहीं, बल्कि, ऑफिस वाली प्रेमिका के साथ रंग रेलियाँ मनान में सदुपयोग करने का मन बनाना उसे एक अधः पतित इन्सान के रूप में पेश करता है।

कहना न होगा कि इस कहानी द्वारा पहले की तरह लेखक का सदाचारी मन परोक्ष रूपेण एक अच्छा जीवन सन्देश भी दे जाता है। 'द्वारिका' में एक औरत की त्रासदी चत्रित हुई है। लीला-एक अधेर विधवा महिला अपनी एक मात्र जिम्मेदारी जवान बेटी की बिन दहेज की शादी की चिन्ता में घूली हुई विषमपरिस्थितियों से समझौता करती है। विवाह हेतु विज्ञापन के सिवा कोई संबंधी सहारा नहीं बनता। अंततः एक युवक पराग आकर विवशता से मनमानी छूट लेता है। मां बेटी छूट देती भी है। वह उनके असमंजस में, आश्वासन का झूठा सब्जबाग दिखाकर, अनुराधा की इज्जत लूट ले जाता है। पर शादी से बहाने बाना कर इनकार कर देता है। इस परिवार पर तो जैसे बज्रपात हो जाता है। छूट देने के कारण मां 'तवायफ की मां' का बेटी द्वारा आस्पद दि जाती है। कटाक्ष में 'द्वारिका' शब्द प्रयोग तथा 'नथ उतारने के बदले चैन' से यही तीखा व्यंग किया गया है। इसकी शैली बड़ी तीक्ष्ण है। जब अनुराधा मां से कहती है कि पराग अपनी मां का आज्ञाकारी पुत्र श्रवण कुमार है, जैसे मैं भी तुम्हारी आज्ञाकारी पुत्री हूं .... 'और कहते कहते अपमान वश मूंर्च्छित हो जाती है। तब, सचमुच, कहानी स्पर्शाघात की तरह असरदार बन जाती है। यही इसका चरम है।

'बोनसाई' में एक अवकाश ग्रहण कर रहे अधिकारी की विदाई के समय उपहार में प्राप्त एक 'आम का बैना पेड़' उसकी पूरी जकड़ी मनोव्यथा का प्रतीक बन कर पेश हुआ हं। गमले का वह पेड़ जैसे उच्चाधिकारी की स्वेच्छा का शिकार हुआ, वैसे ही खुद वह उक्त अधिकारी द्वारा लगातार शोषित रहा। अवकाश ग्रहण करने पर दोनों को मुक्ति और स्वच्छन्दता का एहसास एक साथ होता है। वह विदाई में मिले इस बोनसाई को गमले के घेरे बंदी से मुक्त कर सरजमीन से जोड़ उसे विकसित कर देता है। स्वयं लेखक की आत्मा भी यांत्रिकता से मुक्ति पा स्वतंत्र चिंतन लेखन में विकसित होती है। अतः इस प्रतिकात्मक कहानी में 'बोनसाई' एक मनोदशा को सार्थक करता है।

'नई पीढ़ी' में बेटो, पातोहुओं की खुदगर्जी से पीढ़ी के बढ़ते अंतराल को दर्शाया गया है। फलतः गांव हो यां शहर एक से अलगयोझा व वटवारा की धुन सवार होती है। स्वछन्दता की आतुरता गायब है। संयुक्त परिवार से नई पीढ़ी पुरी तरह टूट जाना चाहती है। इसमें पथ शैली भी अपना कर शिल्प में अनूठापन लाया गया है। गांव हो या नगर, नगर हो या महानगर सर्वत्र टूटना अलहदगी का आलम है। मध्य विकसित परिवारों में किसानी और नौकरी का, नई-पुरानी, शिक्षित-अशिक्षित पीढ़ी का संघर्ष बेजोड़ है। पुरानी पीढ़ी से नई पीढ़ी में अधिक खुदगर्जी व असहनशीलता देखी जाती है। यह कहानी इसी की तलख शिनाख्त करती है।

कुल मिलाकर, पूरा संग्रह मध्यवर्गीय परिवारिक जीवन के संघर्ष, सच्चाई, हिन्दू, धर्म संकट, स्वार्थपरता, गिरते जीवन-मूल्यों आदि की जीती-जागती तश्वीर है। भाषा-शैली भी वस्तु के अनुरूप ही उग्र और प्राणवन्त है। वातावरण बिम्ब और प्रतीको से, स्मृति चित्रों से प्रत्यग्द संस्मरण गंधी है। भाषा में यथा अवसर रोमांस और करूणा उद्वेलित है। अतः यह पूरा संग्रह मनोयोग से पठनीय और कहनीकार अभिनन्दनीय है। उसमें रूचिपूर्ण कहनी-लेखन की भरपूर क्षमता का प्रदर्शन हुआ है। भविष्य में, डॉ॰ राज नारायण से रचनात्मक लेखन की और भी सशक्त आशाएं है। ☒

सम्पर्कः विभागाध्यक्ष, स्नातकोत्तर
हिन्दी विभाग, तिलकामाँझी
विश्वविद्यालय, भागलपुर

मुंबई फिल्म उद्योग

अंडरवर्ल्ड के पैसों ने मचाया कोहराम

शशि भुषण कुमार

ग्लैमर, दौलत, शोहरत और हसरत की रंगबिरंगी दुनिया, 'बालीवुड' अपराध जगत के काले पैसे और आतंक से कुछ इस तरह भयभीत कि उसके असली स्वरूप पर ही संकट

सन् 2001 की नई सहस्त्राब्दि में नए अरमान और जजबात के साथ धमाकेदार ढंग से प्रवेश करने का मंसूबा पाले मुंबई फिल्म उद्योग को उस समय करारा धक्का लगा, जब मुंबई पुलिस और सी आई डी की संयुक्त टीम ने बड़े बजट की एक बहुचर्चित फिल्म **'चोरी-चोरी, चुपके-चुपके'** के निर्माता नाजिम हसन रिजवी और फिल्म फाइनेंसर तथा हीरा व्यापारी भरत भाई शाह को बेहद सनसनीखेज तरीके से गिरफ्तार कर के यह रहस्योद्घाटन किया कि भारतीय हिन्दी फिल्म उद्योग की धड़कन माफिया सरगनाओं और अंडरवर्ल्ड के बेताज के बादशाहों के हाथ में है और वे कई फिल्म निर्माता निर्देशकों के सहयोग से न सिर्फ अपने काले धन को सफेद कर रहे हैं. वरन फिल्म की ग्लैमरस दुनिया को भी आतंक के साए में लपेट रहे हैं. जाहिर है, पुलिस के इस तरह के रहस्योद्घाटन से नए साल के पहले दिन के भी पहले से फिल्म उद्योग में सन्नाटा छा गया है और कई निर्माणाधीन फिल्मों का भविज्य अंधेरे में डूब गया है.

दरअसल नाजिम हसन रिजवी और भरत शाह से गहन पूछताछ के बाद मुंबई पुलिस और खुफिया एजेंसियों को जो जानकारी मिली है, वह न सिर्फ बेहद चौंकाने वाली है, वरन इस बात का पर्दाफाश भी करने वाली है कि चमक-दमक और ग्लैमर का कारोबार करने वाले कितने लोगों के हाथ अपराध की दौलत से काले हैं. मुंबई पुलिस के एक उच्च पदस्थ सूत्र के मुताबिक पिछले साल बनने वाली या बन कर तैयार लगभग 120 फिल्मों में से कम से कम 70 फिल्में ऐसी हैं जिनमें अंडरवर्ल्ड के सरगनाओं का पैसा लगा है. बताया जा रहा है कि अकेले 20 फिल्में ऐसी हैं, जिनमें छोटा शकील का पैसा लगा है. इस तरह की फिल्मों की श्रेणी में 'चोरी -चोरी चुपके-चुपके के अलावा निर्माता राजीव राय की फिल्म 'प्यार, इश्क, मोहब्बत, जोड़ी नंबर वन, महबूबा, मोहब्बत, और 'हम किसी से कम नहीं' जैसी फिल्मों का नाम है. पुलिस सूत्रों का कहना है कि अंडरवर्ल्ड के पैसों के साए में बनने वाली इनमें से ज्यादातर फिल्में बड़े बजट की हैं और प्रति फिल्म की निर्माण लागत 15 से 20 करोड़ रुपए के

बीच है. इस तरह की फिल्मों में कलाकारों के रूप में सलमान खान, संजय दत्त, गोविंदा, रानी मुखर्जी, प्रीति जिंटा, सोनाली बेंद्रे, मोनिका बेदी आदि ने अभिनय किया है. इस सिलसिले में फिल्म स्टार सलमान खान, रानी मुखर्जी और प्रीति जिंटा से पुलिस बाकायदा पूछताछ भी कर चुकी है. फिल्म फाइनेंसर भरतशाह के अलावा एक और फाइनेंसर एन कुमार पर भी पुलिस की नजर है. एन कुमार ने छोटा राजन के भाई दीपक निखलजे की फिल्म 'वास्तव' को फाइनेंस किया था. पुलिस के एक उच्च पदाधिकारी के अनुसार, उसके पास फिल्मी दुनिया के ऐसे कई लोगों के खिलाफ पर्याप्त सबूत हैं, जिनके सहारे आने वाले दिनों में कई और लोगों की गर्दनें नापी जा सकती है. इनमें फिल्म निर्माता झेमू सुगंध के भाई हरीश सुगंध के अलावा अब्बास मस्तान का भी नाम है. हरीष्ठा सुगंध स्वयं भी एक फिल्म निर्माता हैं. अभी हाल ही में पुलिस ने हरीश सुगंध के कार्यालय पर छापा मार कुछ दस्तावेज और डायरियां बरामद की हैं, जिनसे फिल्म और अंडरवर्ल्ड के और संबंधों का खुलासा होने की उम्मीद है.

मुंबई पुलिस के पास फिल्म उद्योग से जुड़े लोगों के अलावा अन्य क्षेत्रों के ऐसे तमाम लोगों के खिलाफ भी सबूत उपलब्ध हो रहे हैं, जिन्होंने अंडरवर्ल्ड के लोगों को फिल्मी दुनिया में पांव फैलाने के अवसर तो मुहैया कराए ही, उनके लिए आर्थिक और राजनीतिक रूप से सुरक्षित और बेदाग ठिकाने उपलब्ध कराने के मौके भी जुटाए. इस तरह के लोगों में कुछ पुलिस अधिकारियों के अलावा, आयकर विभाग के कुछ अधिकारी और कुछ राजनीतिबाजों के भी नाम है. पुलिस विभाग के कुछ अधिकारियों की भूमिका की जांच शुरू हो चुकी है. माना जा रहा है कि आने वाले कुछ समय के भीतर कुछ और भी नाम सामने आ सकते हैं.

दरअसल पिछले दो दशक से अंडरवर्ल्ड के सरगनाओं के साथ मुंबई फिल्म उद्योग के संबंधों की कहानियां छिटपुट रूप से उभर कर सामने आ रही हैं. पर संकट

जनक स्थिति का खुलासा तब से शुरू हुआ, जब से अंडरवर्ल्ड के सरगनाओं के इशारे पर मशहूर फिल्मी हस्तियों की धड़ाधड़ हत्याएं और उन पर जानलेवा हमला होने शुरू हुए. इस तरह की घटनाओं में सुपर कैसेट इंडस्ट्री के मालिक एवं फिल्म निर्माता गुलशन कुमार और मुकेश युग्गल की निर्मम रूप से हत्याएं और निर्माता राजीव राय पर जानलेवा हमले शरीक हैं.

बात और अधिक संगीन तब हुई, जब वर्ज़ 2000 की सर्वाधिक हिट फिल्म 'कहो न प्यार है' के निर्माता निर्देशक राकेश रोशन पर कुछ खूंखार हत्यारों ने दिन दहाड़े गोलियां बरसा कर उनकी जान लेने की कोशिश की। टेलीविजन के गेम शो 'कौन बनेगा करोड़पति' से लोकप्रियता के नए झंडे गाड़ने वाले सुपर स्टार अभिताभ बच्चन को भी टेलीफोन के जरिए जानलेवा धमकियां मिलीं.

माना जा रहा है कि आखिर की इन दो घटनाओं की गंभीरता को देखते हुए ही मुंबई पुलिस में हरकत हुई, वजह यह रही कि राकेश रोशन और अभिताभ बच्चन की बेदाग छवि और बच्चन के राजनीतिक दबदबे के चलते केंद्र सरकार ने महाराष्ट्र सरकार को सख्त कदम उठाने का निर्देश दिया. अभिताभ के मामले में मुंबई पुलिस ने सार्वजनिक रूप से तो कोई प्रतिक्रिया नहीं व्यक्त की, पर राकेश रोशन पर कातिलाना हमले की बाबत अपनी झल्लाहट उजागर कर ही दी. ध्यान रहे कि राकेश रोशन पर कातिलाना हमले के बाद जब फिल्मी हस्तियों ने सुरक्षा की गुहार लगानी शुरू की थी, तब मुंबई पुलिस के आयुक्त एम एन सिंह ने उन्हें लताड़ते हुए कहा था कि अंडरवर्ल्ड से खतरे की शिकायत करने से पहले वे अपने गिरेबान में झांक लें. यानी पुलिस आयुक्त ने स्पष्ट रूप से कह दिया था कि आज वे जिसकी शिकायत कर रहे हैं, उस सर्प को उन्होंने खुद ही दूध पिला-पिला कर पाला पोसा है.

चूंकि सब के बावजूद अंडरवर्ल्ड पर अपना शिकंजा कसने के लिए पुलिस पर दबाव बढ़ रहा था, इसलिए मजबूरन ही सही, पुलिस ने भी इस मामले में निर्णायक कदम उठाने का फैसला कर लिया. सब से पहले पुलिस आयुक्त ने गुप्तचर शाखा के जरिए ऐसे लोगों की जांच करानी शुरू की, जिनकी भूमिका शक के दायरे में थी और जिनके अंडरवर्ल्ड के साथ संबंध चर्चा में थे. इस दौरान पुलिस ने संदिग्ध लोगों और अंडरवर्ल्ड के आकाओं के बीच

टेलीफोन पर होने वाली बातचीत के जरिए भी सबूत जुटाने की कोशिश की. कुछ लोगों के फोन भी टेप किए गए.

पिछले साल नवंबर के पहले सप्ताह तक पुलिस ने कुछ लोगों की गर्दन नापने तक पर्याप्त सबूत इकट्ठे कर लिए थे. पर जैसा कि और मामलों में होता है, राजनीतिक और अन्य कई तरह के दबाओं के चलते पुलिस को हाथ ढीले करने पड़ते हैं – इस तरह की स्थिति से बचने के लिए पुलिस ने गुचचुप तरीके से माफिया और अंडरवर्ल्ड के पैसों से बनने वाली फिल्मों की एक लंबी सूची आयकर विभाग को सौंप दी और आयकर विभाग से यह आग्रह किया कि यह सबूत जुटाए कि इन फिल्मों के लिए फाइनेंस कहां से जुटाया गया है? मुंबई पुलिस द्वारा आयकर विभाग को जांच करने के लिए जिन संदिग्ध फिल्मों की सूची सौंपी गई थी, उसमें 'चोरी चोरी चुपके चुपके' फिल्म का नाम पहले स्थान पर था. फिल्म बन कर तैयार थी और पिछले साल 22 दिसंबर को ही रिलीज होने वाली थी फिलहाल इस फिल्म की निगेटिव मुंबई पुलिस के पास है. पुलिस ने अखबारों में छपवाई एक सूचना में कहा है कि उसे इस फिल्म के असली वारिस की तलाश है. यह निगेटिव जिस किसी का भी हो, वह इसे हासिल करने के लिए अपना दावा पेष्ठा कर सकता है.

चूंकि प्रत्यक्ष रूप से फिल्म 'चोरी चोरी चुपके चुपके' के फाइनेंसर भरत शाह हैं, इसलिए आयकर विभाग और पुलिस दोनों ने उनसे गहरी पूछताछ की. फिल्म के नायक सलमान खान और नायिका रानी मुखर्जी और प्रीति जिंटा से भी पुलिस ने पूछताछ की. इस संवाददाता के एक सवाल के जवाब में फिल्म फाइनेंसर भरत शाह का कहना था, "मैं व्यवसायी हूं और मेरा यह व्यवसाय अपराध से परे है. मैंने रिजवी की फिल्म में भी लाभ की संभावना देखकर पैसा लगाया. मुझे यह कतई नहीं मालूम कि नाजिम रिजवी का अंडरवर्ल्ड के लोगों से कोई संबंध है."

अभी फिल्म फाइनेंसर भरत शाह और अन्य लोगों से पूछताछ चल ही रही थी कि पुलिस को अन्य सूत्रों से पुख्ता सबूत हासिल हो गए. लिहाजा 13 दिसंबर को सुबह सवेरे मुंबई पुलिस और सी आई डी की संयुक्त टीम ने मुंबई के अंधेरी उपनगर के सात बंगला क्षेत्र में समीर अपार्टमेंट्स से फिल्म 'चोरी चोरी चुपके चुपके' के निर्माता नाजिम हसन रिजवी को गिरफ्तार कर लिया. रिजवी के खिलाफ भारतीय दंड संहिता के तहत आने वाले तमाम आरोपों, जैसे हत्या के लिए उकसाना, फिरौती, माफियाओं से सांठ-गांठ, और कई फिल्म हस्तियों पर हमले की साजिश आदि को दर्ज दिया गया है.

नाजिम की गिरफ्तारी से पहले पुलिस ने उसके खिलाफ जो सबूत और फोन टेप इकट्ठे किए थे, उसके अनुसार नाजिम की कहानी कुछ इस प्रकार बनती है. मुंबई पुलिस के गुप्तचर शाखा के एक उच्च पदस्थ सूत्र के अनुसार, "नाजिम अंडरवर्ल्ड का एक अहम किरदार है और उसके ही इशारे पर फिल्म निर्माता राजीव राय पर ताड़देव स्थित उनके कार्यालय में अबू सलेम के गुंडों ने गोलियां चलाई थी. राकेश रोशन की लोक प्रियता भी नाजिम के आंख की किरकिरी थी। उनकी हिट फिल्म ' कहो ना प्यार है' के विदेशी राइट्स और हफ्ते की रकम के मसले पर रोशन के इनकार ने नाजिम के गुस्से को और उवाला फिलहाल नाजिम मशहूर म्यूजिक और कैसेट कंपनी 'वीनस' को कब्जाने की योजनाएं बना रहा था. रिजवी ने छोटा शकील की मदद से अजय देवगन के निजी सहायक कुमार मंगल को भी धमकी दिलाई थी. धमकी में कहा गया था कि नाजिम की फिल्म 'चोरी चोरी, चुपके चुपके' से पहले अजय देवगन अपनी फिल्म 'राजू चाचा' न रिलीज करे, वरना अंजाम अच्छा नहीं होगा.

रही बात नाजिम की फिल्म 'चोरी चोरी चुपके चुपके' की तो कहा जा रहा है कि फिल्म बनाने में 20 करोड़ रुपए लगे हैं, जबकि आयकर विभाग का मानना है कि फिल्म 6 करोड़ से ज्यादा में नहीं बनी. वजह यह कि रिजवी ने धौंस के चलते किसी कलाकार को कोई पारिश्रमिक नहीं दिया, उलटे फिल्म जल्दी पूरी करने के लिए दिन-रात उनसे मनमर्जी काम लेता रहा.

सच बात तो यह है कि नाजिम की संदिग्ध गतिविधियों ने उसे पुलिस के शक के दायरे में खींचा दरअसल नाजिम ने 'बालीवुड' में बतौर निर्माता 'अंगारवादी ' नामक फिल्म से कदम रखा, जो बहुत ही छोटे बजट की फिल्म थी. पर जब अचानक ही उसने सलमान खान, प्रीति जिंटा और रानी मुखर्जी जैसे अत्यधिक महंगे कलाकारों को लेकर 'फिल्म' चोरी चोरी चुपके चुपके' का निर्माण शुरू किया, तो फिल्मी दुनिया के और लोगों के साथ पुलिस का भी चौंकना स्वाभाविक था. पुलिस के पास इस बात के पक्के सबूत हैं कि नाजिम रोजाना छोटा शकील को फिल्म और फिल्मी दुनिया के बारे में जानकारी देता था.

नाजिम हसन रिजवी की गिरफ्तारी के बाद इस मामले में नाटकीय मोड़ तब आया, जब 8 जनवरी को लगभग 500 करोड़ की संपत्तियों के मालिक, हीरा व्यापारी और फिल्म फाइनेंसर भरत शाह को गिरफ्तार किया. ध्यान रहे कि नाजिम हसन रिजवी की गिरफ्तारी के समय से ही भरत शाह पुलिस की हिट लिस्ट में थे. और पुलिस ने दो बार उन्हें अपने पास बुलाकर पूछताछ भी की थी. पर हर बार भरत शाह ने खुद को बेकसूर बताया था. उलटे फिल्म उद्योग के सुभाज़ घई, महेश भट्ट, बी॰ आर॰ चोपड़ा जैसे मशहूर और बड़े निर्माता निर्देशकों ने पुलिस की जांच और भूमिका पर सवाल उठाते हुए भरत भाई के पाक साफ होने के संबंध में बयानबाजी तक करनी शुरू कर दी. मशहूर निर्माता निर्देशक महेश भट्ट का बयान तो और भी बढ़ चढ़ कर था. उन्होंने इस संवाददाता को दी गई प्रतिक्रिया में कहा था, " भरत भाई के पास खुद ही इतनी

दौलत है कि वह आधी से अधिक फिल्म इंडस्ट्री को खरीद सकते हैं. ऐसे शख्श को किसी और के पैसे की जरूरत ही क्या है?"

पर फिल्म वालों के भरत भाई के मामले में तमाम दावे उस समय टायं-टायं फिस्स हो गए, जब पुलिस ने उनके दावों पर ध्यान न रखते हुए भरत शाह को गिरफ्तार कर लिया. दरअसल पुलिस भरत शाह के खिलाफ ठोस सबूत इकट्ठे कर रही थी और वे उसे मिल भी गए. पहले सबूत के रूप में अंडरवर्ल्ड डान छोटा शकील के साथ भरत भाई शाह के टेलीफोन बातचीत के टेप रहे. इस टेप में मोरानी के एक कथित व्यापारी से कथित रूप से 75 लाख रुपए ऐंठने और दुबई के भतीजा नामक किसी व्यापारी के 50 हजार अमरीकी डालर के हवाला रैकेट के बारे में छोटा शकील और भरत शाह के बीच बात हुई है. शाह ने टेप की गई आवाज को अपनी आवाज मान लिया है.

शाह के खिलाफ पुलिस ने जो दूसरा सबूत इकट्ठा किया, वह बेहद नाटकीय रहा. ध्यान रहे कि फिल्म 'चोरी चोरी चुपके चुपके' के असली वारिस का पता लगाने के लिए जिस निगेटिव को जब्त कर दावेदारी मांगी थी, उसके दावेदार के रूप में भरत शाह ने अदालत में अपना दावा ठोंका था. यह पुलिस के लिए एक अहम सबूत बना क्योंकि पुलिस मानती है कि इस फिल्म का निर्माता छोटा शकील का आदमी है. लिहाजा इस दावे के तुरंत बाद कराची स्थित अंडरवर्ल्ड डान छोटा शकील से सीधा संपर्क रखने के आरोप में मुंबई पुलिस ने 'महाराष्ट्र संगठित अपराध नियंत्रण कानून' के तहत गिरफ्तार कर लिया. समझा जाता है कि इस समय लगभग 50 मुंबइया फिल्मों में भरत शाह का पैसा लगा हुआ है. पुलिस को कुछ ऐसे भी टेलीफोन बातचीत के टेप मिले हैं, जिनसे माफिया सरगना दाऊद इब्राहिम से भी उनके संबंधों का पता चलता है.

ग्लैमर और अपराध : दोनों साथ-साथ : अंडरवर्ल्ड के कुख्यात सरगना छोटा राजन से संबंध रखने और फिल्म जगत में उसका पैसा लगाने के आरोप में फिल्म निर्माता नाजिम रिजवी और भरत शाह की गिरफ्तारी भले ही ताजी और सनसनी खेज घटना हो, पर बिल्कुल नई और अनहोनी हो, ऐसा भी नहीं कहा जा सकता. सुप्रसिद्ध फिल्म निर्माता निर्देशक बी॰ आर॰ चोपड़ा के अनुसार 'माफिया के साथ बालीवुड की मिली भगत कोई नई बात नहीं' दरअसल फिल्म बनाने में करोड़ों रुपये की लागत लगती है. अभी तक कोई ऐसी एजेंसी नहीं थी, जो फिल्म जैसे जोखिम भरे व्यवसाय के लिए फिल्मकारों को कर्ज मुहैया करा सके. धन के इस संकट के समाधान के लिए बालीवुड ने अंडरवर्ल्ड का दामन पकड़ा. अब वही अंडरवर्ल्ड फिल्म उद्योग पर कब्जा जमाने को बेताब है.

फिल्मी दुनिया से अंडरवर्ल्ड के संबंधों का इतिहास खोजें तो काफी दिलचस्प कहानियां उजागर होती है. कहा जाता है कि छठें सातवें दशक के अंडरवर्ल्ड के बेताज बादशाह और तस्कर सरगना हाजी मस्तान न सिर्फ राजकपूर और दिलीप कुमार की पार्टियों में देखा जाता था, वरन राजकपूर की फिल्मों के लिए धन भी उपलब्ध कराता था. भारतीय हिंदी फिल्मों में अंडरवर्ल्ड की रुचि को देखते हुए फिल्मकारों ने उनकी जीवनी पर फिल्में बना कर उन्हें और रिझाया और अपने करीब बुलाया. अमिताभ बच्चन की मशहूर फिल्म 'दीवार' हाजी मस्तान के जीवन पर आधारित रही तो 'दयावान' वरदाराजन मुदालेयार उर्फ वरदा भाई के जीवन पर. अरुण गवली की आपराधिक जिंदगी पर 'सत्या' फिल्म बनी. यहां माफिया सरगना दाऊद इब्राहिम कैसे पीछे रहता. दाऊद की जीवनी पर अंडरवर्ल्ड के कुख्यात अपराधी छोटा राजन के भाई दीपक ने 'वास्तव' नामक फिल्म बना डाली. इस फिल्म में मुख्य भूमिका संजय दत्त ने निभाई थी. आठवें और नवें दशक में तो दाऊद इब्राहिम के साथ कई मशहूर फिल्मी हस्तियों के संबंधों को लेकर बावेला भी मचा था. दाऊद के निमंत्रण पर उस समय कई मशहूर फिल्मी कलाकारों ने दुबई में 'स्टेज शो' भी किए थे.

मुंबई पुलिस की रिपोर्ट के मुताबिक, फिल्मों की चकाचौध भरी जिंदगी, बेतहाशा धन, अकूत नारी सुख की लालच ने अंडरवर्ल्ड के उन शहंशाओं को बालीवुड की ओर खींचा, जिन्होंने आपराधिक कर्मों से पैसा तो खूब बनाया, पर उन्हें दो चार गुना सफेद करने में सफलता नहीं पाई. यह भी एक वजह रही कि धन की किल्लत से जूझते फिल्मकारों को पैसा देकर उन्होंने अपनी पैठ जमाई. इतना ही नहीं, व्यावसायिक प्रतिद्वंद्विता से जूझते फिल्म कलाकारों, निर्माताओं के आपसी झगड़े में पंचायत भी कराई. बदले में हफ्ता वसूली भी की. इस प्रकार अंडरवर्ल्ड की पैठ बालीबुड में कितनी जबरदस्त हुई, इसका खुलासा अयोध्या में बाबरी प्रकरण के बाद 1993 में मुंबई बम कांड के दौरान हुआ, जब अंडरवर्ल्ड से संबंध रखने के आरोप में फिल्म निर्माता हनीफ, समीर और अभिनेता संजय दत्त गिरफ्तार हुए थे.

अब जबकि नाजिम रिजवी की गिरफ्तारी के बाद मुंबई फिल्म उद्योग पर अंडरवर्ल्ड के आतंक और पकड़ की काली चादर पूरी तरह से फैली नजर आ रही है, सवाल यह है कि ग्लैमर का नाजुक हुस्न अपराध जगत के आतंक से कैसे बच पाएगा? जाहिर है, फिल्म उद्योग की सबसे बड़ी समस्या अडरवर्ल्ड का पैसा और कुछ फिल्म वालों की दादागिरी भरी मानसिकता है. अगर इन दोनों मुद्दों पर अब भी ध्यान नहीं दिया गया तो परिणाम की कल्पना करना कठिन नहीं होगा । ☒

सम्पर्क : यू - 208, शक्करपुर
दिल्ली-92

आनन्द बने शतरंज के सिरमौर

दिलीप कुमार सिन्हा

विश्वनाथन आनन्द पहले भारतीय हैं जिन्होंने स्पेन के एलेक्सी सिरोव को चौथी बाजी में हराकर विश्व शतरंज चैंपियन का खिताब जीत लिया। ईरान की राजधानी तेहरान म आनन्द विश्व शतरंज का खिताब जीतकर न केवल वे पहले एशियाई विजेता होने का गौरव प्राप्त किया बल्कि भारत का नाम स्र्वणाक्षरों में अंकित करा दिया।

विश्व शतरंज चैम्पियन खिताब-2000 प्राप्त करते विश्वनाथन आनन्द

तमिलनाडु के 31 वर्षीय आनन्द ने चार बाजियों के सेमिफाइनल में इंग्लैंड के माइकेल एडम्स को हराकर तेहरान के लिए अपना सीट बुक करा ली थी और पूर्व विश्व चैंपियन गौरी कोस्परोव, गौरी कारपोवतथा क्रामनिक के भाग नहीं लेने से पूर्वानुसार विश्व विजेता सही साबित हुए। ☒

आस्ट्रेलियाई स्पिनर के सामने बौने हैं भारतीय स्पिनर

भारतीय क्रिकेट के इतिहास में यह पहला अवसर है जब अपनी ही धरती पर टेस्ट श्रृंखला खेलने से पहले अच्छे स्पिनरों की समस्या खड़ी हो गई और विपक्षी टीम के स्पिन आक्रमण को अपने से बेहतर आंका जा रहा है।

अनिल कुम्बले की गैरमौजुदगी में यह समस्या खड़ी हुई है। भारत के तरकश में मुरली कार्तिक, सुनील जोशी और शरणदीप सिंह के रूप में हीं कुछ चुने तीर हैं। वहीं आस्ट्रेलियाई खेमे में शेन वार्न और स्टुअर्ट मैकगिल के रूप में दो ऐसे लेग स्पिनर हैं जिनमें पिछले तीन वर्षों से आपसी जंग चल रही है। जरा सोचिए कि यदि दोनों को एक साथ घुमावदार पिचों पर उतारा गया तो निश्चय ही स्पिन विभाग में यह आक्रमण भारतीय आक्रमण पर भारी पड़ता दिखाई देगा। पिछले दिनों उन्होंने यह भी साबित कर दिया है कि वे केवल अनुकूल पिचों के मोहताज नहीं हैं। ☒

त्रिमूर्ति ज्वेलर्स

बाईपास रोड, चास (बोकारो)

दूरभाष 65769, फैक्स 65123

त्रिमूर्ति अलंकार

त्रिमूर्ति पैलेस, (रूपक सिनेमा के पूरब)

बाकरगंज पटना 800004

दूरभाष–662837

आधुनिक आभूषण के निर्माता नए डिजाइन, शुद्ध सोने चाँदी के तथा हीरे के गहनों का प्रमुख प्रतिष्ठान

परीक्षा प्रार्थनीय

सुरेश, राजीव एवं सुनील

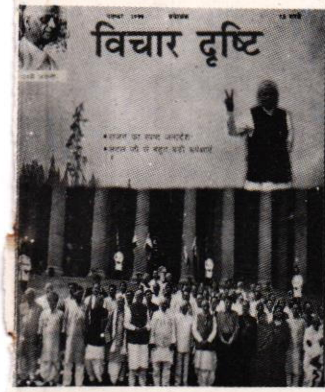

अंक – 1

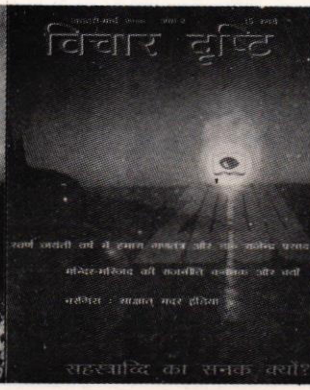

अंक – 2

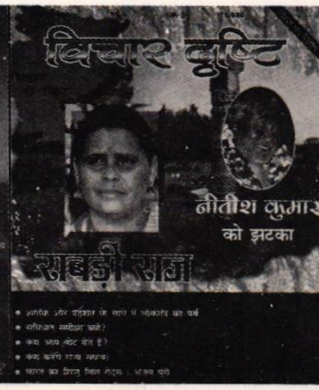

अंक – 3

अंक – 4

अंक – 5

विचार दृष्टि

सदस्यता / ग्राहक प्रपत्र

हम विचार दृष्टि के वार्षिक/दो वर्षीय/पांच वर्षीय/दस वर्षीय/आजीवन सदस्य/संरक्षक सदस्य बनना चाहते हैं।

सदस्यता शुल्क..रुपये मनीऑर्डर/बैंक ड्राफ्ट/चेक सं. ....दिनांक..................

......................................भेज रहे हैं।

हमारी प्रति निम्न पते पर भेजें।

नाम..पता..

.............पिन कोड...

सदस्यता शुल्क

विचार दृष्टि

		भारत	विदेश
वार्षिक	–	50 रुपये	3 डॉलर
दो–वर्षीय	–	100 रुपये	5 डॉलर
पांच–वर्षीय	–	250 रुपये	10 डॉलर
दस–वर्षीय	–	500 रुपये	18 डॉलर
आजीवन	–	1000 रुपये	50 डॉलर
संरक्षक	–	5000 रुपये	500 डॉलर

राष्ट्रीय विचार मंच

		भारत	विदेश
वार्षिक	–	25 रुपये	3 डॉलर
आजीवन	–	500 रुपये	50 डॉलर
संरक्षक	–	1000 रुपये	100 डॉलर
संपोषक	–	2000 रुपये	200 डॉलर

बैंक ड्राफ्ट/चेक 'राष्ट्रीय विचार मंच' के नाम देय होगा।

R.N.I.Regd.No.DEL HIN/1999/791

प्रकाशक, मुद्रक व स्वामी सिद्धेश्वर द्वारा ई–50, एफ. एफ. सी., झंडेवालान, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली–55 से प्रकाशित एंव प्रोलिफिक इनकारपोरेटेड, एक्स–47, ओखला, फेज–2, नई दिल्ली–20 से मुद्रित। –सम्पादक: सिद्धेश्वर